20

लघु रेडियो संदेश

लेखक :

सनी डेविड

प्रकाशक :
मसीह की कलीसिया
बॉक्स नं० 3815
नई दिल्ली-110049

सत्य सुसमाचार रेडियो संदेश
(भाग छः)

प्रथम संस्करण 1977

मुद्रक :
पाइनियर फाईन आर्ट प्रेस,
अजमेरी गेट, दिल्ली-6

विषय-सूची

		पृष्ठ
१. हमारा बिचवई	...	६
२. क्या आप निश्चित रूप से जानते हैं ?	...	१६
३. बुराई के बदले भलाई	...	२२
४. यीशु एक सच्चा मित्र	...	२८
५. क्या आप परमेश्वर के मित्र हैं ?	...	३४
६. परमेश्वर की प्रतिज्ञाएँ	...	४०
७. विश्वास	...	४६
८. पश्चात्ताप	...	५२
९. पवित्रात्मा और बपतिस्मा	...	५८
१०. कलीसिया के विषय में सच्चाई	...	६४
११. आप कहां बना रहे हैं ?	...	६९
१२. उत्तम दौड़	...	७५
१३. बाइबल की छोटी वस्तुएं	...	८१
१४. सकेत द्वार	...	८७
१५. सामर्थपूर्ण यीशु	...	९४
१६. प्रसन्नता का रहस्य	...	१००
१७. मृत्यु के बाद	...	१०६
१८. अधोलोक में	...	१११
१९. धार्मिक, परन्तु अन्धकार में !	...	११७
२०. मनुष्य का सम्पूर्ण कर्त्तव्य	...	१२३

हमारा बिचवई

संसार भर में लगभग सभी लोग इस बात को बिना तर्क स्वीकार करते हैं कि मनुष्य पापी है। पवित्र बाइबल में इस वास्तविकता को अनेकों स्थानों पर स्पष्ट किया गया है। किन्तु, रोमियों ३:२३ पर हम यूं पढ़ते हैं, "इसलिये कि सबने पाप किया है और परमेश्वर की महिमा से रहित हैं।" परन्तु पाप का अर्थ क्या है ? इसके उत्तर में बाइबल कहती है, "जो कोई पाप करता है, वह व्यवस्था का विरोध करता है ; और पाप तो व्यवस्था का विरोध है।" (१ यूहन्ना ३:४)। सो पाप का अभिप्राय परमेश्वर की आज्ञाओं को तोड़ना या उन पर न चलना है। परमेश्वर अपने वचन के द्वारा हमें बताता है कि मनुष्य अपने अपराधों और पापों के कारण आत्मिक दृष्टिकोण से मरा हुआ है और इस स्थिति में वह आशाहीन और ईश्वर-रहित है। (इफिसियों २:१, १२)। इसका अभिप्राय यह हुआ, कि ऐसी स्थिति में मनुष्य के पास मृत्यु के बाद कोई आशा नहीं है। सो मनुष्य पापी है, और अपने अधर्म और पापों के कारण वह आशाहीन और मरा हुआ है।

परन्तु क्या मनुष्य आशा और जीवन को प्राप्त नहीं कर सकता ? परमेश्वर का नबी यशायाह कहता है, "सुनो यहोवा का हाथ ऐसा छोटा नहीं हो गया कि उद्धार न कर सके, न वह ऐसा बहिरा हो गया है कि सुन न सके, परन्तु तुम्हारे अधर्म के कामों ने तुम को तुम्हारे परमेश्वर से अलग कर दिया है, और तुम्हारे पापों के कारण उसका मुंह तुम से ऐसा छिपा है कि वह नहीं सुनता।" (यशायाह ५६:१, २)। सो यहां हमें आशा की एक किरण दिखाई देती है। वह कहता है, कि परमेश्वर का हाथ ऐसा छोटा नहीं है कि वह तुम्हें पाप के गहरे-से-गहरे गड्ढे

में से हाथ बढ़ाकर निकाल न सके, और न वह ऊंचा सुनता है कि तुम्हारी पुकार उस तक पहुंच न सके। परन्तु एक ऐसी वस्तु तुम्हारे और तुम्हारे परमेश्वर के बीच में बैर की एक दीवार के समान खड़ी है जिसका पहिले नाश होना अवश्य है। परमेश्वर महा पवित्र है और मनुष्य बड़ा पापी है। पाप के रहते परमेश्वर मनुष्य से सम्बन्ध स्थापित नहीं कर सकता। इसलिये, जब तक मनुष्य में पाप है, उसका मेल परमेश्वर के साथ नहीं हो सकता। सो यहां मनुष्य एक बिचवई की आवश्यकता का अनुभव करता है, जो बीच में आए बैर को समाप्त करके दोनों पक्षों का मेल करवा दे।

सदियों से मनुष्य ने अपने और परमेश्वर के बीच में एक बिचवई की आवश्यकता का अनुभव किया है। मनुष्य जानता है कि वह पापी है और परमेश्वर उसका उद्धार कर सकता है, सो परमेश्वर के पास पहुंचने के लिये मनुष्य ने अनेकों साधनों का सहारा लेना आरम्भ कर दिया। किसी ने काठ और पत्थर की मूर्त्ति गढ़कर उसके माध्यम से परमेश्वर तक पहुंचना चाहा, तो किसी ने सृष्टि की विभिन्न वस्तुओं को अपना बिचवई मान लिया। अनेकों अन्य लोगों ने कुछ विशेष व्यक्तियों को अपना बिचवई ग्रहण कर लिया। परन्तु क्या सृष्टि या सृष्टि की कोई वस्तु या कोई मनुष्य परमेश्वर और मनुष्य के बीच में एक बिचवई बन सकता है? सृष्टि तथा सृष्टि की सारी वस्तुएं परमेश्वर की रचना हैं, हम उनमें से किसी के द्वारा भी परमेश्वर के पास नहीं पहुंच सकते, क्योंकि वे सब नाशमान हैं। (२ पतरस ३:१०)। और मनुष्य? लिखा है, "सबने पाप किया है।" सो जबकि सारे मनुष्य पापी हैं तो एक भी मनुष्य इस योग्य न रहा कि वह परमेश्वर और मनुष्यों के बीच में एक बिचवई बन सके।

वास्तव में एक बिचवई वह होता है, जो दोनों पक्षों से परीचित हो, जो दोनों ओर की आवश्यकताओं और मांगों को जानता हो। सो इस

बात को ध्यान में रखकर, परमेश्वर और मनुष्य के बीच में यीशु मसीह के सिवाए और कौन बिचवई बन सकता है ? सो पवित्र शास्त्र हमें बताता है कि "परमेश्वर एक ही है और परमेश्वर और मनुष्यों के बीच में भी एक ही बिचवई है, अर्थात् मसीह यीशु जो मनुष्य है।" (१ तीमुथियुस २:५)। सो परमेश्वर और मनुष्यों के बीच में वास्तव में केवल एक ही बिचवई है जो हमारा मेल परमेश्वर के साथ करवा सकता है, और वह है मसीह यीशु। परन्तु यीशु मसीह न केवल एक मनुष्य ही है, वह परमेश्वर भी है। वास्तव में केवल उसी के भीतर ये दोनों विशेषताएं हैं और इसी विशेष गुण के कारण वह परमेश्वर और मनुष्यों के मध्य बिचवई ठहरा। पवित्र शास्त्र हमें बताता है, कि मसीह आदि में, अर्थात् सृष्टि के आरम्भ से पूर्व, परमेश्वर के साथ था, परन्तु मनुष्य को पाप के भयानक दण्ड से बचाने के लिये वह स्वयं एक मनुष्य बना, उसने मनुष्य की देह व स्वरूप धारण किया। सो हम पढ़ते हैं, मसीह यीशु के बारे में, "आदि में वचन था, और वचन परमेश्वर के साथ था और वचन परमेश्वर था। यही आदि में परमेश्वर के साथ था। सब कुछ उसी के द्वारा उत्पन्न हुआ और जो कुछ उत्पन्न हुआ है, उसमें से कोई भी वस्तु उसके बिना उत्पन्न न हुई.........और वचन देहधारी हुआ, और अनुग्रह और सच्चाई से परिपूर्ण होकर हमारे बीच में डेरा किया और हमने उसकी ऐसी महिमा देखी, जैसी पिता के एकलौते की महिमा।" (यूहन्ना १:१-३, १४)।

सो मनुष्यों के बीच जन्म लेकर जबकि यीशु मनुष्य का पुत्र ठहरा, वह परमेश्वर का पुत्र भी है, क्योंकि वह परमेश्वर की ओर से आया। वास्तव में, उसका जन्म किसी मनुष्य की इच्छानुसार नहीं, परन्तु स्वयं परमेश्वर की इच्छानुसार हुआ था, क्योंकि उसने परमेश्वर की इच्छा व सामर्थ से एक कुंवारी से जन्म लिया। इस सच्चाई को मसीह के जन्म से लगभग आठ सौ वर्ष पूर्व लोगों पर प्रकट करके भविष्यद्वक्ता यशायाह ने यूं कहा था, "इस कारण प्रभु आप ही तुमको एक चिन्ह

देगा। सुनो, एक कुमारी गर्भवती होगी और पुत्र जनेगी और उसका नाम इम्मानुएल रखेगी।" (यशायाह ७:१४)। "अर्थात् ईश्वर हमारे संग है।"

और फिर सैकड़ों वर्ष बाद, पूर्व कहे अनुसार यह घटना नासरत नाम के एक छोटे-से स्थान पर यूं हुई, लिखा है, "परमेश्वर की ओर से जिब्राईल स्वर्गदूत गलील के नासरत नगर में एक कुंवारी के पास भेजा गया। जिसकी मंगनी यूसुफ़ नाम दाऊद के घराने के एक पुरुष से हुई थी; उस कुंवारी का नाम मरियम था। और स्वर्गदूत ने उसके पास भीतर आकर कहा; आनन्द और जय तेरी हो, जिस पर ईश्वर का अनुग्रह हुआ है, प्रभु तेरे साथ है। वह उस वचन से बहुत घबरा गई, और सोचने लगी, कि यह किस प्रकार का अभिवादन है? स्वर्गदूत ने उस से कहा, हे मरियम; भयतीत न हो, क्योंकि परमेश्वर का अनुग्रह तुझ पर हुआ है। और देख, तू गर्भवती होगी और तेरे एक पुत्र उत्पन्न होगा; तू उसका नाम यीशु रखना। वह महान् होगा; और परम प्रधान का पुत्र कहलाएगा ······मरियम ने स्वर्गदूत से कहा, यह क्योंकर होगा? मैं तो पुरुष को जानती ही नहीं। स्वर्गदूत ने उसको उत्तर दिया; कि पवित्र आत्मा तुझ पर उतरेगा और परमप्रधान की सामर्थ तुझ पर छाया करेगी, इसलिये वह पवित्र जो उत्पन्न होनेवाला है, परमेश्वर का पुत्र कहलाएगा।" (लूका १:२६-३५)।

सो इस प्रकार से यीशु का जन्म आज से लगभग दो हज़ार वर्ष पूर्व पलस्तीन देश के नासरत नाम के एक छोटे-से स्थान पर हुआ। पृथ्वी पर उसके जीवन के आरम्भ के दिनों का वर्णन करके पवित्र बाइबल बताती है, "और बालक बढ़ता और बलवन्त होता, और बुद्धि से परिपूर्ण होता गया; और परमेश्वर का अनुग्रह उस पर था······और यीशु बुद्धि और डील डौल में और परमेश्वर और मनुष्यों के अनुग्रह में बढ़ता गया।" (लूका २:४०,५२)। उसने लोगों को अनेकों शिक्षाएं दीं।

उसने कहा, "क्योंकि मैं अपनी इच्छा से नहीं, वरन अपने भेजनेवाले की इच्छा पूरी करने के लिये स्वर्ग से उतरा हूं।" (यूहन्ना ६:३८)। लोगों से उसने कहा, "अपने लिये पृथ्वी पर धन इकट्ठा न करो ; जहां कीड़ा और काई बिगाड़ते हैं, और जहां चोर सेंध लगाते और चुराते हैं। परन्तु अपने लिये स्वर्ग में धन इकट्ठा करो, जहां न तो कीड़ा और काई बिगाड़ते हैं, और जहां चोर न सेंध लगाते और न चुराते हैं...... इसलिये पहिले तुम उसके राज्य और धर्म की खोज करो तो ये सब वस्तुएं भी तुम्हें मिल जाएंगी।" (मत्ती ६:१९,२०,३३)। और उसने कहा, "यदि मनुष्य सारे जगत को प्राप्त करे और अपने प्राण की हानि उठाए, तो उसे क्या लाभ होगा ? या मनुष्य अपने प्राण के बदले में क्या देगा ?" (मत्ती १६:२६)।

संसार में अपने आने के उद्देश्य को प्रगट करके उसने कहा, "मनुष्य का पुत्र खोए हुओं को ढूंढ़ने और उनका उद्धार करने आया है।" (लूका १९:१०)। और फिर परमेश्वर की योजना को प्रगट करके उसने कहा, "जिस रीति से मूसा ने जंगल में सांप को ऊंचे पर चढ़ाया, उसी रीति से अवश्य है कि मनुष्य का पुत्र भी ऊंचे पर चढ़ाया जाए। ताकि जो कोई विश्वास करे उसमें अनन्त जीवन पाए, क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे, वह नाश न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए।" (यूहन्ना ३:१४-१६)।

और फिर यूं ही हुआ। उसकी स्पष्ट व सच्ची शिक्षाओं को कुछ लोग सह न सके। उन्हों ने उसका विरोध किया और उसे पकड़ा। फिर वे उसे रोमी सरकार की अदालतों में ले गए और उस पर झूठे आरोप लगाए। परन्तु अदालत के हाकिम पीलातुस ने यीशु में कोई दोष न पाया, और जब वह उसे छोड़ देना चाहता था, तो उसके शत्रुओं ने चिल्ला-चिल्लाकर कहा, "कि उसे क्रूस पर चढ़ा, क्रूस पर, पीलातुस ने

उनसे कहा, "तुम ही उसे लेकर क्रूस पर चढ़ाओ ; क्योंकि मैं उसमें दोष नहीं पाता। यहूदियों ने उसको उत्तर दिया, कि हमारी भी व्यवस्था है और उस व्यवस्था के अनुसार वह मारे जाने के योग्य है, क्योंकि उसने अपने आपको परमेश्वर का पुत्र बनाया।" (यूहन्ना १६)।

सो इस प्रकार से उन लोगों ने यीशु को लेकर एक क्रूस पर चढ़ाकर मार डाला। परन्तु यदि यीशु परमेश्वर का पुत्र था, तो वे उसे इस प्रकार से मारने में क्यों सफल हुए ? वास्तव में यह परमेश्वर की योजनानुसार ही था। यीशु ने स्वयं अपने जीते-जी इस बात की ओर संकेत करके कहा था, कि वह ऊंचे पर चढ़ाकर मार डाला जाएगा। और मरे हुओं में से उसके जी उठने के बाद जब उसके चेलों ने उन्हीं लोगों को उसका सुसमाचार सुनाया, जिन्होंने उसे क्रूस पर लटकाकर मार डाला था, तो उन्हों ने उनसे कहा, "कि यीशु नासरी एक मनुष्य था जिसका परमेश्वर की ओर से होने का प्रमाण उन सामर्थ के कामों और आश्चर्य के कामों और चिन्हों से प्रगट है, जो परमेश्वर ने तुम्हारे बीच उसके द्वारा कर दिखलाए, जिसे तुम आप ही जानते हो। उसी को, जब वह परमेश्वर की ठहराई हुई मनसा और होनहार के ज्ञान के अनुसार पकड़वाया गया, तो तुमने अधर्मियों के हाथ से उसे क्रूस पर चढ़वाकर मार डाला। परन्तु उसी को परमेश्वर ने मृत्यु के बन्धनों से छुड़ाकर जिलाया ; क्योंकि यह अनहोना था कि वह उसके वश में रहता।" (प्रेरितों २:२२-२४)।

सो इस तरह से हम देखते हैं, कि परमेश्वर ने अपने पुत्र यीशु को स्वयं क्रूस की मृत्यु के हवाले कर दिया और वहां उसने परमेश्वर के अनुग्रह से हर एक मनुष्य के लिये मृत्यु का स्वाद चखा। (इब्रानियों २:६)। क्योंकि पाप की मजदूरी मृत्यु है। (रोमियों ६:२३)। परन्तु परमेश्वर ने प्रत्येक मनुष्य को नरक की आग में मृत्यु दण्ड देने के विपरीत स्वयं अपने पुत्र को हर एक मनुष्य के पाप के कारण क्रूस पर दण्डित किया, और इसलिये, आज कोई भी मनुष्य यीशु मसीह की

आज्ञाओं को मानने के द्वारा, अपने पापों की क्षमा प्राप्त करके, परमेश्वर के साथ अपना मेल स्थापित कर सकता है, क्योंकि उसने पाप रूपी उस दीवार को, जो परमेश्वर और मनुष्य के बीच में बैर के समान थी, क्रूस पर अपनी मृत्यु के द्वारा ढा दिया । सो लिखा है, "वही हमारा मेल है, जिसने दोनों को एक कर लिया : और अलग करनेवाली दीवार को जो बीच में थी, ढा दिया ।" (इफिसियों २:१४) । हां, यह बात सच है, कि "परमेश्वर एक ही है : और परमेश्वर और मनुष्यों के बीच में भी एक ही बिचवई है, अर्थात् मसीह यीशु जो मनुष्य है ।" (१ तीमुथियुस २:५) ।

सो आइए, यीशु मसीह में विश्वास कीजिए और अपने पापों से मन फिराकर, उसकी आज्ञानुसार अपने पापों की क्षमा के लिये बपतिस्मा लीजिए, तो वह आपका उद्धार करके आपका मेल परमेश्वर के साथ करवाएगा । (मरकुस १६:१६ ; रोमियों ५:१) । क्योंकि उसने कहा, "जो विश्वास करे और बपतिस्मा ले, उसी का उद्धार होगा, परन्तु जो विश्वास न करेगा वह दोषी ठहराया जाएगा ।" प्रभु का यह निमन्त्रण आपके लिये है; परन्तु निश्चय स्वयं आपका है ।

२

क्या आप निश्चित रूप से जानते हैं ?

सांसारिक दृष्टिकोण से किसी भी बात पर निश्चित रूप से विश्वास करने के लिए हमें कुछ विशेष प्रमाणों की आवश्यकता पड़ती है। जैसे कि मान लीजिए, आपके पास एक रेडियो है। अब इस बात का क्या प्रमाण है कि यह रेडियो आपका ही है ? सो फलस्वरूप आप उसकी रसीद प्रस्तुत कर सकते हैं और यह इस बात का प्रमाण होगा कि वास्तव में यह रेडियो आपका ही है। या मान लीजिए, आपके घर डाकघर से एक सरकारी आदमी आता है, और वह यह जानना चाहता है कि आपने अपने रेडियो के लाइसेन्स का नवीकरण करवा लिया है या नहीं, सो आप कह देते हैं, जी हां, हो चुका है। परन्तु उसके लिये इतना ही उत्तर पर्याप्त नहीं है, वह उस कागज़ या पुस्तक को देखना चहेगा जिस पर डाकघर की मोहर लगी है और जो इस बात का एक निश्चित प्रमाण है कि आपने वास्तव में अपने रेडियो के लाइसेन्स का नवीकरण करवा लिया है।

इसी प्रकार से, आत्मिक दृष्टिकोण से भी किसी भी बात पर निश्चित रूप से विश्वास करने के लिये हमें कुछ आवश्यक प्रमाणों की आवश्यकता पड़ती है। उदाहरण स्वरूप, इस प्रश्न का उत्तर आप किस प्रकार से दे सकते हैं, कि आपका उद्धार वास्तव में हो चुका है या नहीं ? या इसे हम यूं कह सकते हैं, कि क्या आप निश्चित रूप से जानते हैं कि आपके सब पाप क्षमा किए जा चुके हैं और भविष्य में आपके पाप का दण्ड आपको न मिलेगा, परन्तु आप अनन्त जीवन में प्रवेश करेंगे ? क्या आपके लिये इस प्रश्न का उत्तर निश्चित रूप से

जान लेना सम्भव है ? जी हां ! आप वास्तव में निश्चित रूप से यह जान सकते हैं कि आपका उद्धार हुआ है या नहीं।

परन्तु यह आप अपने किसी अनुभव या विचार के कारण नहीं जान सकते। कुछ लोगों को अक्सर कहते सुना गया है, कि हमें स्वपन में प्रभु का दर्शन हुआ है और इस प्रकार से हमारा उद्धार हुआ है। परन्तु इस बात का क्या प्रमाण है कि उन्हें स्वपन में वास्तव में प्रभु ही दिखाई दिया था ? क्या वे प्रभु की सूरत से परीचित हैं ? दूसरी ओर, पवित्र शास्त्र के अनुसार, परमेश्वर किसी का तरफ़दार नहीं है। (प्रेरितों १०:३५)। सो यदि वह किसी एक व्यक्ति को दर्शन देकर उसका उद्धार करेगा तो वह और सब लोगों को भी इसी तरह से मुक्ति दे सकता है। परन्तु, वास्तव में, प्रभु किसी का भी उद्धार एक दर्शन के द्वारा नहीं करता, क्योंकि उसने मनुष्य को उद्धार पाने के लिये एक निश्चित मार्ग दिया है।

सो हम कैसे जान सकते हैं, कि वास्तव में हमारा उद्धार हुआ है ? कदाचित् कोई कहे, कि मैं इस बात का अनुभव अपने मन में करता हूं, या मेरा ऐसा विश्वास है कि मेरा उद्धार हो चुका है। परन्तु क्या यह इस बात का प्रर्याप्त प्रमाण है कि आपका उद्धार हो चुका है ? पुराने नियम में हमें याकूब और उसके बेटे यूसुफ़ के बारे में एक बड़ा ही रोचक वृत्तान्त मिलता है। याकूब अपने पुत्रों में से सबसे अधिक प्रेम यूसुफ़ नाम के अपने एक पुत्र से करता था। उसने युसुफ़ के लिये एक बड़ा सुन्दर अंगरखा बनाया था, जिसे यूसुफ़ पहिनकर अपने सब भाइयों से अच्छा लगता था, और प्रत्येक अन्य बात में भी याकूब अपने सब पुत्रों से अधिक यूसुफ़ का ध्यान रखता था। परन्तु यह बात यूसुफ़ के भाइयों को बिल्कुल पसन्द न थी। सो वे उस से जलने लगे और मन ही मन सोचने लगे कि किसी दिन अवसर पाकर हम उसे मार डालेंगे। सो एक दिन जब युसुफ़ के भाई किसी स्थान पर भेड़-

बकरियां चराने को गए हुए थे, तो याकूब ने युसुफ़ को बुलाकर उस से कहा, कि तू जाकर अपने भाइयों की खैर-ख़बर ले आ। सो यूसुफ़ अपने पिता की आज्ञा मानकर चल पड़ा, परन्तु जब वह उस जगह पहुंचा जहां उसके भाई भेड़-बकरियां चरा रहे थे तो उन्हों ने उसे देखकर कहा, कि आओ, हम उसे घात करके किसी गड्ढे में डाल दें, और अपने पिता से कह देंगे कि कोई दुष्ट पशु उसे खा गया।

संध्या को जब याकूब के पुत्र अपने घर पहुंचे, तो उनके साथ यूसुफ़ को न देखकर याकूब को बड़ी चिन्ता हुई। बहुत पूछताछ करने के बाद भी जब उसे कोई पता न चला, तो उसके एक पुत्र ने उसे एक अंगरखा लाकर दिखाया, जोकि खूब अच्छी तरह से ख़ून में सना हुआ था, और उसने कहा कि यह हमें मार्ग में पड़ा मिला है। उस अंगरखे को देखते ही याकूब ने पहिचान लिया और कहा, हां, यह मेरे ही पुत्र का अंगरखा है; किसी दुष्ट पशु ने उसको खा लिया है, और लिखा है कि "तब याकूब ने अपने वस्त्र फाड़े और कमर में टाट लपेटा, और अपने पुत्र के लिये बहुत दिनों तक विलाप करता रहा और उसके बेटे-बेटियों ने उसको शान्ति देने का यत्न किया; पर उसको शान्ति न मिली; और वह यही कहता रहा, मैं तो विलाप करता हुआ अपने पुत्र के पास अधोलोक में उतर जाऊंगा। इस प्रकार उसका पिता रोता ही रहा।" (उत्पत्ति ३७:३२-३५)।

परन्तु क्या यूसुफ़ वास्तव में मर चुका था? क्या खून में सना यूसुफ़ का वह अंगरखा इस बात का पक्का प्रमाण था कि यूसुफ़ मर चुका है? क्या यूसुफ़ के भाइयों की गवाही इस बात का पक्का प्रमाण थी कि यूसुफ़ मर चुका है? क्या याकूब का अनुभव व विश्वास इस बात का पक्का प्रमाण था कि युसुफ़ मर चुका है? जी नहीं। वास्तव में यूसुफ़ जीवित था! परन्तु याकूब अपने मन में इस बात पर पूर्ण रूप से विश्वास कर चुका था कि उसका पुत्र मर चुका है। जब उसने उस

अंगरखे को देखा, तो लोहू में सने उस अंगरखे को देखकर उसने कहा, कि अब इसमें कोई संदेह नहीं रहा, अब मैं निश्चित रूप से जान गया हूं, कि यूसुफ़ को किसी पशु ने फाड़ खाया है और उसका यह विश्वास अपने पुत्रों की गवाही तथा लोहू में सने उस वस्त्र के ऊपर आधारित था।

किन्तु, वास्तविकता यह थी, कि पहिले तो यूसुफ़ के भाइयों ने उसे पकड़कर मार डालने की योजना बनाई परन्तु जब उन्होंने किसी अन्य देश के कुछ व्योपारियों को आते देखा, तो उन्होंने अपना विचार बदल दिया और उसे व्योपारियों के हाथ बेच डाला, और उसका अंगरखा लेकर, एक बकरे को मारके, उसके लोहू में उसे डुबा दिया और इस प्रकार से उस वस्त्र को अपने पिता को दिखाकर उन्होंने उसे धोखा दिया। परन्तु याकूब का अनुभव व विश्वास बिल्कुल पक्का था। उसका पूर्ण विश्वास था कि उसका पुत्र मर चुका है, जबकि यूसुफ़ मिस्र देश में वहां के राजा के एक हाकिम के यहां एक अच्छे पद पर कार्य कर रहा था। सो हम देखते हैं, कि जबकि याकूब का विश्वास इतना पक्का था, परन्तु तौ भी उसका विश्वास इस बात का प्रमाण न था कि यूसुफ़ वास्तव में मर चुका है। सो हम देखते हैं, कि मनुष्य किसी बात पर पूर्ण रूप से विश्वास कर लेने के बाद भी जीवन-भर दोखे में रह सकता है।

सो फिर, इस बात का क्या प्रमाण है कि हमारा उद्धार वास्तव में हुआ है और हम परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करेंगे? जैसा कि हम देख चुके हैं, कि इस बात का पक्का प्रमाण हमारा मानसिक विश्वास नहीं हो सकता। प्रभु यीशु ने कहा कि "उस दिन बहुतेरे मुझ से कहेंगे; हे प्रभु, हे प्रभु, क्या हमने तेरे नाम से भविष्यद्वाणी नहीं की, और तेरे नाम से दुष्टात्माओं को नहीं निकाला, और तेरे नाम से बहुत अचम्भे के काम नहीं किये?" और प्रभु ने कहा, "तब मैं उनसे खुलकर कह

दूंगा कि मैंने तुम को कभी नहीं जाना, हे कुकर्म करनेवालो, मेरे पास से चले जाओ" (मत्ती ७:२२, २३)। यहाँ इन लोगों का पूरा विश्वास था कि ये उद्धार पाएंगे, परन्तु प्रभु ने उनसे कहा कि तुम मेरे पास से चले जाओ, मैं तुमको नहीं जानता। क्यों? क्योंकि प्रभु ने कहा, "जो मुझसे हे प्रभु, हे प्रभु कहता है, उनमें से हर एक स्वर्ग के राज्य में प्रवेश न करेगा, **परन्तु वही जो मेरे स्वर्गीय पिता की इच्छा पर चलता है।"** (मत्ती ७:२१)।

सो इस बात का क्या प्रमाण है कि निश्चय ही मेरा उद्धार होगा और मैं स्वर्ग के राज्य में प्रवेश करूंगा? इसका केवल एक ही निश्चित प्रमाण है, और वह यह है, कि यदि मैंने प्रभु की आज्ञाओं को माना है, यदि मैं उसकी इच्छा पर चलता हूं तो मैं वास्तव में जानता हूं कि मेरा उद्धार हुआ है और मैं परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करूंगा। पवित्र शास्त्र स्पष्टता से बताता है, कि परमेश्वर ने आज अपनी इच्छा को अपने पुत्र यीशु मसीह के द्वारा संसार के सब लोगों पर प्रकट किया है। (इब्रानियों १:१, २)। यीशु ने कहा, "क्योंकि मैं अपनी इच्छा नहीं, वरन अपने भेजनेवाले की इच्छा पूरी करने के लिये स्वर्ग से उतरा हूं।" (यूहन्ना ६:३८)। सो परमेश्वर की इच्छा क्या है? परमेश्वर चाहता है कि आप यीशु मसीह में विश्वास करें कि परमेश्वर ने अपने पुत्र यीशु मसीह को आपके पापों के प्रायश्चित के लिये क्रूस पर बलिदान किया (यूहन्ना ३:१६), और वह चाहता है कि आप अपने पापों से मन फिराएं, (प्रेरितों १७:३०), और फिर उसकी इच्छा है कि आप पिता, और पुत्र, और पवित्र आत्मा के नाम से अपने पापों की क्षमा के लिये बपतिस्मा लें, अर्थात् आप अपने पुराने मनुष्य को बपतिस्मे के द्वारा एक जल रूपी कब्र के भीतर दफ़ना दें और उसमें से बाहर आकर एक नए जीवन की चाल चलें। (मत्ती २८:१८-२० ; रोमियों ६:३,-४)। स्वयं प्रभु यीशु ने कहा, "जो विश्वास करे और बपतिस्मा ले उसी का उद्धार होगा, परन्तु जो विश्वास न करेगा वह दोषी ठहराया

जाएगा।" (मरकुस १६:१६)। और उसने यह भी कहा कि, "आकाश और पृथ्वी टल जाएंगे, परन्तु मेरी बातें कभी न टलेंगी।" (मत्ती २४:३५)।

सो क्या आप निश्चित रूप से जानना चाहते हैं, कि आपका उद्धार हुआ है और आप वास्तव में परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करेंगे ? तो इसका प्रमाण आप केवल परमेश्वर की इच्छा पर चलकर ही प्राप्त कर सकते हैं। इस बात का पक्का प्रमाण न तो कोई भी मनुष्य आपको दे सकता है, न आपका मानसिक विश्वास और न कोई अनुभव इस बात का प्रमाण हो सकता है। और परमेश्वर की इच्छा पर चलने के लिये आपको यीशु मसीह की आवश्यकता है, क्योंकि उसी के द्वारा परमेश्वर ने अपनी इच्छा को मनुष्यों पर प्रगट किया है। इसलिये, यीशु मसीह में विश्वास करें और उसकी आज्ञाओं का पालन करें। क्योंकि यीशु ने कहा, "मार्ग और सच्चाई और जीवन मैं ही हूं ; बिना मेरे द्वारा कोई पिता के पास नहीं पहुंच सकता।" (यूहन्ना १४:६)।

३

बुराई के बदले भलाई

प्रभु यीशु मसीह से पूर्व एक बड़ी ही प्रचलित शिक्षा यह थी कि अपने पड़ोसी से प्रेम रखना और अपने बैरी से बैर। परन्तु यीशु मसीह ने अपने अनुयायियों को शिक्षा देकर कहा कि "मैं तुमसे यह कहता हूं, कि अपने बैरियों से प्रेम रखो और अपने सतानेवालों के लिये प्रार्थना करो।" (मत्ती ५ : ४४)। वास्तव में, मनुष्यों के लिये इस शिक्षा पर चलना बड़ा ही कठिन है। परन्तु प्रभु यीशु के नए नियम में इस शिक्षा पर बहुत बल दिया गया है, और इसका एक कारण यह है कि जबकि परमेश्वर ने अपने पुत्र को संसार के सारे लोगों के लिये मरने को भेज दिया, अर्थात् उसने किसी का भी पक्ष नहीं लिया; वह एक बड़े-से-बड़े पापी के लिये भी क्रूस पर बलिदान हुआ, तो फिर मनुष्य क्यों न एक-दूसरे के साथ प्रेम रखें और एक-दूसरे के प्रति सहनशीलता धारण करें।

इस विषय में प्रेरित पौलुस कहता है, "बुराई के बदले किसी से बुराई न करो ; जो बातें सब लोगों के निकट भली हैं, उनकी चिन्ता किया करो। जहां तक हो सके, तुम अपने भरसक सब मनुष्यों के साथ मेल-मिलाप रखो। हे प्रियो अपना पलटा न लेना ; परन्तु क्रोध को अवसर दो, क्योंकि लिखा है, पलटा लेना मेरा काम है, प्रभु कहता है मैं ही बदला दूंगा। परन्तु यदि तेरा बैरी भूखा हो, तो उसे खाना खिला ; यदि प्यासा हो, तो उसे पानी पिला; क्योंकि ऐसा करने से तू उसके सिर पर आग के अंगारों का ढेर लगाएगा। बुराई से न हारो परन्तु भलाई से बुराई को जीत लो।" (रोमियों १२:१७-२१)। और एक अन्य स्थान पर बाइबल शिक्षा देकर कहती है, "बुराई के बदले

बुराई मत करो ; और न गाली के बदले गाली दो; पर इसके विपरीत आशीष ही दो ···· क्योंकि जो कोई जीवन की इच्छा रखता है, और अच्छे दिन देखना चाहता है, वह अपनी जीभ को बुराई से, और अपने होठों को छल की बातें करने से रोके रहे। वह बुराई का साथ छोड़े, और भलाई ही करे ; वह मेल-मिलाप को ढूंढ़े, और उसके यत्न में रहे। क्योंकि प्रभु की आँखें धर्मियों पर लगी रहती हैं, और उसके कान उनकी बिनती की ओर लगे रहते हैं, परन्तु प्रभु बुराई करनेवालों के विमुख रहता है।" (१ पतरस ३ : ९-१२)।

पवित्र शास्त्र में हम ऐसे अनेकों उदाहरणों को पढ़ते हैं जो विशेष रूप से हमें इसी सिद्धान्त की शिक्षा देते हैं। उनमें से कुछ का वर्णन यहां मैं आपके सामने करना चाहता हूं। इस विषय में सबसे पहिला उदाहरण हमें यूसुफ़ और उसके भाइयों के बारे में मिलता है। उत्पत्ति की पुस्तक के ३७ अध्याय में हम पढ़ते हैं, कि यूसुफ़ के भाई उस से बहुत बैर व शत्रुता रखते थे। और वे यहां तक उस से बैर रखने लगे, कि एक दिन उन्होंने उसे अकेले जंगल में पकड़कर उसे मार डालने की योजना बनाई, परन्तु फिर उन्होंने अपना निश्चय बदलकर, उसे वहां से निकलकर जाते हुए मिस्रियों के एक दल के हाथ बेच डाला। सो इस प्रकार से यूसुफ़ के भाइयों ने अपने मन के क्रोध को शान्त किया। परन्तु हम आगे पढ़ते हैं, कि व्योपारियों का वह दल यूसुफ़ को लिये जब मिस्र में पहुँचा, तो वहां के राजा के हाकिम ने यूसुफ़ को अपने घर के काम के लिये उनसे मोल ले लिया। परन्तु परमेश्वर यूसुफ़ के साथ था और उसके अच्छे आचरण वा बुद्धिमानी की चर्चा शीघ्र ही लोगों में फैलने लगी। कुछ ही वर्षों के बाद जब राजा को एक बड़े ही बुद्धिमान व्यक्ति की आवश्यकता पड़ी, तो उसके सामने यूसुफ़ को प्रस्तुत किया गया। राजा ने यूसुफ़ की बुद्धिमानी से प्रभावित होकर उसे शीघ्र ही सारे मिस्र देश पर अधिकारी बना दिया। कुछ ही वर्षों के बाद जब पृथ्वी पर एक बड़ा भारी अकाल पड़ा, तो लोग अन्न के

लिये भटकने लगे। परन्तु यूसुफ़ की अत्यन्त ही बुद्धिमानी के कारण मिस्रियों को अकाल में भूख का सामना न करना पड़ा, क्योंकि उसने पहले ही से कई वर्षों के लिये अतिरिक्त अनाज जमा कर रखा था। सो हम पढ़ते हैं, कि जब यूसुफ़ के परिवार को इस बात का पता चला कि मिस्र में अन्न है, तो अन्य लोगों की तरह यूसुफ़ के भाई भी मिस्र में अन्न मोल लेने के लिये आए। कई वर्षों के बाद अपने भाइयों को देखकर यूसुफ़ ने तो उन्हें पहिचान लिया, परन्तु उसके भाई कदाचित् उसे भूल चुके थे, और वे इस बात की कल्पना भी नहीं कर सकते थे कि यूसुफ़ मिस्र देश का एक बड़ा अधिकारी है। सो यूसुफ़ ने उनके साथ क्या व्यवहार किया? क्या उन्हें देखकर उसके भीतर उनके प्रति बदले की भावना जाग उठी? निःसंदेह, यदि वह चाहता तो उन्हें अन्न न देकर भूखों मार सकता था, या उनसे कुछ भी दुर्व्यवहार कर सकता था, क्योंकि उस समय वह सारे देश का एक बड़ा अधिकारी था और उस से बैर रखनेवाले उसके भाई उस समय उस से अन्न की भीख मांगने आए थे। परन्तु हम पढ़ते हैं, कि परमेश्वर से डरनेवाले यूसुफ़ ने न केवल उनको अन्न ही दिया परन्तु अपने आपको उन पर प्रगट करके उसने उन्हें समझाया कि तुम मत घबराओ, डरो मत, और उसने उनके अपराध क्षमा किए और उन्हें और अपने पिता को उसने मिस्र में ही बुलवा लिया और उनका बड़ा मान सम्मान किया। यों यूसुफ़ ने अपने बैरियों के साथ भलाई की और उनके प्राणों को बचा लिया। (उत्पत्ति ४५ तथा ५० अध्याय)।

इस विषय में एक दूसरा उदाहरण हमें दाऊद के बारे में मिलता हैं। परमेश्वर ने दाऊद को इस्राएल पर राज्य करने को चुना था। परन्तु उस समय शाऊल इस्राएल पर राज्य कर रहा था, सो वह नहीं चाहता था कि दाऊद उसकी जगह राजगद्दी पर बैठे। बाइबल में पहिले शमूएल की पुस्तक में हम पढ़ते हैं कि शाऊल ने कई बार दाऊद को मार डालने की योजना बनाई परन्तु वह हर बार अपनी योजना

को पूरा करने में असफल रहा। क्योंकि परमेश्वर दाऊद के साथ था। और इसके विपरीत, हम पढ़ते हैं कि दाऊद को कई बार शाऊल की हानि करने के अवसर हाथ लगे, परन्तु उसने हर बार शाऊल के साथ भलाई ही करी। एक अवसर पर हम देखते हैं, कि दाऊद के साथियों ने शाऊल को अकेले पाकर, दाऊद से कहा, कि अब हम तेरे शत्रु का अन्त कर सकते हैं, परन्तु शाऊल ने उनका विरोध किया और उन्हें शाऊल की हानि करने से रोका। (१ शमुएल २४)। और हम देखते हैं, कि जब शाऊल को इस बात का पता चला कि किस प्रकार से अवसर होते हुए भी दाऊद ने उसे घात न किया। तो शाऊल ने दाऊद से कहा, "तू मुझ से अधिक धर्मी है ; तूने तो मेरे साथ भलाई की है, परन्तु मैंने तेरे साथ बुराई की......भला क्या कोई मनुष्य अपने शत्रु को पाकर कुशल से जाने देता है ? इसलिये जो तूने आज मेरे साथ किया है, इसका अच्छा बदला यहोवा (**परमेश्वर**) तुझे दे।" सो इस प्रकार से दाऊद ने बुराई के बदले भलाई करके शाऊल के सिर पर आग के अंगारों का ढेर लगाया।

और स्वयं प्रभु यीशु मसीह के जीवन में भी, जिसने कहा, कि अपने बैरियों से प्रेम रखो और अपने सतानेवालों के लिये प्रार्थना करो, हमें इस सिद्धान्त का एक बहुत ही अच्छा उदाहरण मिलता है। जैसे कि हम देखते हैं, कि यीशु को मृत्यु दन्ड दिलवाने के उद्देश्य से उसके शत्रुओं ने उसे पकड़कर उस पर झूठे आरोप लगाए, फिर उन्होंने उसे घूंसे और थप्पड़ मारे, उसके मूंह पर थूका और हर प्रकार से उसका निरादर किया, परन्तु इतने पर ही सन्तुष्टी प्राप्त न करके उन्होंने एक भारी क्रूस लेकर उसके कन्धे पर रखा और उसे लेकर चलने को उसे मजबूर किया, और उसके पीछे एक बड़ी भीड़ उसके साथ-साथ चल रही थी, जिनमें से अधिकांश लोग उसका ठट्ठा वा उपहास करते जा रहे थे। और फिर एक ऊँचे स्थान पर पहुँचकर उन्होंने उसे उसी क्रूस के ऊपर लिटा दिया, और उसके हाथ वा पैर कीलों के साथ उसके

ऊपर ठोंक दिये। और तब उन्होंने उस क्रूस को खड़ा करके उसका निचला भाग मिट्टी में दबा दिया और यों उसे मरने के लिये छोड़ दिया। परन्तु इस सबके बाद, लिखा है, "तब यीशु ने कहा ; हे पिता, इन्हें क्षमा कर, क्योंकि ये जानते नहीं कि क्या कर रहे हैं।" (लूका २३ : ३४)।

वास्तव में, इस प्रकार का स्वभाव एक छोटे बालक का सा स्वभाव है। हम अपने परिवारों में अकसर छोटे-छोटे बालकों को आपस में लड़ते-झगड़ते देखते हैं, परन्तु फिर थोड़ी ही देर बाद वे सब कुछ भुलाकर एक दूसरे के मित्र बन जाते हैं। एक छोटे बालक को किसी बात पर कदाचित् आप मार बैठें, परन्तु थोड़ी ही देर बाद वह बालक फिर आपसे खेलने लगेगा। इसीलिये, प्रभु यीशु ने कहा, "मैं तुमसे सच कहता हूँ, यदि तुम न फिरो और बालकों के समान न बनो, तो स्वर्ग के राज्य में प्रवेश करने नहीं पाओगे।" (मत्ती १८ : ३)। और एक और स्थान पर उसने कहा, क्योंकि स्वर्ग का राज्य ऐसों ही का है। (मत्ती १९ : १४)।

वे लोग जो इस उत्तम सिद्धांत पर चलते हैं, वे यीशु मसीह के उस सुनहरे नियम का पालन करते हैं जिसकी आज्ञा देकर उसने कहा, "इस कारण जो कुछ तुम चाहते हो, कि मनुष्य तुम्हारे साथ करें, तुम भी उनके साथ वैसा ही करो। ((मत्ती ७ : १२)। क्या आप चाहते हैं कि अन्य लोग आपके साथ अच्छा बर्ताव करें, आपके बारे में अच्छी बातें कहें, तो पहिले स्वयं आप अन्य लोगों के साथ ऐसा ही करें।

मसीही जीवन वास्तव में एक ऐसा जीवन है जिसका उद्देश्य संसार में सभी लोगों के साथ भलाई करना है, क्योंकि मसीही जन एक वह व्यक्ति है जिसने अपने पुराने मनुष्यत्व को उसके कामों समेत उतार डाला है और एक नए मनुष्यत्व को पहिन लिया है जो अपने सृजनहार के स्वरूप के अनुसार ज्ञान प्राप्त करने के लिये नया बनता जाता है।

(कुलुस्सियों ३ : ५-११)। क्या आप भी अपने पुराने मनुष्यत्व को उतारकर उस नए मनुष्यत्व को पहिन लेने की इच्छा रखते हैं, जिसका उद्देश्य भलाई करना और अपने सृजनहार की निकटता में आगे बढ़ना है ? परमेश्वर अपने वचन के द्वारा हमें बताता है, "सो यदि कोई मसीह में है तो वह नई सृष्टि है : पुरानी बातें बीत गई हैं ; देखो, वे सब नई हो गईं।" (२ कुरिन्थियों ५ : १७)। यदि आप प्रभु यीशु मसीह में विश्वास करेंगे, और अपने पापों से मन फिराएंगे और उसकी आज्ञानुसार बपतिस्मा लेंगे तो वह आपका उद्धार करके आपको एक नया मनुष्य बनाएगा और आपको अनन्त जीवन की आशा प्रदान करेगा। सो परमेश्वर के वचन में हम पढ़ते हैं, "क्योंकि तुम सब उस विश्वास करने के द्वारा जो मसीह यीशु पर है, परमेश्वर की सन्तान हो। और तुम में से जितनों ने मसीह में बपतिस्मा लिया है उन्होंने मसीह को पहिन लिया है।" (गलतियों ३ : २६-२७)। परमेश्वर आपको उचित निश्चय करने के लिये सुबुद्धि दे।

४

यीशु एक सच्चा मित्र

मनुष्य के जीवन में एक बड़ी ही शोकजनक स्थिति उस समय उत्पन्न होती है जब वह अपने आपमें अकेलेपन का अनुभव करने लगता है। मनुष्य वास्तव में स्वभाव से ही एक ऐसा प्राणी है जिसे सदा ही एक साथी या मित्र की आवश्यकता पड़ती है। मनुष्य की यह आवश्यकता उतनी ही पुरानी है जितना कि स्वयं मनुष्य। सो बाइबल हमें बताती है, कि आरम्भ में जब परमेश्वर ने पहिले एकमात्र मनुष्य की रचना की तो परमेश्वर ने देखा और अनुभव किया कि आदम का अकेला रहना अच्छा नहीं। सो परमेश्वर ने आदम के लिये एक स्त्री की रचना की। एक साथी या मित्र की आवश्यकता केवल बड़े लोगों को ही नहीं पड़ती, परन्तु छोटे-छोटे बच्चे भी इसकी आवश्यकता का अनुभव करते हैं। सो हम देखते हैं, छोटे बालक अधिक समय तक अकेले नहीं रह सकते, बहुत जल्दी ही वे इस बात का अनुभव करने लगते हैं कि उनके पास कोई नहीं है। हम सबको ही समय-समय पर मित्रों की आवश्यकता पड़ती है, और हम चाहते हैं कि हमारे अधिक से अधिक मित्र हों।

परन्तु मित्र कई तरह के होते हैं। कुछ मित्र इस प्रकार के होते हैं जैसे कि उस लड़के के थे, जिसका उदाहरण देकर प्रभु यीशु ने कहा, कि उसने उनके कहने में आकर अपने पिता से सम्पत्ति में से अपना भाग मांग लिया और उनके साथ एक दूर देश में जा बसा। वहां जब तक उसके पास धन रहा, उसके सारे मित्र उसके साथ आनन्द उड़ाते रहे, परन्तु ज्यों ही उसका धन समाप्त हो गया, उसके वे सारे अच्छे समय के मित्र भी एक-एक करके उसे विदेश में अकेला छोड़कर चले गए। फिर, कुछ मित्रों की गिनती यहूदा नाम के यीशु के उस चेले के साथ

की जा सकती है जिसने धन के लोभ में आकर अपने प्रभु को शत्रुओं के हाथ पकड़वा दिया। परन्तु, "इस से बड़ा प्रेम किसी का नहीं, कि कोई अपने मित्रों के लिये अपना प्राण दे।" (यूहन्ना १५ : १३)। हम अकसर एक कहावत कहते हैं, कि जो आवश्यकता में एक मित्र है, वह वास्तव में एक मित्र है। सो क्या यीशु मसीह वास्तव में हमारा एक-मात्र सच्चा मित्र न ठहरा ? उसने हमारे लिये अपने प्राणों को बलिदान किया और उस समय जबकि हमें उसकी आवश्यकता थी, वह हमारे काम आया।

पवित्र शास्त्र में एक स्थान पर हम पढ़ते हैं कि "हम तो सबके सब भेड़ों की नाईं भटक गए थे ; हम में से हर एक ने अपना-अपना मार्ग लिया" परन्तु परमेश्वर ने "हम सभों के अधर्म का बोझ उसी पर लाद दिया।" (यशायाह ५३ : ६)। वास्तव में हमारे ऊपर पाप का एक बड़ा भारी बोझ था जिसे लेकर चलना हमारे वश के बाहर था और जिसका अन्त अनन्त मृत्यु था। उस विशाल बोझ को अपने ऊपर उठाकर हम अंधकार में इधर-उधर भटक रहे थे। संसार में हमारा ऐसा कोई मित्र नहीं था जो उस बोझ को हमारे स्थान पर उठा ले। सो परमेश्वर स्वयं यीशु मसीह में होकर इस पृथ्वी पर आया और यीशु ने न केवल आपके और मेरे बोझ को ही अपने ऊपर उठा लिया, परन्तु उसने हमारा वह कर्ज़ा भी स्वयं चुका दिया जो हमारे ऊपर था, अर्थात् मृत्यु, अनन्त मृत्यु ! कभी-कभी हमें एक भारी बोझ को उठाकर चलना पड़ता है जो हमारी शक्ति के बाहर होता है और ऐसे समय में हम कितनी लालसा करते हैं कि कोई व्यक्ति उस बोझ को उठाने में हमारी सहायता कर दे। कभी-कभी हमारे ऊपर कोई बड़ा कर्ज़ा हो जाता है, जिसे चुकाने में हम असमर्थ होते हैं, सो हम सहायता के लिये अपने मित्रों के पास जाते हैं, परन्तु अकसर ऐसे समय में हमारे अच्छे-अच्छे मित्र भी हमारी सहायता करने से इन्कार कर देते हैं। परन्तु यीशु हमारा एक वफ़ादार मित्र है। उसने स्वयं अपनी इच्छा से

हमारे बोझ को अपने ऊपर उठा लिया, और वह कर्ज़ा जो हमें देना था उसने हमारे बदले में स्वयं चुका दिया। वह दाम जो हमें देना था उसे चुकाने के लिये उसने अपने लोहू की एक-एक बूंद बहा दी। वह स्वर्ग छोड़कर इस पृथ्वी पर आया और हमारे कारण निर्धन हो गया ताकि हम उसके द्वारा स्वर्ग में प्रवेश करके धनी बन जाएं। हमारे कारण उस धर्मी की गिनती पापियों के साथ हुई ताकि हम उसके बलिदान के द्वारा धर्मी बन जाएं। सो पवित्र बाइबल बताती है, "जो पाप से अज्ञात् था उसी को उसने हमारे लिये पाप ठहराया, कि हम उसमें होकर परमेश्वर की धार्मिकता बन जाएं।" (२ कुरिन्थियों ५ : २१)।

और फिर, एक और जगह पवित्र शास्त्र हमें बताता है, "क्योंकि जब हम निर्बल ही थे, तो मसीह ठीक समय पर भक्तिहीनों के लिये मरा। किसी धर्मी जन के लिये कोई मेरे, यह तो दुर्लभ है, परन्तु क्या जाने किसी भले मनुष्य के लिये कोई मरने का भी हियाव करे, परन्तु परमेश्वर हम पर अपने प्रेम की भलाई इस रीति से प्रगट करता है, कि जब हम पापी ही थे तभी मसीह हमारे लिये मरा।" (रोमियों ५ : ६-८)। यहां एक विशेष बात जो हमें मिलती है, वह यह है कि यीशु मसीह ने अपनी मित्रता का हाथ हमारी ओर उस समय बढ़ाया जब हम निर्बल, भक्तिहीन, अधर्मी व पापी थे, अर्थात् जबकि हमारे भीतर कोई अच्छाई या विशेषता न थी। यदि कोई मनुष्य किसी को अपना मित्र बनाना चाहता है तो वह अकसर उस व्यक्ति में कोई विशेषता देखता है, या उसमें कोई ऐसी बात देखता है जो उसके अनुकूल होती है, परन्तु यीशु ने हमसे हमारी किसी योग्यता या विशेषता को देखकर मित्रता नहीं की। वह हमें बचाने के लिये हमारा मित्र बना, उसने अपने जीवन को बलिदान कर दिया ताकि हमें अनन्त जीवन मिल जाए, वह हमें शक्ति देने के लिये निर्बल बन गया। वास्तव में यह बात सच है, कि इस से बड़ा प्रेम किसी का नहीं, कि कोई अपने मित्रों के लिये अपना प्राण दे, और ऐसा ही प्रेम यीशु ने संसार के

सब लोगों से किया, क्योंकि वही हमारा एकमात्र सच्चा मित्र है। हम अकसर एक गीत गाते हैं ?

यीशु कैसा दोस्त प्यारा, दुख और बोझ उठाने को,
क्या ही उमदा वक्त हमारा, बाप के पास अब जाने को,
आह, हम राहत अक़सर खोते, नाहक ग़म उठाते हैं,
यह ही बाइस है यकीनन, बाप के पास न जाते हैं।

सो यीशु एक ऐसा मित्र नहीं है जो दुख वा कठिनाई के समय हमें अकेला छोड़ दे, परन्तु वह हमारा एक ऐसा मित्र है जो हमारे दुख व कठिनाइयों के बोझ को उठाने के लिये सदा तैयार है। परन्तु बहुतेरे लोग यीशु को अपना मित्र नहीं बनाना चाहते, क्योंकि यीशु से मित्रता करने का अर्थ यह है कि उन्हें अपने अनेकों अन्य मित्रों का साथ छोड़ना पड़ेगा। वे एक ही समय में यीशु के और अन्धकार के काम करनेवाले लोगों के मित्र नहीं हो सकते। और इस प्रकार से बहुतेरे लोग इस सुन्दर अवसर को खो रहे हैं। परन्तु संसार से मित्रता करने में और यीशु से मित्रता करने में एक बहुत बड़ा अन्तर है। संसार की मित्रता में कदाचित् मनुष्य को कुछ समय का आनन्द अवश्य ही प्राप्त हो, परन्तु उसका अन्त बड़ा ही भयंकर है। पवित्र बाइबल बताती है, कि यह एक "ऐसा मार्ग है, जो मनुष्य को ठीक दीख पड़ता है, परन्तु उसके अन्त में मृत्यु ही मिलती है।" (नीतिवचन १४ : १२)। और एक और जगह हम यूं पढ़ते हैं, "कि संसार से मित्रता करनी परमेश्वर से बैर करना है। सो जो कोई संसार का मित्र होना चाहता है, वह अपने आपको परमेश्वर का बैरी बनाता है।" (याकूब ४:४)।

दूसरी ओर, जब हम यीशु की मित्रता को स्वीकार कर लेते हैं, तो हम उस मार्ग को स्वीकार कर लेते हैं जिसका परिणाम अनन्त जीवन है। उसने कहा, "मार्ग और सच्चाई और जीवन मैं ही हूं ; बिना मेरे द्वारा कोई पिता के पास नहीं पहुंच सकता।" (यूहन्ना १४:६)। सो यीशु हमारा एक ऐसा मित्र है जिसके द्वारा हम पिता, अर्थात्

परमेश्वर के पास पहुंच सकते हैं और उसने कहा, और दूसरा कोई ऐसा मार्ग नहीं है जिसके द्वारा मनुष्य परमेश्वर के पास पहुंच सकता है। केवल वही एकमात्र ऐसा मार्ग है। सो यीशु वास्तव में एक बड़ा ही महत्त्वपूर्ण मित्र है। उसके द्वारा हम उद्धार प्राप्त कर सकते हैं, क्योंकि उसने हमारे पापों के कारण दुःख सहा और हमारे अपराधों का दण्ड स्वयं अपने ऊपर ले लिया, ताकि हम उस कर्ज़ से मुक्त हो जाएं। उसके द्वारा हम परमेश्वर के पास पहुँच सकते हैं क्योंकि वह हमारा बिचवई है। पवित्र शास्त्र हमें बताता है, "क्योंकि परमेश्वर एक ही है: और परमेश्वर और मनुष्यों के बीच में भी एक ही बिचवई है, अर्थात् मसीह यीशु जो मनुष्य है।" (१ तीमुथियुस २ : ५)। क्योंकि वह परमेश्वर की ओर से आया और मनुष्यों के बीच में रहा, और क्योंकि अपराधियों के विषय में परमेश्वर की मांग को उसने क्रूस के ऊपर मृत्यु-दण्ड सहकर पूरा किया, इसलिये वह परमेश्वर और मनुष्यों के बीच में एक मध्यस्थ ठहरा। उसके द्वारा कोई भी मनुष्य परमेश्वर के साथ अपना मेल कर सकता है।

परन्तु कदाचित् आप कहें, कि मेरी परमेश्वर के साथ कोई लड़ाई नहीं है, इसलिये मुझे परमेश्वर के साथ मेल करने की कोई आवश्यक्ता नहीं है। परन्तु परमेश्वर और आपके बीच में अलग होने का कारण कोई लड़ाई नहीं है, पर जैसे कि पवित्र शास्त्र बताता है, "परन्तु तुम्हारे अधर्म के कामों ने तुमको तुम्हारे परमेश्वर से अलग कर दिया है, और तुम्हारे पापों के कारण उसका मुंह तुमसे ऐसा छिपा है कि वह नहीं सुनता।" (यशायाह ५९ : २)। सो पाप और अधर्म एक वह वस्तु है, जो मनुष्य को परमेश्वर से अलग करती है, परन्तु जब हम प्रभु यीशु के पास आते हैं, और उसके द्वारा अपने पापों से छुटकारा प्राप्त करते हैं, तो परमेश्वर और हमारे बीच में बैर का कारण समाप्त हो जाता है और इससे हमारा मेल परमेश्वर के साथ हो जाता है, और हम परमेश्वर के सन्तान बन जाते हैं। पवित्र बाइबल हमें बताती है, "क्योंकि तुम सब उस विश्वास करने के द्वारा जो मसीह यीशु पर

है, परमेश्वर की सन्तान हो और तुम में से जितनों ने मसीह में बपतिस्मा लिया हैं उन्होंने मसीह को पहिन लिया है।" (गलतियों ३ : २६-२७)। सो जब हम यीशु मसीह में विश्वास करते हैं और बपतिस्मा लेते है, तो यीशु हमारे पापों से हमारा उद्धार करता है और परमेश्वर के साथ हमारा मेल करवाता है। इसीलिये, उसने आज्ञा देकर कहा, "जो विश्वास करे और बपतिस्मा ले उसी का उद्धार होगा परन्तु जो विश्वास न करेगा वह दोषी ठहराया जाएगा।" (मरकुस १६ : १६)। अर्थात्, नाश होने के लिये मनुष्य को उसमें विश्वास न करना ही काफ़ी है, परन्तु उद्धार केवल उसी का होगा जो विश्वास करेगा और बपतिस्मा लेगा।

क्या आप यीशु के द्वारा उद्धार प्राप्त करके परमेश्वर के साथ अपना मेल करना न चाहेंगे? उसकी आज्ञा पर ध्यान दें और उसका पालन करें। उसने कहा, "जो कुछ मैं तुम्हें आज्ञा देता हूँ यदि उसे करो, तो तुम मेरे मित्र हो।" (यूहन्ना १५ : १४)। क्या आप उसे अपना मित्र न बनाएंगे जो आपके दुःख और बोझ उठाने को तैयार है, जो आपका उद्धार कर सकता है, और आपका मेल परमेश्वर के साथ करवा सकता है, और आपको स्वर्ग में अनन्त जीवन दे सकता है? वह आपका मित्र बनना चाहता है, वह अभी तैयार है। उसके इन शब्दों को ध्यान से सुनें, वह आप सबसे कह रहा है, "हे सब परिश्रम करने-वालो और बोझ से दबे हुए लोगो, मेरे पास आओ, मैं तुम्हें विश्राम दूंगा।" (मत्ती ११ : २८)।

५

क्या आप परमेश्वर के मित्र हैं ?

बाइबल में हम जिन अनेकों प्रमुख व्यक्तियों के बारे में पढ़ते हैं, उनमें इब्राहीम का नाम बड़ा ही विशेष है। इब्राहीम के विषय में एक बहुत ही विशेष बात जो हमें मिलती है वह यह है, कि इब्राहीम परमेश्वर का मित्र कहलाता था। यह बात इब्राहीम के बारे में इसलिये विशेष है, क्योंकि बाइबल में जबकि हम अनेकों लोगों के बारे में पढ़ते हैं, किन्तु इन शब्दों का उपयोग विशेष रूप से केवल इब्राहीम के लिये ही हुआ है। इब्राहीम से सैकड़ों वर्ष बाद, याकूब नाम का यीशु का एक चेला जब लोगों को विश्वास तथा विश्वास के महत्त्व के बारे में बता रहा था, तो उसने इब्राहीम का उदाहरण देकर कहा, "जब हमारे पिता इब्राहीम ने अपने पुत्र इसहाक को वेदी पर चढ़ाया, तो क्या वह कर्मों से धर्मी न ठहरा था ? सो तू ने देख लिया कि विश्वास ने उसके कामों के साथ मिलकर प्रभाव डाला है और कर्मों से विश्वास सिद्ध हुआ। और पवित्र शास्त्र का यह वचन पूरा हुआ, कि इब्राहीम ने परमेश्वर की प्रतीति की, और यह उसके लिये धर्म गिना गया, **और वह परमेश्वर का मित्र कहलाया।**" (याकूब २:२१-२३)।

सो इब्राहीम के जीवन में सबसे पहिली बात जो हम देखते हैं, वह था उसका विश्वास। उसने परमेश्वर की प्रतीति की, अर्थात् उसने परमेश्वर पर विश्वास किया। मनुष्य के जीवन में विश्वास भौतिक तथा आत्मिक दोनों ही दृष्टिकोण से बड़ा ही महत्वपूर्ण है। विशेष रूप से आत्मिक या धार्मिक दृष्टिकोण से तो यह एक बड़ा ही शक्तिशाली सिद्धांत है। परमेश्वर का पवित्र शास्त्र हमें बताता है कि "विश्वास बिना उसे प्रसन्न करना अनहोना, क्योंकि परमेश्वर के पास आनेवाले

को विश्वास करना चाहिए, कि वह है ; और अपने खोजनेवालों को प्रतिफल देता है।" (इब्रानियों ११:६)। विश्वास न केवल परमेश्वर को प्रसन्न करने के लिये ही, परन्तु अनन्त जीवन प्राप्त करने के लिये भी बड़ा ही आवश्यक है। बाइबल में एक और जगह हम पढ़ते हैं "क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे, वह नाश न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए।" (यूहन्ना ३:१६)। प्रभु यीशु के सब कामों के अन्त में, जो उसने पृथ्वी पर रहकर किए, पवित्र बाइबल बताती है, "यीशु ने और भी बहुत चिन्ह चेलों के सामने दिखाए, जो इस पुस्तक में लिखे नहीं गए। परन्तु ये इसलिये लिखे गए हैं, कि तुम विश्वास करो, कि यीशु ही परमेश्वर का पुत्र मसीह है ; और विश्वास करके उसके नाम से जीवन पाओ।" (यूहन्ना २०:३०, ३१)। सो मनुष्य के उद्धार में विश्वास का एक विशेष स्थान है, क्योंकि जो मनुष्य मसीह यीशु में विश्वास न करेगा वह नाश होगा। परन्तु तौ भी मनुष्य केवल विश्वास से ही उद्धार नहीं प्राप्त कर सकता। एक स्थान पर हम पढ़ते हैं, कि प्रभु यीशु के प्रचार को सुनकर आराधनालय के बहुतेरे बड़े-बड़े अधिकारियों ने उस पर विश्वास किया। परन्तु हम आगे पढ़ते हैं कि फ़रीसियों के कारण वे प्रगट में नहीं मानते थे, कहीं ऐसा न हो कि आराधनालय में से निकाले जाएं। (यूहन्ना १२:४२)। सो यहां हम देखते हैं कि ये लोग अपने मन में तो उसे स्वीकार करते थे, उस पर विश्वास करते थे, परन्तु वे प्रगट में नहीं मानते थे, अर्थात् वे बपतिस्मा नहीं लेना चाहते थे, (लूका ७:३०), न उसकी किसी और आज्ञा का पालन करना चाहते थे, जिस से कि लोगों पर प्रगट हो जाए कि वे मसीह के अनुयायी हैं।

ठीक इसी तरह के सैकड़ों व हज़ारों लोग आज भी हैं वे अपने आपको केवल इसी एक बात पर मसीही व मसीह के चेले समझते हैं क्योंकि वे मसीह में विश्वास करते हैं। परन्तु प्रभु यीशु कहता है, "जब तुम मेरा कहना नहीं मानते, तो क्यों मुझे हे प्रभु, हे प्रभु, कहते हो ?" (लूका

६:४६) । सो यीशु पर केवल विश्वास करने के कारण न तो आराधनालय के वे सरदार ही उसके चेले ठहरे, और न ही वे लोग जो आज उस पर केवल विश्वास ही करते हैं व उसे केवल अपने मन में ही अपना उद्धार-कर्त्ता मानते हैं, वास्तव में उसके चेले बन सकते हैं । उसने कहा, "जब तुम मेरा कहना नहीं मानते तो क्यों मुझे हे प्रभु, हे प्रभु कहते हो ?" इब्राहीम परमेश्वर का मित्र कहलाया, क्योंकि इब्राहीम परमेश्वर पर विश्वास करता था । परन्तु इब्राहीम केवल विश्वास ही नहीं करता था । उसके बारे में लिखा है कि "विश्वास ने उसके कामों के साथ मिलकर प्रभाव डाला और कर्मों से विश्वास सिद्ध हुआ ।" सो इब्राहीम जिस विश्वास के बल पर परमेश्वर का मित्र कहलाया वह विश्वास एक सिद्ध विश्वास था । और उसके विश्वास की सिद्धता का विशेष कारण उसके काम थे, अर्थात् उसने परमेश्वर की आज्ञाओं को माना ।

बाइबल में, इब्रानियों नाम की पुस्तक के ग्यारह अध्याय में हम इब्राहीम के बारे में यूं पढ़ते हैं कि "विश्वास ही से इब्राहीम जब बुलाया गया तो आज्ञा मानकर ऐसी जगह निकल गया जिसे मीरास में लेने-वाला था, और यह न जानता था, कि मैं किधर जाता हूं ; तौ भी निकल गया ।" (इब्रानियों ११:८) । इब्राहीम उस समय ऊर नाम के एक नगर में रहता था । परन्तु परमेश्वर ने इब्राहीम से कहा, कि तू अपने देश, और अपनी जन्मभूमि, और अपने पिता के घर को छोड़कर उस देश में चला जा जो मैं तुझे दिखाऊंगा । और लिखा है, कि परमेश्वर के इस वचन के अनुसार इब्राहीम अपने घर-बार को समेटकर चल पड़ा । (उत्पत्ति १२:१-५) । इब्रानियों की पत्री का लेखक इब्राहीम के विषय में हमें आगे बताता है कि "विश्वास ही से इब्राहीम ने परखे जाने के समय में, इसहाक को बलिदान चढ़ाया ।" (इब्रानियां ११:१७) । इब्राहीम के यहां इसहाक को छोड़ कोई और संतान नहीं थी । इसहाक इब्राहीम का एकलौता पुत्र था । परन्तु एक दिन परमेश्वर ने इब्राहीम से कहा, कि तू "अपने पुत्र को अर्थात् अपने एकलौते पुत्र इसहाक को,

जिस से तू प्रेम रखता है, संग लेकर मोरिय्याह देश में चला जा ; और वहां उसको एक पहाड़ के ऊपर जो मैं तुझे बताऊंगा होमबलि करके चढ़ा।" और लिखा है, "सो इब्राहीम बिहान को तड़के उठा और अपने गदहे पर काठी कसकर अपने दो सेवक, और अपने पुत्र इसहाक को संग लिया, और होमबलि के लिये लकड़ी चीर ली ; तब कूच करके उस स्थान की ओर चला, जिसकी चर्चा परमेश्वर ने उस से की थी।" मार्ग में ऐसी कोई वस्तु न थी जो इब्राहीम के दृढ़ विश्वास को डगमगा देती, वा उसे परमेश्वर की आज्ञा पूर्ण करने से रोकती। सो हम आगे देखते हैं, कि जब वह इसहाक को लेकर उस स्थान पर पहुँचा जो परमेश्वर ने उसे बताया था, और अपना हाथ बढ़ाकर उसने छुरी को ले लिया कि परमेश्वर की आज्ञानुसार अपने पुत्र को बलि करे। तब, एकाएक, इब्राहीम को परमेश्वर की यह आवाज़ सुनाई पड़ी, "हे इब्राहीम, हे इब्राहीम···उस लड़के पर हाथ मत बढ़ा, और न उस से कुछ कर: क्योंकि तूने जो मुझ से अपने पुत्र, वरन अपने एकलौते पुत्र को भी, नहीं रख छोड़ा ; इस से मैं अब जान गया कि तू परमेश्वर का भय मानता है।" (उत्पत्ति २२:१-१२)।

सो इब्राहीम परमेश्वर का मित्र था क्योंकि वह परमेश्वर पर दृढ़ विश्वास रखता था और परमेश्वर की प्रत्येक आज्ञा को बिना किसी संदेह वा प्रश्न के मानता था। मनुष्य का उद्धार केवल विश्वास पर ही नहीं, परन्तु वास्तव में परमेश्वर की आज्ञाओं को मानने पर निर्भर करता है। कोई मनुष्य विश्वास कर सकता है परन्तु तौभी दन्ड का भागी हो सकता है, यदि उसने परमेश्वर की आज्ञाओं को नहीं माना है। प्रभु यीशु ने इस सिद्धान्त का वर्णन, एक जगह, बड़े ही स्पष्ट रूप से इन शब्दों में कहकर किया ; "जो मुझसे हे प्रभु, हे प्रभु कहता है, उनमें से हर एक स्वर्ग के राज्य में प्रवेश न करेगा, परन्तु वही जो मेरे स्वर्गीय पिता की इच्छा पर चलता है।" (मत्ती ७:२१)।

इसमें कोई संदेह नहीं, जैसा कि पवित्र शास्त्र बताता है, कि इब्राहीम परमेश्वर का मित्र कहलाया, क्योंकि इब्राहीम ने परमेश्वर की प्रतीति की और उसकी आज्ञाओं का पालन किया। और इस कारण परमेश्वर ने उसके विषय में गवाही देकर कहा, कि इससे अब मैं जान गया कि तू परमेश्वर का भय मानता है। सो इब्राहीम परमेश्वर का मित्र था, क्योंकि वह उस पर विश्वास करता था, और उसकी आज्ञाओं को मानता था, और उसका भय मानता था। बाइबल में सभोपदेशक नाम की पुस्तक के अन्तिम अध्याय के अन्तिम पदों में, बुद्धिमान उपदेशक यूं कहता है, "सब कुछ सुना गया ; अन्त की बात यह है कि परमेश्वर का भय मान और उसकी आज्ञाओं का पालन कर ; क्योंकि मनुष्य का सम्पूर्ण कर्त्तव्य यही है। क्योंकि परमेश्वर सब कामों और सब गुप्त बातों का, चाहे वे भली हों या बुरी, न्याय करेगा।"

परन्तु मैं आपसे पूछना चाहता हूं, कि क्या आप परमेश्वर के मित्र हैं या शत्रु ? यदि आप इब्राहीम की तरह परमेश्वर पर दृढ़ विश्वास रखते हैं और उसकी आज्ञाओं पर चलते हैं और उसका भय मानते हैं, केवल तभी आप उसके मित्र कहला सकते हैं, और यदि नहीं, तो आप उसके शत्रु हैं। क्योंकि आप अपना जीवन पाप में बिता रहे हैं, और परमेश्वर पाप से बैर वा घृणा करता है। परन्तु वह आप से प्रेम करता है और आपको पाप के दन्ड से मुक्त कराना चाहता है। इसीलिये उसने अपने पुत्र यीशु मसीह को इस संसार में भेजा ताकि वह सब मनुष्यों के पाप के कारण क्रूस के ऊपर भयानक मृत्यु का दन्ड प्राप्त करे। प्रभु यीशु ने कहा, "जो कुछ मैं तुम्हें आज्ञा देता हूं, यदि उसे करो, तो तुम मेरे मित्र हो।" (यूहन्ना १५:१४)। क्या आप प्रभु यीशु मसीह की आज्ञाओं को मानने के लिये तैयार हैं, ताकि आपको पाप से मुक्ति मिले और आप उसके द्वारा परमेश्वर के मित्र बन जाएं ? उसने कहा, "मार्ग और सच्चाई और जीवन मैं ही हूं ; बिना मेरे द्वारा कोई पिता के पास

नहीं पहुंच सकता।" (यूहन्ना १४:६)। परन्तु, आवश्यक है, कि आप इब्राहीम की तरह, उसमें विश्वास करें, उसकी आज्ञाओं का पालन करें, और उसका भय मानें। प्रभु यीशु ने कहा, "जो विश्वास करे और बपतिस्मा ले उसी का उद्धार होगा।" (मरकुस १६:१६)। क्या आप उसमें विश्वास करते हैं? क्या आप उसकी आज्ञानुसार बपतिस्मा लेने को तैयार हैं? उसने कहा, जो विश्वास करे और बपतिस्मा ले उसी का उद्धार होगा। और उसने कहा, "आकाश और पृथ्वी टल जाएंगे, परन्तु मेरी बातें कभी न टलेंगी।" (मत्ती २४:३५)। और क्या उसने नहीं कहा कि "जो कुछ मैं तुम्हें आज्ञा देता हूं, यदि उसे करो, तो तुम मेरे मित्र हो?" जी हां, आप भी परमेश्वर के मित्र बन सकते हैं, यदि आप उसकी प्रतीति करें और उसकी आज्ञाओं का पालन करें और उसका भय मानें। याद रखें, कि मनुष्य का सम्पूर्ण कर्त्तव्य यही है कि वह परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन करे और उसका भय माने। क्योंकि परमेश्वर एक दिन सब मनुष्यों का न्याय करेगा।

६

परमेश्वर की प्रतिज्ञाएं

हमें अक्सर किसी बात पर कोई संदेह होने के कारण एक प्रतिज्ञा की आवश्यकता पड़ती है। मान लीजिए कोई आपसे कहे, कि आनेवाले सप्ताह में हम आपके यहां एक अमुक वस्तु पहुंचा देगें, परन्तु यदि आपको उस व्यक्ति की बात पर कुछ भी संदेह होगा तो आप उस से प्रतिज्ञा करने को कहेंगे; आप कहेंगे कि वायदा करिये कि आप अवश्य ही वह वस्तु हमें पहुंचा देंगे, और जब वह व्यक्ति आपसे प्रतिज्ञा कर लेता है, तो आपको आश्वासन हो जाता है। सो प्रतिज्ञा का अर्थ है, किसी होनेवाली या आनेवाली बात के लिये एक आश्वासन देना। परन्तु हम लोग सदा ही अपनी प्रतिज्ञाओं को पूरा नहीं कर पाते, क्योंकि हम अपनी प्रतिज्ञा किसी अनुमान या किसी बात के ऊपर निर्भर होकर करते हैं, और हम भविष्य के बारे में कुछ भी निश्चित रूप से नहीं कह सकते। परन्तु एक है, जो अपनी प्रतिज्ञाओं में सदा सच्चा ठहरा है, और क्योंकि वह अपनी पहिली सभी प्रतिज्ञाओं में सदा सच्चा ठहरा है, इसलिये हम निश्चित रूप से जानते हैं कि वह भविष्य में भी अपनी सारी प्रतिज्ञाओं में सच्चा ठहरेगा। और ऐसा इसलिये भी सच्च है क्योंकि वह वर्तमान और भविष्य दोनों का पूरा-पूरा ज्ञान रखता है। और वह है, सर्वशक्तिमान और सर्वज्ञानी परमेश्वर।

आरम्भ से ही परमेश्वर ने मनुष्य से अनेकों प्रतिज्ञाएं की हैं और एक बड़ी ही अद्‌भुत और ध्यान देने योग्य बात यह है कि उसकी सारी प्रतिज्ञाएं ज्यों की त्यों, जिस प्रकार से उसने दी थीं, पूरी हुईं। आपको कदाचित् याद होगा, कि आरम्भ में मनुष्य परमेश्वर की उपस्थिति में चला-फिरा करता था, क्योंकि पाप, मनुष्य और परमेश्वर

को अलग करनेवाली दीवार अभी बीच में नहीं आई थी। परन्तु परमेश्वर ने मनुष्य को एक बात के लिये चेतावनी देकर कहा था, कि जिस दिन मनुष्य परमेश्वर की आज्ञा तोड़ेगा, उसी दिन वह अवश्य मर जाएगा। यहां हम एक आज्ञा और प्रतिज्ञा दोनों देखते हैं। और जब हम परमेश्वर की पुस्तक में मनुष्य के आदि इतिहास के पन्ने पलट-कर देखते हैं, तो हमें मिलता है कि बहुत समय न बीता था जबकि मनुष्य ने अपने स्वभाव से विवश होकर परमेश्वर की आज्ञा को तोड़ डाला। परन्तु जब उन्होंने ऐसा किया, तो परमेश्वर ने भी अपनी प्रतिज्ञा को पूरा किया। परमेश्वर ने आदम और हव्वा को अपनी उपस्थिति से निकाल दिया। सो जिस दिन उन्होने परमेश्वर की आज्ञा तोड़ी, वे उसी दिन परमेश्वर की प्रतिज्ञा अनुसार मर गए, क्योंकि वे परमेश्वर से अलग हो गए। जब किसी मनुष्य की मृत्यु हो जाती है तो उसकी आत्मा उसके शरीर से अलग हो जाती है, सो परमेश्वर से, जोकि अनन्त जीवन का मूल स्रोत है, अलग होकर आदम तथा हव्वा आत्मिक दृष्टिकोण से मर गए और इस प्रकार से परमेश्वर ने अपनी प्रतिज्ञा को पूरा किया। (उत्पत्ति २,३)।

परमेश्वर की एक और प्रतिज्ञा के बारे में हम आगे चलकर यूं पढ़ते हैं, कि हाज़रों वर्ष पूर्व जब पृथ्वी पर मनुष्यों में बुराई बहुत अधिक बढ़ चुकी थी, तो परमेश्वर का मन मनुष्य के विषय में अति खेदित हुआ, और लिखा है, कि परमेश्वर ने मनुष्य को पृथ्वी पर से मिटा डालने का निश्चय किया। परन्तु परमेश्वर के अनुग्रह की दृष्टि नूह पर बनी रही। नूह के बारे में लिखा है, कि वह एक धर्मी पुरुष था, और अपने समय के लोगों में खरा था, और जबकि अन्य लोगों ने पाप के मार्ग पर चलना चुन लिया, नूह परमेश्वर के साथ-साथ ही चलता रहा। सो परमेश्वर ने नूह से प्रतिज्ञा करके कहा, कि मैं पृथ्वी पर एक बहुत बड़ा जल-प्रलय भेजूंगा, जिसके कारण पृथ्वी पर सब प्राणियों का अन्त हो जाएगा। परन्तु नूह को बचाने के लिये परमेश्वर ने उसे आज्ञा देकर

कहा, कि तू एक जहाज़ बनाना, और उसे इस-इस ढंग से बनाना, और तू और तेरा परिवार जल-प्रलय के पूरे समय तक उस जहाज़ में रहना और तुम नाश न होगे, क्योंकि मैंने इस समय के लोगों में से केवल तुझी को धर्मी देखा है। सो मित्रो, परमेश्वर की प्रतिज्ञा को सच जानकर और उसकी आज्ञा को मानकर नूह अपने परिवार समेत उस जहाज़ को बनाने में लग गया जिसकी आज्ञा उसे परमेश्वर ने दी थी। उसने अन्य लोगों को भी परमेश्वर की प्रतिज्ञा के बारे में बताया और उन्हें सलाह दी कि वे अपने पापों से पश्चाताप करें ताकि परमेश्वर उन्हें भी बचा ले, परन्तु किसी ने भी नूह की बात पर विश्वास न किया, और वे सब अपने पापों में चलते रहे। परन्तु परमेश्वर अपनी प्रतिज्ञाओं में सच्चा है। सो हम पढ़ते हैं, कि एक दिन, एकाएक, जल-प्रलय पृथ्वी पर आ गया, और गहरे समुद्र के सब सोते फूट निकले और आकाश के झरोखे खुल गए, और वर्षा चालीस रात और चालीस दिन तक निरन्तर होती रही, और जल तृथ्वी पर एक-सौ-पचास दिन तक प्रबल रहा। और इस तरह से परमेश्वर ने अपनी प्रतिज्ञा को पूरा किया। (उत्पत्ति ६,७)।

परन्तु परमेश्वर ने आज हमसे भी कुछ प्रतिज्ञाएं की हैं, सो आइये उनके बारे में भी देखें। परमेश्वर का वचन हमें बताता है, कि मनुष्यों के लिये एक बार मरना और उसके बाद न्याय का होना नियुक्त है। (इब्रानियों ६:२७)। यहाँ हम केवल यही नहीं देखते कि मनुष्यों के लिये मरना नियुक्त है, परन्तु विशेष बात यह है कि मनुष्यों के लिये 'एक बार', मरना नियुक्त है, अर्थात्, मनुष्य केवल एक ही बार जन्म लेता है, क्योंकि उसके लिये एक बार मरना नियुक्त है। और एक बार मरने के बाद उसके लिये दोबारा जन्म नहीं, परन्तु न्याय का होना नियुक्त है, इसलिये मनुष्य को इस ओर विशेष ध्यान देना चाहिए कि यदि आज या भविष्य में किसी भी समय उसकी मृत्यु हो जाती है तो क्या वह परमेश्वर के न्याय आसन के सामने पहुंचने के लिये तैयार

है ? किस आशा के साथ वह वहाँ पहुँचेगा ? अनन्त जीवन पाने की आशा में या अनन्त विनाश पाने के लिये ? मनुष्य को मरने से कोई भी वस्तु नहीं बचा सकती, क्योंकि यह परमेश्वर की ओर से नियुक्त है और कोई भी ऐसा मार्ग नहीं है जिसके द्वारा मनुष्य परमेश्वर के न्याय से बच सकता है, क्योंकि यह परमेश्वर की प्रतिज्ञा है। इसलिये लिखा है, "अवश्य है कि हम सबका हाल मसीह के न्याय आसन के सामने खुल जाए, कि हर एक व्यक्ति अपने-अपने भले-बुरे कामों का बदला जो उसने देह के द्वारा किए हों, पाए।" (२ कुरिन्थियों ५:१०)। न्याय के दिन प्रभु के सामने केवल दो ही प्रकार के लोग होंगे, एक ओर धर्मी और दूसरी ओर अधर्मी। सो प्रभु यीशु ने अधर्मियों की ओर संकेत करके, प्रतिज्ञा करके कहा, "और यह अनन्त दण्ड भोगेंगे परन्तु धर्मी अनन्त जीवन में प्रवेश करेंगे।" (मत्ती २५:४६)। और याद रखें, कि प्रभु अपनी प्रतिज्ञा में सच्चा है।

जब वह इस पृथ्वी पर था, तो उसने लोगों से एक और प्रतिज्ञा करके यूं कहा, "इस से अचम्भा मत करो, क्योंकि वह समय आता है, कि जितने कब्रों में हैं, उसका शब्द सुनकर निकलेंगे। जिन्होंने भलाई की है वे जीवन के पुनरुत्थान के लिये जी उठेंगे और जिन्होंने बुराई की है वे दन्ड के पुनरुत्थान के लिये जी उठेंगे।" (यूहन्ना ५:२८,२९)। यहां इसका अर्थ यह कदापी नहीं है कि न्याय के दिन केवल वही लोग जी उठेंगे, जिन्हें मृत्यु के बाद कब्रों के भीतर गाड़ा गया हो, परन्तु यहां क्योंकि प्रभु विशेष रूप से ऐसे लोगों से बातें कर रहा था, जो अपने मुर्दों को गाड़ा करते थे, इसलिये उसने कहा कि जितने कब्रों में हैं, वे सब जी उठेंगे। किन्तु, वास्तव में, जो बात प्रभु बताना चाहता था और जिसकी उसने प्रतिज्ञा की, वह यह है कि न्याय के दिन सब जी उठेंगे और इस तरह से न्याय का सामना सबको करना पड़ेगा। और वह जिसने यह प्रतिज्ञा की है अपनी प्रतिज्ञाओं में सच्चा है।

जब वह अपनी इच्छा पूर्ण करके अपने पिता के पास वापस स्वर्ग

में जा रहा था, तो उसने अपने अनुयायीयों से प्रतिज्ञा करके यूं कहा, "तुम्हारा मन व्याकुल न हो, तुम परमेश्वर पर विश्वास रखते हो, मुझ पर भी विश्वास रखो। मेरे पिता के घर में बहुत से रहने के स्थान हैं, यदि न होते, तो मैं तुमसे कह देता, क्योंकि मैं तुम्हारे लिये जगह तैयार करने जाता हूँ। और यदि मैं जाकर तुम्हारे लिये जगह तैयार करूं, तो फिर आकर तुम्हें अपने यहां ले जाऊंगा, कि जहां मैं रहूं वहाँ तुम भी रहो।" (यूहन्ना १४ : १-३)। सो प्रभु यीशु ने प्रतिज्ञा की है कि वह फिर वापस आएगा। परन्तु वह कब वापस आएगा ? इसका ज्ञान किसी भी मनुष्य को नहीं है, और न ही प्रभु ने हमें बताया है। (मत्ती २४ : ३६,४४)। इसके अतिरिक्त, जब उसके अनुयायीयों ने उस से जानना चाहा कि उसका वापस आना कब होगा, तब उसने कहा कि जैसे बिजली पूरब से निकलकर पश्चिम तक चमकती है, अर्थात् किसी भी क्षण और एकदम, वैसे ही उसका आना भी होगा। और उसने कहा, कि जैसे नूह के दिनों में हुआ, कि सब लोग प्रतिदिन की तरह अपने-अपने कामों में व्यस्त थे, और जब तक जल-प्रलय आकर उन सबको बहा न ले गया, तब तक उनको कुछ भी मालूम न पड़ा, वैसे ही उसका आना भी होगा। उसने कहा, इसलिये जागते रहो, सचेत रहो, क्योंकि तुम नहीं जानते कि तुम्हारा प्रभु किस दिन आएगा। (मत्ती २४:२७,३७-३९,४२)।

परन्तु वह केवल इसीलिये वापस नहीं आएगा कि अपने अनुयायीयों को वापस आकर अपने साथ ले जाए ताकि वे उसके साथ स्वर्ग में अनन्त जीवन पाएं, परन्तु उसके आने का एक और भी उद्देश्य होगा और उसके इस उद्देश्य का वर्णन पवित्र शास्त्र में इन शब्दों में हुआ है, "उस समय जबकि प्रभु यीशु अपने सामर्थी दूतों के साथ, धधकती हुई आग में स्वर्ग से प्रगट होगा। और जो परमेश्वर को नहीं पहिचानते और हमारे प्रभु यीशु के सुसमाचार को नहीं मानते, उनसे पलटा लेगा। वे प्रभु के सामने से, और उसकी शक्ति के तेज से दूर होकर अनन्त विनाश का दण्ड पाएंगे।" (२ थिस्सलुनिकियों १:७-९)।

सो लिखा है, "इसलिये परमेश्वर अज्ञानता के समयों से आनाकानी करके, अब हर जगह सब मनुष्यों को मन फिराने की आज्ञा देता है, क्योंकि उसने एक दिन ठहराया है, जिसमें वह उस मनुष्य के द्वारा धर्म से जगत का न्याय करेगा, जिसे उसने ठहराया है और उसे मरे हुओं में से जिलाकर, यह बात सब पर प्रमाणित कर दी है।" (प्रेरितों १७:३०,३१)।

क्या आप परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं पर विश्बास करते हैं या आपका दृष्टिकोण उन लोगों की तरह है जो नूह के दिनों में रहते थे, जिन्होंने परमेश्वर की प्रतिज्ञा को सच न माना और फलस्वरूप नाश हुए? याद रखें, परमेश्वर का वचन कहता है, "धोखा न खाओ, परमेश्वर ठट्ठों में नहीं उड़ाया जाता, क्योंकि मनुष्य जो कुछ बोता है, वही काटेगा।" (गलतियों ६:७)। आज जो भी निश्चय आप करेंगे, न्याय के दिन उसी के अनुसार आप फल पाएँगे। क्या वह अनन्त जीवन होगा? या अनन्त विनाश? प्रभु आपको अनन्त जीवन देना चाहता है। उसने प्रतिज्ञा करके कहा है, "जो विश्वास करे और बपतिस्मा ले उसी का उद्धार होगा, परन्तु जो विश्वास न करेगा वह दोषी ठहराया जाएगा।" (मरकुस १६:१६)। क्या आप प्रभु की आज्ञा मानकर अपनी आत्मा का उद्धार प्राप्त करना न चाहेंगे? और उसने यह भी प्रतिज्ञा की है, जो मनुष्य उसके प्रति अन्त तक विश्वासी बना रहेगा, उसे वह जीवन का मुकुट देगा। (प्रकाशित वाक्य २:१०)। क्या आप कभी न मुरझानेवाले अनन्त जीवन के उस मुकुट को प्राप्त करना न चाहेंगे? प्रभु की प्रतिज्ञाओं में विश्वास कीजिए, और उसकी आज्ञाओं का पालन कीजिए, क्योंकि वह अपनी प्रतिज्ञाओं में सच्चा है।

७

विश्वास

संसार में मनुष्य की अनेकों आवश्यकताएं हैं, परन्तु वास्तव में मनुष्य की सबसे बड़ी आवश्यकता पाप से छुटकारा, अर्थात् उद्धार प्राप्त करना है। और उद्धार प्राप्त करने के लिये यह आवश्यक है कि मनुष्य परमेश्वर में विश्वास करे। वास्तव में विश्वास एक बहुत ही महत्त्वपूर्ण सिद्धान्त है। यदि आप विश्वास के विशाल महत्त्व को देखना चाहते हैं, तो मेरी इच्छा है कि आप मेरे साथ बाइबल में से इब्रानियों नाम की पत्री के ग्यारह अध्याय में से इन बातों को ध्यान से देखें।

सबसे पहिले, लेखक हमें विश्वास की परिभाषा बताकर कहता है, "अब विश्वास आशा की हुई वस्तुओं का निश्चय और अनदेखी वस्तुओं का प्रमाण है।" अर्थात्, जिन वस्तुओं की हमें आशा होती है, इस से पूर्व हमारा विश्वास होता है कि वे वस्तुएं हैं, सो इस प्रकार से विश्वास आशा की हुई वस्तुओं का निश्चय है। और फिर वह बताता है, कि विश्वास अनदेखी वस्तुओं का प्रमाण है। अर्थात्, बहुतेरी ऐसी वस्तुएं हैं जिन्हें हमने स्वयं नहीं देखा है, परन्तु हमारा विश्वास है कि वे वस्तुएं हैं। उदाहरणस्वरूप, संसार में अनेकों ऐसे देश व स्थान हैं जिन्हें हमने स्वयं कभी नहीं देखा है, परन्तु हमारा पूर्ण विश्वास है कि वे देश और स्थान संसार में विद्यमान हैं। इसी प्रकार से, हमने स्वर्ग व नरक को भी स्वयं नहीं देखा है, परन्तु हमारा पूरा विश्वास है कि स्वर्ग व नरक हैं। सो इस तरह से, विश्वास अनदेखी वस्तुओं का प्रमाण है। परन्तु अपनी बात को जारी रखते हुए, बाइबल का लेखक हमें आगे बताता है :

"विश्वास ही से हम जान जाते हैं, कि सारी सृष्टि की रचना परमेश्वर के वचन के द्वारा हुई है। यह नहीं, कि जो कुछ देखने में आता है, वह देखी हुई वस्तुओं से बना है।" और फिर वह बताता है, "विश्वास ही से हाबील ने कैन से उत्तम बलिदान परमेश्वर के लिये चढ़ाया; और उसी के द्वारा उसके धर्मी होने की गवाही भी दी गई, क्योंकि परमेश्वर ने उसकी भेटों के विषय में गवाही दी; और उसी के द्वारा वह मरने पर भी अब तक बातें करता है। विश्वास ही से हनोक उठा लिया गया, कि मृत्यु को न देखे, और उसका पता नहीं मिला; क्योंकि परमेश्वर ने उसे उठा लिया था, और उसके उठा लिये जाने से पहिले उसकी यह गवाही दी गई थी, कि उसने परमेश्वर को प्रसन्न किया है। और विश्वास बिना उसे प्रसन्न करना अनहोना है, क्योंकि परमेश्वर के पास आनेवाले को विश्वास करना चाहिए, कि वह है; और अपने खोजनेवालों को प्रतिफल देता है। विश्वास ही से नूह ने उन बातों के विषय में जो उस समय दिखाई न पड़ती थीं, चितौनी पाकर भक्ति के साथ अपने घराने के बचाव के लिये जहाज़ बनाया, और उसके द्वारा उसने संसार को दोषी ठहराया; और उस धर्म का वारिस हुआ, जो विश्वास से होता है। विश्वास ही से इब्राहीम जब बुलाया गया तो आज्ञा मानकर ऐसी जगह निकल गया जिसे मीरास में लेनेवाला था, और यह न जानता था, कि मैं किधर जाता हूं; तौ भी निकल गया। विश्वास ही से उसने प्रतिज्ञा किए हुए देश में जैसे पराए देश में परदेशी रहकर इसहाक और याकूब समेत, जो उसके साथ उसी प्रतिज्ञा के वारिस थे, तम्बुओं में वास किया। क्योंकि वह उस स्थिर नेव वाले नगर की बाट जोहता था, जिसका रचनेवाला और बनानेवाला परमेश्वर है। विश्वास ही से सारा ने आप बूढ़ी होने पर भी गर्भ धारण करने की सामर्थ पाई; क्योंकि उसने प्रतिज्ञा करनेवाले को सच्चा जाना था इस कारण एक ही जन से जो मरा हुआ सा था, आकाश के तारों और समुद्र के तीर के बालू की नाईं, अनगिनित वंश उत्पन्न हुआ।

विश्वास ही से इब्राहीम ने, परखे जाने के समय में, इसहाक को बलिदान चढ़ाया, और जिसने प्रतिज्ञाओं को सच माना था, और जिस से यह कहा गया था, कि इसहाक से तेरा वंश कहलाएगा ; वह अपने एकलौते को चढ़ाने लगा। क्योंकि उसने विचार किया, कि परमेश्वर सामर्थी है, कि मरे हुओं में से जिलाए, सो उन्हीं में से दृष्टान्त की रीति पर वह उसे फिर मिला। विश्वास ही से इसहाक ने याकूब और एसाव को आनेवाली बातों के विषय में आशीष दी। विश्वास ही से याकूब ने मरते समय यूसुफ़ के दोनों पुत्रों में से एक-एक को अशीष दी, और अपनी लाठी के सिरे पर सहारा लेकर दन्डवत किया। विश्वास ही से यूसुफ़ ने जब वह मरने पर था, तो इस्राएल की सन्तान के निकल जाने की चर्चा की और अपनी हड्डियों के विषय में आज्ञा दी। विश्वास ही से मूसा के माता-पिता ने उसको, उत्पन्न होने के बाद तीन महीने तक छिपा रखा ; क्योंकि उन्होंने देखा, कि बालक सुन्दर है, और वे राजा की आज्ञा से न डरे। विश्वास ही से मूसा ने सयाना होकर फ़िरौन की बेटी का पुत्र कहलाने से इन्कार किया। इसलिए कि उसे पाप में थोड़े दिन के सुख भोगने से परमेश्वर के लोगों के साथ दुख भोगना और उत्तम लगा। और मसीह के कारण निन्दित होने को मिसर के भन्डार से बड़ा धन समझा, क्योंकि उसकी आंखें फल पाने की ओर लगी थीं। विश्वास ही से राजा के क्रोध से न डरकर उसने मिस्र को छोड़ दिया, क्योंकि वह अनदेखे को मानो देखता हुआ दृढ़ रहा। विश्वास ही से उसने फ़सह और लोहू छिड़कने की विधि मानी, कि पहिलौठों का नाश करनेवाला इस्राएलियों पर हाथ न डाले। विश्वास ही से वे लाल समुद्र के ऐसे पार उतर गए, जैसे सूखी भूमि पर से ; और जब मिस्रियों ने वैसा ही करना चाहा, तो सब डूब मरे। विश्वास ही से यरीहो की शहरपनाह, जब वे सात दिन तक उसका चक्कर लगा चुके तो वह गिर पड़ी……"

बाइबल में से ये जो कथन हमने अभी पढ़ा है, इसमें हम देखते हैं कि विश्वास शब्द का उल्लेख लगभग बीस बार हुआ है। और वे सब लोग जिनका वर्णन यहां हुआ है परमेश्वर में विश्वास के द्वारा ही धर्मी ठहरे। परन्तु एक बड़ी ही विशेष बात यहां हम यह देखते हैं कि उन सब का विश्वास केवल एक मानसिक विश्वास नहीं था। अर्थात्, उनका विश्वास इस प्रकार का नहीं था कि उन्होंने अपने मन में केवल विचार किया हो कि हमारा पूर्ण विश्वास परमेश्वर पर है, और स्वयं कुछ न किया हो। परन्तु इसके विपरीत, हम देखते हैं, कि उन सबका विश्वास कामों के साथ था, अर्थात्, उन्होंने विश्वास से परमेश्वर की हरएक आज्ञा का पालन किया। उदाहरण के रूप से, अन्त में हमने पढ़ा, कि यरीहो की शहरपनाह जब वे सात दिन तक उसका चक्कर लगा चुके तो वह गिर पड़ी। सो यह कैसे हुआ ? क्यों उन्होंने सात दिन तक उस विशाल शहरपनाह के चारों ओर चक्कर लगाए ? और किस प्रकार से शहर-पनाह की वे विशाल दीवारें केवल उनके चारों ओर घूमने के कारण ही स्वयं गिर पड़ीं ? बाइबल में यहोशु नाम की पुस्तक के छठे अध्याय में हम पढ़ते हैं, कि सर्वशक्तिमान परमेश्वर ने उन लोगों को ऐसा करने की आज्ञा दी थी, और उसने उनसे प्रतिज्ञा करके कहा था, कि यदि वे उसकी आज्ञा मानेंगे तो वह शहरपनाह स्वयं उनके लिये गिर जाएगी। परन्तु, मान लीजिए, यदि वे लोग परमेश्वर की आज्ञा को व्यर्थ जानकर उस शहरपनाह के चक्कर न लगाते, और कहते कि हमारा परमेश्वर में पूर्ण विश्वास है कि वह उस शहरपनाह को अवश्य ही हमारे लिये गिरा देगा, तो क्या उनके केवल इस विश्वास के द्वारा ही वह विशाल शहर-पनाह गिर जाती ?

सो आप देख सकते हैं, कि जिस विश्वास के बारे में बाइबल बताती है, वह केवल एक मानसिक विश्वास नहीं है, परन्तु वह एक जीवित विश्वास है, जो कामों के द्वारा सिद्ध होता है। यहां कामों से

हमारा अभिप्राय हमारे अपने काम नहीं, परन्तु परमेश्वर की आज्ञाओं से है। बाइबल में एक और स्थान पर हम पढ़ते हैं कि "यदि कोई कहे कि मुझे विश्वास है पर वह कर्म न करता हो, तो उस से क्या लाभ ? क्या ऐसा विश्वास कभी उसका उद्धार कर सकता है ?" फिर, "तुझे विश्वास है कि एक ही परमेश्वर है : तू अच्छा करता है, दुष्टात्मा भी विश्वास रखते और थरथराते हैं। पर हे निकम्मे मनुष्य क्या तू यह भी नहीं जानता, कि कर्म बिना विश्वास व्यर्थ है ?" और, "निदान जैसे देह आत्मा बिना मरी हुई है वैसा ही विश्वास भी कर्म बिना मरा हुआ है।" (याकूब २:१४, १९-२०,२६)।

आज संसार में एक बड़ी ही प्रचलित शिक्षा यह है, कि यदि कोई उद्धार पाना चाहे तो वह मानसिक रूप से, अपने मन में प्रभु यीशु मसीह को अपना व्यक्तिगत उद्धारकर्त्ता मान ले, और बस उसका उद्धार हो जाएगा। परन्तु बाइबल हमें इस प्रकार के विश्वास की कदापि शिक्षा नहीं देती। बाइबल में जिस विश्वास के बारे में हम पढ़ते हैं वह आज्ञा पालन के बाद ही कार्यशील या सिद्ध होता है। क्योंकि मानसिक विश्वास या केवल मन में स्वीकार कर लेने का अर्थ है कि वह विश्वास मरा हुआ है, ऐसा विश्वास व्यर्थ है, और वह कभी भी मनुष्य का उद्धार नहीं कर सकता। एक जगह बाइबल में हम पढ़ते हैं, "क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे, वह नाश न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए।" (यूहन्ना ३:१६)। सो यहां हम देखते हैं कि जो मनुष्य यीशु मसीह में विश्वास करेगा, वह अनन्त जीवन पाएगा। परन्तु कैसा विश्वास ? क्या केवल एक मानसिक विश्वास ? अर्थात्, मैं अपने मन में कह दूं, कि मैं प्रभु यीशु को अपना उद्धारकर्त्ता स्वीकार करता हूं। जी नहीं, कदापि नहीं। प्रभु यीशु ने कहा, "जब तुम मेरा कहना नहीं मानते, तो क्यों मुझे हे प्रभु, हे प्रभु, कहते हो।" (लूका ६:४६)। सो बाइबल का विश्वास केवल एक मानसिक विश्वास नहीं, परन्तु आज्ञा-पालन का विश्वास है। सो प्रभु यीशु ने कहा, "जो विश्वास करे और

बपतिस्मा ले उसी का उद्धार होगा।" (मरकुस १६:१६)। एकदिन जब विश्वासियों की एक बड़ी भीड़ ने यीशु के प्रेरितों से पूछा, कि हम उद्धार पाने के लिये क्या करें ? तो उनमें से एक प्रेरित ने उनसे कहा, "मन फिराओ, और तुम में से हर एक अपने-अपने पापों की क्षमा के लिये यीशु मसीह के नाम से बपतिस्मा ले।" (प्रेरितों २:३८)।

"सो विश्वास सुनने से, और सुनना मसीह के वचन से होता है।" (रोमियों १०:१७)। यदि आप यीशु मसीह में विश्वास करते हैं, तो अपने पापों से मन फिराएं, और अपने पापों की क्षमा के लिये उसकी आज्ञानुसार बपतिस्मा लें। यदि आप ऐसा करेंगे तो वह आपका उद्धार करेगा और आपको अपनी उस कलीसिया में मिलाएगा जिसका वह उद्धारकर्त्ता है। (प्रेरितों २:४७ ; इफिसियों ५:२३)।

८

पश्चात्ताप

मनुष्य के उद्धार में विश्वास का बहुत बड़ा महत्त्व है। मनुष्य को विश्वास करना चाहिए कि परमेश्वर उसका उद्धार कर सकता है। और पवित्रशास्त्र के अनुसार, "विश्वास बिना उसे (**अर्थात् परमेश्वर को**) प्रसन्न करना अनहोना है, क्योंकि परमेश्वर के पास आनेवाले को विश्वास करना चाहिए, कि वह है; और अपने खोजनेवालों को प्रतिफल देता है।" (इब्रानियों ११:६)। हम यह भी पढ़ते हैं कि "परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे, वह नाश न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए।" (यूहन्ना ३:१६)।

किन्तु, जिस प्रकार से उद्धार पाने के लिये मनुष्य को विश्वास करने की आवश्यकता है, वैसे ही यह भी आवश्यक है कि मनुष्य उद्धार पाने के लिये अपना मन फिराए। क्योंकि प्रभु यीशु ने कहा, यदि तुम मन न फिराओगे तो तुम सब नाश होगे। (लूका १३:३)। और, एक और स्थान पर हम बाइबल में पढ़ते हैं, कि प्रेरित पौलुस लोगों को चेतावनी देकर कहता है, "इसलिये परमेश्वर अज्ञानता के समयों से आनाकानी करके, अब हर जगह सब मनुष्यों को मन फिराने की आज्ञा देता है। क्योंकि उसने एक दिन ठहराया है, जिसमें वह उस मनुष्य के द्वारा धर्म से जगत का न्याय करेगा, जिसे उसने ठहराया है और उसे मरे हुओं में से जिलाकर, यह बात सब पर प्रमाणित कर दी है।" (प्रेरितों १७:३०, ३१)। वास्तव में, परमेश्वर चाहता है कि न्याय के उस महान् दिन के आने से पहिले अधिक से अधिक लोग अपना मन

फिरा लें, ताकि वे स्वर्ग में प्रवेश करें, क्योंकि उद्धार केवल उन्हीं का होगा जो अपना मन फिराएंगे। किन्तु प्रभु अपनी प्रतिज्ञा में सच्चा है, वह एक दिन अवश्य ही आनेवाला है। क्योंकि लिखा है, "प्रभु अपनी प्रतिज्ञा में देर नहीं करता, जैसी देर कितने लोग समझते हैं; पर तुम्हारे विषय में धीरज धरता है, और नहीं चाहता, कि कोई नाश हो; वरन यह कि सबको मन फिराव का अवसर मिले।" (२ पतरस ३:९)।

सो यहां से आप देख सकते हैं कि यह एक प्रमुख आज्ञा है कि सब मनुष्य पाप से अपना मन फिराएं। वास्तव में प्रभु यीशु मसीह के इस संसार में आने का एक यही विशेष उद्देश्य था। सो पवित्र शास्त्र हमें बताता है, कि अपने प्रचार के आरम्भ में यीशु ने लोगों से यही कहना आरम्भ किया कि "समय पूरा हुआ है, और परमेश्वर का राज्य निकट आ गया है; मन फिराओ और सुसमाचार पर विश्वास करो।" (मरकुस १:१५)। और फिर आगे चलकर स्वर्ग से पृथ्वी पर अपने आने के उद्देश्य को प्रगट करके उसने कहा, मैं पापियों को मन फिराने के लिये बुलाने आया हूं। (लूका ५:३२)। और फिर अपनी मृत्यु के तीसरे दिन जी उठने के बाद और स्वर्ग में वापस जाने से पहिले, उसने अपने चेलों को इकट्ठा करके उन्हें यह अन्तिम आदेश देकर कहा कि "यों लिखा है; कि मसीह दुख उठाएगा, और तीसरे दिन मरे हुओं में से जी उठेगा। और यरूशलेम से लेकर सब जातियों में मन फिराव का और पापों की क्षमा का प्रचार, उसी के नाम से किया जाएगा। तुम इन सब बातों के गवाह हो। और देखो, जिसकी प्रतिज्ञा मेरे पिता ने की है, मैं उसको तुम पर उतारूंगा और जब तक स्वर्ग से सामर्थ न पाओ तब तक तुम इसी नगर में ठहरे रहो। (लूका २४:४६-४९)।

सो हम आगे पढ़ते हैं, कि प्रभु के आदेश के अनुसार, उसके चेले यरूशलेम में ही टिके रहे। और इस घटना को हुए अभी दस दिन ही

बीते थे, कि प्रभु ने अपनी प्रतिज्ञा अनुसार अपने चेलों पर पवित्र आत्मा को उतारा। लिखा है, एकाएक वे प्रेरित पवित्रात्मा से भरपूर हो गए और वे प्रभु के सुसमाचार का प्रचार करने लगे। जब लोगों ने इस आश्चर्यजनक घटना को देखा तो वे बड़े चकित हुए, और हम पढ़ते हैं कि हज़ारों लोगों की भीड़ लग गई। प्रेरितों ने उन्हें उद्धारकर्त्ता यीशु का संदेश सुनाया, और उन्हें बताया कि वे अपने पापों में नाश हो रहे हैं परन्तु यदि वे प्रभु यीशु में विश्वास करेंगे तो वह उनका उद्धार कर सकता है। सो लिखा है, "तब सुननेवालों के हृदय छिद गए, और वे पतरस और शेष प्रेरितों से पूछने लगे, कि हे भाइयो हम क्या करें?" और "पतरस ने उनसे कहा, मन फिराओ, और तुम में से हर एक अपने अपने पापों की क्षमा के लिये यीशु मसीह के नाम से बपतिस्मा ले; तो तुम पवित्र आत्मा का दान पाओगे।" (प्रेरितों २:३७-३८)।

तो इस तरह से हम देखते हैं कि प्रभु के आदेश और प्रतिज्ञा के अनुसार, मन फिराव और पापों की क्षमा का प्रचार सबसे पहिले यरूशलेम नगर में किया गया, और फिर इसके बाद प्रभु के चेले जहां कहीं भी गए उन्होंने लोगों को मन फिराव की विशेष आवश्यकता को बताया। पाप से मन फिराना बड़ा ही आवश्यक है। क्योंकि वास्तव में वह पाप ही था जिसके कारण आरम्भ में आदम और हव्वा को अदन की बाटिका वा परमेश्वर की उपस्थिति में से निकलना पड़ा, पाप ही के कारण नूह के दिनों में लाखों लोगों को जलप्रलय के सर्वनाश का सामना करना पड़ा, पाप ही के कारण सदोम आदि नगरों का विनाश हुआ, और सबसे बड़ी बात यह है कि पाप के ही कारण परमेश्वर के पुत्र को स्वर्ग छोड़कर इस पृथ्वी पर आना पड़ा। पाप ही के कारण उसका वह अपमान और निरादर हुआ; वह थप्पड़, घूंसे, और कोड़े जिन्होंने उसके शरीर को छलनी कर दिया था, वह सब मेरे और आप के पापों का कर्ज़ा था। यशायाह कहता है, "निश्चय उसने हमारे रोगों

को सह लिया और हमारे ही दुखों को उठा लिया ; तो भी हमने उसे परमेश्वर का मारा-कूटा और दुर्दशा में पड़ा हुआ समझा। परन्तु वह हमारे ही अपराधों के कारण घायल किया गया, वह हमारे अधर्म के कामों के हेतु कुचला गया ; हमारी ही शान्ति के लिये उस पर ताड़ना पड़ी, कि उसके कोड़े खाने से हम चंगे हो जाएं।" (यशायाह ५३:४, ५)।

पाप मनुष्य का सबसे बड़ा दुश्मन है। यदि आज मनुष्य को तरह तरह की अनेकों कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है, तो इसका कारण और कुछ नहीं केवल पाप है। सैंकड़ों वर्ष पूर्व बुद्धिमान उपदेशक द्वारा कहे ये शब्द आज भी उतने ही शक्तिशाली हैं, "जाति की बढ़ती धर्म ही से होती है, परन्तु पाप से देश के लोगों का अपमान होता है।" (नीतिवचन १४:३४)। परन्तु केवल यही नहीं, पाप मनुष्य की आत्मा को आग की उस भंयकर झील की ओर खींचे लिये जा रहा है, जो कभी बुझने की नहीं। इसलिये, परमेश्वर अब हर जगह सब मनुष्यों को मन फिराने की आज्ञा देता है। (प्रेरितों १७:३०)।

परन्तु मन फिराने का अर्थ क्या है? मन फिराने का अर्थ यह कदापि नहीं है कि कोई किसी अनुचित काम को करने के बाद उसके बारे में केवल दुखी हो या शोक करे, परन्तु वास्तव में, परमेश्वर भक्ति का शोक ऐसा पश्चात्ताप उत्पन्न करता है जिसका परिणाम उद्धार है। (२ कुरिन्थियों ७:१०)। मन फिराव के विषय में नए नियम में हमें एक बड़ा ही सुन्दर उदाहरण मिलता है। स्वयं प्रभु यीशु ने यह उदाहरण देकर कहा, "किसी मनुष्य के दो पुत्र थे। उनमें से छुटके ने पिता से कहा, कि हे पिता संपत्ति में से जो भाग मेरा हो, वह मुझे दे दीजिए। उसने उनको अपनी संपत्ति बांट दी। और बहुत दिन न बीते थे कि छुटका पुत्र सब कुछ इकट्ठा करके एक दूर देश को चला गया और वहां कुकर्म में अपनी संपत्ति उड़ा दी। जब वह सब कुछ खर्च कर चुका,

तो उस देश में बड़ा अकाल पड़ा, और वह कंगाल हो गया वह उस देश के निवासियों में से एक के यहां जा पड़ा : उसने उसे अपने खेतों में सूअर चराने के लिये भेजा । और वह चाहता था, कि उन फलियों से जिन्हें सूअर खाते थे । अपना पेट भरे ; और उसे कोई कुछ नहीं देता था । जब वह अपने आपे में आया, तब कहने लगा, कि मेरे पिता के कितने ही मजदूरों को भोजन से अधिक रोटी मिलती है, और मैं यहां भूखा मर रहा हूं ।" सो उसने अपन मन में निश्चय करके कहा, "मैं अब उठकर अपने पिता के पास जाऊंगा और उस से कहूंगा कि पिता जी मैं ने स्वर्ग के विरोध में और तेरी दृष्टि में पाप किया है । अब इस योग्य नहीं रहा कि तेरा पुत्र कहलाऊं, मुझे अपने एक मजदूर की नाईं रख ले । तब वह उठकर, अपने पिता के पास चला : वह अभी दूर ही था, कि उसके पिता ने उसे देखकर तरस खाया, और दौड़कर उसे गले लगाया, और बहुत चूमा । पुत्र ने उस से कहा ; पिता जी ; मैंने स्वर्ग के विरोध में और तेरी दृष्टि में पाप किया है ; और अब इस योग्य नहीं रहा कि तेरा पुत्र कहलाऊँ । परन्तु पिता ने अपने दासों से कहा ; झट अच्छे से अच्छा वस्त्र निकालकर उसे पहिनाओ, और उसके हाथ में अंगूठी और पांवों में जूतियां पहिनाओ ।" (लूका १५:११-२२) ।

सो इस तरह से वह मनुष्य जब अपने पिता का विरोध करके अपनी इच्छा से एक दूर देश में चला गया, और अपने जीवन के कुछ आनन्दमय दिन बिताने के बाद, जब वह एक भिखारी के समान बन गया, और भूखों मरने लगा, और यहां तक कि उसकी दशा एक पशु के समान हो गई, तो उसे अपने पिता और उसके घर का ध्यान आया, और उसने अपने ऊपर दृष्टि डालकर देखा कि वह कितना नीचे जा चुका है कि आज उसके वस्त्र चिथड़ों के समान हो गए हैं और उसे पशुओं का सा भोजन खाना पड़ रहा है । तब उसने निश्चय किया कि मैं अपना मन फिराऊंगा, मैं अब यहां से उठकर अपने पिता के पास वापस जाऊंगा । सो वह उस देश को छोड़कर, और उस नगर को छोड़कर, और

मनुष्य को छोड़कर जिसने उसे अपना दास बनाकर रखा था, वहां से चल पड़ा। यह वास्तव में मन फिराव है।

परन्तु मन फिराव की आवश्यकता को मनुष्य केवल तभी अनुभव करता है जब उसे अपनी स्थिति का अनुभव होता है। क्या आप जानते हैं, कि यदि आप मन न फिराएंगे तो आप अपने पापों में ही मरेंगे ? (लूका १३:३)। और कोई भी मनुष्य जो अपने पापों में ही मर जाता है उसे फिर मन फिराव का अवसर नहीं मिलता। क्योंकि मनुष्यों के लिये एक बार मरना और फिर न्याय का होना परमेश्वर की ओर से नियुक्त है। (इब्रानियों ९:२७)। आपको चाहिए कि आप यीशु मसीह में विश्वास करें और अपने पापों से मन फिराएं और अपने पापों की क्षमा के लिये बपतिस्मा लें। (मरकुस १६ : १६ ; प्रेरितों २:३८)।

क्योंकि "परमेश्वर अज्ञानता के समयों से आनाकानी करके, अब हर जगह सब मनुष्यों को मन फिराने की आज्ञा देता है। क्योंकि उस ने एक दिन ठहराया है, जिसमें वह उस मनुष्य के द्वारा धर्म से जगत का न्याय करेगा, जिसे उसने ठहराया है और उसे मरे हुओं में से जिलाकर, यह बात सब पर प्रमाणित कर दी है।" (प्रेरितों १७:३०, ३१)।

९

पवित्रात्मा और बपतिस्मा

आप में से कुछ लोगों को कदाचित् यह जानकर आश्चर्य होगा, कि बाइबल में हम छः प्रकार के बपतिस्मों के बारे में पढ़ते हैं। बपतिस्मा शब्द यूनानी भाषा के बैपटिज्डो शब्द से लिया गया है, जिसका अर्थ है गाड़े जाना या दफ़न करना या किसी वस्तु के भीतर जाना। परन्तु आज केवल एक ही बपतिस्मा है, क्योंकि इफिसियों ४:५ में हम पढ़ते हैं कि "एक ही बपतिस्मा है।" यह एक बपतिस्मा, वह बपतिस्मा है जिसकी आज्ञा प्रभु यीशु ने दी, और यह बपतिस्मा केवल विश्वासियों को उद्धार पाने के लिये लेना चाहिए। (मरकुस १६:१६)। प्रभु यीशु की आज्ञानुसार, जो मनुष्य उसमें विश्वास करता है, उसे पिता और पुत्र और पवित्रातमा के नाम से बपतिस्मा लेना चाहिए। (मत्ती २८:१९)। प्रभु यीशु की आज्ञा पालन करने के लिये मनुष्य बपतिस्मे के द्वारा जल के भीतर गाड़ा जाता है।

इस बात का एक उदाहरण हमें प्रेरितों के काम की पुस्तक के आठ अध्याय में मिलता है। यहां हम पढ़ते हैं, कि प्रचारक फिलिप्पुस ने खोजे को यीशु मसीह का सुसमाचार सुनाया। निःसंदेह, उसने उसे बताया होगा, कि यीशु को परमेश्वर ने संसार में लोगों का उद्धार करने को भेजा ; उसने क्या-क्या शिक्षाएं दी; किस प्रकार से वह मारा गया, और फिर तीसरे दिन जी उठा ; और फिर चालीस दिन तक वह इस पृथ्वी पर रहा और अपने चेलों पर प्रगट होता रहा ; और फिर, अन्त में किस तरह से वह अपने चेलों को एक स्थान पर ले गया और स्वर्ग में वापस जाने से पहिले, उसने उन्हें आज्ञा देकर यूं कहा, "तुम सारे जगत

में जाकर सारी सृष्टि के लोगों को सुसमाचार प्रचार करो। जो विश्वास करे और बपतिस्मा ले उसी का उद्धार होगा, परन्तु जो विश्वास न करेगा वह दोषी ठहराया जाएगा।" (मरकुस १६:१५,१६)। सो लिखा है, कि जब फिलिप्पुस खोजे को यह बातें बता रहा था, कि एकाएक, "मार्ग में चलते-चलते वे किसी जल की जगह पहुंचे, तब खोजे ने कहा, देख यहां जल है, अब मुझे बपतिस्मा लेने में क्या रोक है? फिलिप्पुस ने कहा, यदि तू सारे मन से विश्वास करता है तो हो सकता है: उसने उत्तर दिया कि मैं विश्वास करता हूं कि यीशु मसीह परमेश्वर का पुत्र है। तब उसने रथ खड़ा करने की आज्ञा दी, और फिलिप्पुस और खोजा दोनों जल में उतर पड़े, और उसने उसे बपतिस्मा दिया।" (प्रेरितों ८:३५-३८)।

यीशु मसीह के बपतिस्मे के महत्त्व को याद दिलाने के उद्देश्य से, प्रेरित पौलुस ने अपने मसीही भाइयों से एक जगह कहा, "क्या तुम नहीं जानते, कि हम जितनों ने मसीह यीशु का बपतिस्मा लिया, तो उसकी मृत्यु का बपतिस्मा लिया? सो उस मृत्यु का बपतिस्मा पाने से हम उसके साथ गाड़े गए, ताकि जैसे मसीह पिता की महिमा के द्वारा मरे हुओं में से जिलाया गया, वैसे ही हम भी नए जीवन की सी चाल चलें।" (रोमियों ६:३,४)। सो यीशु मसीह का बपतिस्मा, अर्थात् जिस बपतिस्मे की आज्ञा उसने दी इसलिये लिया जाता है, कि मनुष्य अपना मन फिराकर, अर्थात् पाप के लिये मरकर, जल रूपी कब्र के भीतर गाड़ा जाए, और उस में से बाहर आकर एक नए जीवन की चाल चले। और यह बपतिस्मा लेने की आज्ञा संसार में सब लोगों के लिये है।

सो आइये, अब हम बाइबल में उल्लिखित अन्य पांच बपतिस्मों के बारे में विचार करें। १ कुरिन्थियों १०:२ में हम पढ़ते हैं, कि इस्राएलियों ने बादल और समुद्र में, मूसा का बपतिस्मा लिया। यह घटना उस समय घटी जब सारे इस्राएली मूसा की अगुवाई में लाल समुद्र में

से पार हुए। फिर, लूका १२:५० में, प्रभु यीशु ने अपने चेलों पर प्रगट करके कहा कि वह एक बपतिस्मा लेने पर है। यहां उसका संकेत उन दु:खों व कष्टों की ओर था जिनके बीच में से होकर गुज़रना उसे अवश्य था। और फिर हम बाइबल में यूहन्ना के बपतिस्मे के बारे में पढ़ते हैं। यूहन्ना यीशु मसीह से कुछ समय पूर्व आया, ताकि उसका मार्ग तैयार करे। लिखा है, "यूहन्ना आया, जो जंगल में बपतिस्मा देता, और पापों की क्षमा के लिये मन फिराव के बपतिस्मे का प्रचार करता था। और सारे यहूदिया देश के, और यरूशलेम के सब रहनेवाले निकलकर उसके पास गए, और अपने पापों को मानकर यरदन नदी में उस से बपतिस्मा लिया।" (मरकुस १:४,५)। परन्तु यीशु मसीह के बपतिस्मे की आज्ञा के बाद, यूहन्ना का बपतिस्मा समाप्त हो गया। और इसलिये, प्रेरितों के काम की पुस्तक के १९ अध्याय में हम पढ़ते हैं, कि जब प्रेरित पौलुस को कुछ लोग मिले जिन्होंने यूहन्ना का बपतिस्मा पाया हुआ था, तो उसने उन्हें यीशु के बपतिस्मे के बारे में बताया, तो उन्होंने यीशु मसीह का बपतिस्मा लिया।

परन्तु यूहन्ना ने यीशु मसीह का वर्णन करके कहा था कि "मैं तो पानी से तुम्हें मन फिराव का बपतिस्मा देता हूं, परन्तु जो मेरे बाद आनेवाला है, वह मुझ से शक्तिशाली है ; मैं उसकी जूती उठाने के योग्य नहीं, वह तुम्हें पवित्र आत्मा और आग से बपतिस्मा देगा।" (मत्ती ३:११)। सो यहां हम दो तरह के बपतिस्मों के बारे में पढ़ते हैं—पवित्र आत्मा का बपतिस्मा, और आग का बपतिस्मा। और ये दोनों ही बपतिस्मे प्रभु यीशु मसीह स्वयं देगा। सो आग का बपतिस्मा क्या है ? अगले ही पद में यूहन्ना आगे कहता है कि "उसका सूप उसके हाथ में है, और वह अपना खलिहान अच्छी रीति से साफ़ करेगा, और अपने गेहूं को तो खत्ते में इकट्ठा करेगा, परन्तु भूसी को उस आग में जलाएगा जो बुझने की नहीं। सो आग का बपतिस्मा उन लोगों के

लिये है जो न्याय के दिन भूसी के समान ठहरेंगे, वे अपने अधर्म का दन्ड आग की उस झील में पांएगे जो कभी बुझने की नहीं। और इस प्रकार, वे प्रभु की ओर से आग का बपतिस्मा पाएंगे।

परन्तु पवित्र आत्मा का बपतिस्मा किसे मिलेगा ? प्रेरितों के कामों की पुस्तक के पहिले अध्याय में हम पढ़ते हैं, कि अपनी मृत्यु से जी उठने के बाद, प्रभु यीशु ऊपर उठा लिये जाने से पूर्व अपने चेलों, अर्थात् प्रेरितों के पास आया "और उनसे मिलकर उन्हें आज्ञा दी, कि यरूशलेम को न छोड़ो, परन्तु पिता की उस प्रतिज्ञा के पूरा होने की बाट जोहते रहो, जिसकी चर्चा तुम मुझ से सुन चुके हो। क्योंकि यूहन्ना ने तो पानी में बपतिस्मा दिया है परन्तु थोड़े दिनों के बाद तुम पवित्रात्मा से बपतिस्मा पाओगे।" (प्रेरितों १:४,५) सो पवित्र आत्मा के बपतिस्मे की प्रतिज्ञा किस से की गई ? सब लोगों से नहीं, परन्तु केवल प्रेरितों से। और प्रभु ने अपनी प्रतिज्ञा को यूं ही पूरा भी किया।

प्रेरितों २ अध्याय से हम देखते हैं, कि प्रभु की आज्ञानुसार उसके प्रेरित यरूशलेम में एक जगह इकट्ठे थे। और जब पिन्तेकुस्त का दिन आया, जोकि यहूदियों का एक प्रमुख त्योहार था और जिसे मनाने के लिये संसार-भर में से यहूदी लोग यरुशलेम में इकट्ठा हुए थे। तो लिखा है, "एकाएक आकाश से बड़ी आंधी की सी सनसनाहट का शब्द हुआ, और उस से सारा घर जहां वे बैठे थे, गूंज गया। और उन्हें आग की सी जीभें फटती हुई दिखाई दीं; और उनमें से हर एक पर आ ठहरी। और वे सब पवित्र आत्मा से भर गए, और जिस प्रकार आत्मा ने उन्हें बोलने की सामर्थ दी, वे अन्य-अन्य भाषा बोलने लगे।" सो जब लोगों ने यह सब सुना तो लिखा है, "भीड़ लग गई और लोग घबरा गए, क्योंकि हर एक को यही सुनाई देता था, कि ये मेरी ही भाषा में बोल रहे हैं। और वे सब चकित और अचम्भित होकर कहने लगे; देखो, ये जो बोल रहे हैं क्या सब गलीली नहीं ? तो फिर क्यों हम में से हर

एक अपनी-अपनी जन्म भूमि की भाषा सुनता है ?"

सो इस प्रकार से प्रभु ने अपनी प्रतीज्ञानुसार प्रेरितों को पवित्र आत्मा का बपतिस्मा दिया। पवित्र आत्मा प्रेरितों को इसलिये दिया गया था ताकि वे उसकी सामर्थ पाकर लोगों को उन्हीं की भाषा में यीशु का सुसमाचार सुनाएं। और जैसा कि हम प्रेरितों २ अध्याय में पढ़ते हैं, कि लगभग पन्द्रह अलग-अलग भाषाओं के बोलनेवाले लोग वहां उपस्थित थे, परन्तु प्रेरितों की बातों को वे सब अपनी-अपनी भाषा में सुनते व समझते थे, जबकि वास्तव में प्रेरित गलीली भाषा बोलनेवाले थे ! परन्तु पवित्र आत्मा का बपतिस्मा पाने से उन्हें यह सामर्थ मिली थी कि वे अन्य-अन्य भाषाओं में बोलें—और ये भाषाएं थीं, जिन्हें सब लोग समझते थे—केवल बड़-बड़-बड़-बड़ की आवाज़ें नहीं थीं। इसी तरह से पवित्र आत्मा का बपतिस्मा पाने के बाद, प्रेरितों ने अनेकों आश्चर्य-जनक कार्य भी किए, उन्होंने अन्धों को आंखें दी, हर तरह के बीमारों को चंगा किया, और मुर्दों को भी जिलाया।

बाइबल यह भी बताती है, कि प्रेरितों ने कुछ मसीही लोगों के ऊपर अपने हाथ रखे, और इस प्रकार से उन्हें भी पवित्रात्मा की सामर्थ प्राप्त हुई। (प्रेरितों ८:९-२४ ; १९:१-७)। परन्तु वे जिन्होंने प्रेरितों के हाथ रखे जाने के द्वारा पवित्रात्मा प्राप्त किया था, इस योग्य न थे कि वे किसी अन्य व्यक्ति पर अपना हाथ रखकर उसे पवित्रात्मा दे सकें। सो जब सारे प्रेरितों की मृत्यु हो गई, और वे लोग भी मर गए जिनके ऊपर प्रेरितों ने हाथ रखे थे, तो प्रत्यक्ष ही है कि फिर कोई भी मनुष्य ऐसा न बचा जो प्रेरितों की तरह, एक भाषा जानते हुए भी पन्द्रह अन्य-अन्य भाषाओं में बोल सके, और एक जन्म के लंगड़े को चंगा कर सके, (प्रेरितों ३:१-१०), या एक मरे हुए मनुष्य को जीवित कर सके। (प्रेरितों २०:७-१२, प्रेरितों ९:३६-४३)।

प्रेरितों और उन लोगों को पवित्रात्मा की सामर्थ इसलिये प्राप्त

हुई थी, ताकि उनके द्वारा किए गए आश्चर्यजनक कार्यों को देखकर लोग मसीह पर विश्वास करें, क्योंकि उनके पास नया नियम लिखित रूप में नहीं था, जैसे कि आज हमारे पास है। आज मैं मसीह का वचन उसके नए नियम में से पढ़कर प्रचार करता हूं, और लोग उसे सुनकर उसमें विश्वास करते हैं। क्योंकि लिखा है, "सो विश्वास सुनने से, और सुनना मसीह के वचन से होता है।" (रोमियों १०:१७)। वास्तव में, अन्य-अन्य भाषाएं बोलने का वह ज्ञान और आश्चर्यजनक कार्य करने का वह ज्ञान केवल तभी तक के लिये दिया गया था जब तक कि परमेश्वर का वचन, जोकि सर्वसिद्ध है, (याकूब १:२५), पूरी तरह से लिखित रूप में लोगों के हाथों में न आ जाए, जैसे कि आज हमारे पास है। इसीलिये, प्रेरित ने उस समय कहा था कि "भविष्यद्वाणियां हों तो समाप्त हो जाएंगी, भाषाएं हों, तो जाती रहेंगी; ज्ञान हो, तो मिट जाएगा। क्योंकि हमारा ज्ञान अधूरा है, और हमारी भविष्यद्वाणी अधूरी। परन्तु जब सर्वसिद्ध आएगा, तो अधूरा मिट जाएगा।" (१ कुरिन्थियों १३:८-१०)।

परन्तु, कदाचित् कोई कहे, कि तो फिर कुरनेलियुस और उसके परिवार को पवित्र आत्मा क्यों प्राप्त हुआ? यदि आप प्रेरितों १० तथा ११ अध्यायों को ध्यान से पढ़ेंगे तो आप जान लेंगे कि उन्हें पवित्र आत्मा इसलिये मिला था ताकि सारे यहूदी जान लें कि परमेश्वर केवल यहूदियों से ही नहीं परन्तु अन्य जातिवालों से भी प्रेम रखता है।

मेरी आशा है, कि अब इस विषय में आप गुमराह न रहेंगे। और याद रखेंगे, कि आज केवल एक ही बपतिस्मा है, और वह यीशु मसीह का बपतिस्मा है जो विश्वास करनेवालों को, यीशु मसीह की आज्ञानुसार अपने पापों की क्षमा के लिये लेना चाहिए।

१०

कलीसिया के विषय में सच्चाई

यूं तो संसार में सदियों से अनेकों संस्थाओं या मन्डलियों ने जन्म लिया है, परन्तु समय के साथ-साथ वे या तो समाप्त हो गईं या बदल गईं। और आज भी ऐसी बहुतेरी संस्थाएं या मन्डलियां संसार में हैं, परन्तु समय के साथ-साथ वे भी लोप हो जाएंगी। किन्तु, आज मैं आपको एक ऐसी संस्था के बारे में, एक ऐसी मन्डली के बारे में, बताने जा रहा हूं जो आज से लगभग दो हज़ार वर्ष पूर्व बनाई गई थी, और वह आज भी संसार में ठीक उसी तरह से विद्यमान है जैसे कि आज से दो हज़ार साल पहिले थी। और वह मन्डली है, मसीह यीशु की कलीसिया। जब प्रभु यीशु इस पृथ्वी पर था तो उसने प्रतिज्ञा करके कहा था, कि मैं अपनी कलीसिया बनाऊंगा, और अधोलोक के फाटक उस पर प्रबल न होंगे। (मत्ती १६:१८)। और मसीह से सैकड़ों वर्ष पूर्व, दानिय्येल भविष्यद्वक्ता के द्वारा, लोगों के पास यह वचन पहुंचा था, कि भविष्य में, स्वर्ग का परमेश्वर एक ऐसा राज्य उदय करेगा जो अनन्तकाल तक न टूटेगा, और वह सदा स्थिर रहेगा। (दानिय्येल २:४४)। और इसी तरह से, भविष्यद्वक्ता यशायाह ने प्रगट करके कहा था कि "अन्त के दिनों में ऐसा होगा कि यहोवा के भवन का पर्वत सब पहाड़ों पर दृढ़ किया जाएगा, और सब पहाड़ियों से अधिक ऊंचा किया जाएगा ; और हर जाति के लोग धारा की नाईं उसकी ओर चलेंगे···क्योंकि यहोवा की व्यवस्था सिय्योन से और उसका वचन यरूशलेम से निकलेगा" (यशायाह २:२,३)।

और पहिले से की गई इन भविष्यद्वाणियों और अपनी प्रतिज्ञा के

अनुसार यीशु मसीह ने अपनी कलीसिया की स्थापना लगभग ई० सन् ३३ में यरूशलेम में की। भविष्यद्वक्ता के कहे वचन अनुसार, उस दिन आकाश के नीचे की हर एक जाति में से भक्त यहूदी यरूशलेम में इकट्ठा थे, वे वहां अपनी रीति अनुसार पिन्तेकुस्त नाम का अपना एक त्योहार मनाने को एकत्रित हुए थे, कि एकाएक उन्होंने बड़े अद्भुत चिन्ह देखे, और वे सब चकित वा अचम्भित हुए और जब वे घबराकर प्रश्न भरी दृष्टियों से एक दूसरे की ओर देख रहे थे, तो यीशु के प्रेरितों ने उन्हें शान्त करके कहा, कि ये जो कुछ भी हो रहा है यह सब पहिले से की गई भविष्यद्वाणियों के अनुसार है। और जब बहुत समझाने के बाद उनकी घबराहट दूर हुई, तो उन्होंने लोगों की उस बड़ी भीड़ को यीशु मसीह का सुसमाचार सुनाया। प्रेरितों ने उन्हें बताया, कि यीशु किस अद्भुत रीति से तुम्हारे बीच में जन्मा और बड़ा हुआ, और उसका "परमेश्वर की ओर से होने का प्रमाण उन सामर्थ के कामों और आश्चर्य के कामों और चिन्हों से प्रगट है, जो परमेश्वर ने तुम्हारे बीच उसके द्वारा कर दिखलाए जिसे तुम आप ही जानते हो" और फिर, "उसी को जब वह परमेश्वर की ठहराई हुई मनसा और होनहार के ज्ञान के अनुसार पकड़वाया गया, तो तुम ने अधर्मियों के हाथ से उसे क्रूस पर चढ़वाकर मार डाला। परन्तु उसी को परमेश्वर ने मृत्यु के बन्धनों से छुड़ाकर जिलाया: क्योंकि यह अनहोना था कि वह उसके वश में रहता।" (प्रेरितों २:१-२४)।

और पवित्र शास्त्र में हम देखते हैं, कि जब उन लोगों ने ये बातें सुनी तो उन्हें अपनी गलती का अनुभव हुआ। और लिखा है, "तब सुननेवालों के हृदय छिद गए, और वे पतरस और शेष प्रेरितों से पूछने लगे, कि हे भाइयो, हम क्या करें?" और प्रेरित पतरस के पास इस बात का केवल एक ही उत्तर था, सो लिखा है, "पतरस ने उनसे कहा, मन फिराओ, और तुम में से हर एक अपने-अपने पापों की क्षमा के लिये यीशु मसीह के नाम से बपतिस्मा ले; तो तुम पवित्र आत्मा

का दान पाओगे। क्योंकि यह प्रतिज्ञा तुम, और तुम्हारी सन्तानों, और उन सब दूर-दूर के लोगों के लिये भी है जिनको प्रभु हमारा परमेश्वर अपने पास बुलाएगा।" सो लिखा है, "जिन्होंने उसका वचन ग्रहण किया उन्होंने बपतिस्मा लिया ; और उसी दिन तीन हज़ार मनुष्यों के लगभग उनमें मिल गए।" (प्रेरितों २:३७-४१)। अर्थात्, उन लोगों ने अपना मन फिराया और इस प्रकार से वे पाप और संसार के लिये मर गए, फिर वे प्रभु यीशु की आज्ञानुसार, (मरकुस १६:१६), बपतिस्मे के द्वारा जल-रूपी कब्र के भीतर गाड़े गए, ताकि पाप का शरीर दफ़न हो जाए, और उसमें से बाहर आकर वे एक नए जीवन की चाल चलें। (रोमियों ६:१-६)। सो इस प्रकार से, उन तीन हज़ार लोगों के साथ प्रभु यीशु ने अपनी कलीसिया का आरम्भ किया, लिखा है, "और जो उद्धार पाते थे, उनको प्रभु प्रतिदिन उनमें मिला देता था" (प्रेरितों २:४७)।

सो इस तरह से, वे लोग जो आज भी यीशु मसीह का सुसमाचार सुनकर उसमें विश्वास करते हैं और अपने पापों से मन फिराकर, उसकी अज्ञानुसार, अपने पापों की क्षमा के लिये बपतिस्मा लेते हैं, उन्हें भी मसीह आज अपनी कलीसिया में मिला लेता है। इस बात को याद रखें कि मसीह ने केवल अपनी एक ही कलीसिया का निर्माण किया है, और जो उद्धार पाते हैं उन्हें वह अपनी उसी एक कलीसिया में मिलाता है। अर्थात् वह उद्धार पाए हुए लोगों को अलग-अलग प्रकार की कलीसियाओं में नहीं मिलाता, जिनके अलग-अलग नाम, विश्वास और शिक्षाएं हों। मसीह की कलीसिया का नाम केवल एक ही है, वह केवल उसी के नाम को अपने ऊपर रखती है। क्योंकि लिखा है, "और किसी दूसरे के द्वारा उद्धार नहीं; क्योंकि स्वर्ग के नीचे मनुष्यों में और कोई दूसरा नाम नहीं दिया गया, जिसके द्वारा हम उद्धार पा सकें।" (प्रेरितों ४:१२)। कलीसिया के निर्माण के कई वर्षों पश्चात्, जब लोग कलीसिया की मन्डलियों को यीशु के विभिन्न प्रेरितों वा चेलों के नामों से पुकारने लगे, तो प्रेरित पौलुस ने उनसे पूछा, कि तुम में ऐसा क्यों है,

"कि तुम में से कोई तो अपने आपको पौलुस का, कोई अपुल्लोस का, कोई कैफ़ा का, कोई मसीह का कहता है। क्या मसीह बंट गया ? क्या पौलुस (**या कोई अन्य व्यक्ति**) तुम्हारे लिये क्रूस पर चढ़ाया गया ? या तुम्हें पौलुस (**या किसी अन्य व्यक्ति**) के नाम पर बपतिस्मा मिला ?" (१ कुरिन्थियों १:१२,१३) । और आश्चर्य की बात तो यह है, कि आज भी संसार में यही स्थिति है। सैंकड़ों तरह-तरह के नामों से पुकारी जानेवाली कलीसियाएं तो आज विद्यमान् हैं, परन्तु मसीह की कलीसिया ? शायद लोगों के लिये यह एक नया नाम है—परन्तु बाइबल में तौभी हम केवल एक ही कलीसिया के बारे में पढ़ते हैं, अर्थात् मसीह की कलीसिया। (मत्ती १६:१८ ; रोमियों १६:१६) ।

बाइबल में मसीह की कलीसिया की तुलना एक देह से की गई है। देह में सिर का स्थान प्रमुख होता है। और मसीह कलीसिया का सिर है। (इफिसियों १:२२,२३; कुलुस्सियों १:१८) । और सारे मसीह, जो उसकी कलीसिया में हैं, वे सब मिलकर उसकी देह हैं, और अलग अलग उसके अंग हैं। (१ कुरिन्थियों १२:२७) । इसी तरह से, कलीसिया को बाइबल में परमेश्वर का घर भी कहा गया है। (१ तीमुथियुस ३:१५) । अर्थात्, उसके भीतर लोग सन्तान और परमेश्वर उनका पिता होता है। प्रेरित एक अन्य स्थान पर लिखकर कहता है, "क्योंकि तुम सब उस विश्वास करने के द्वारा जो मसीह यीशु पर है, परमेश्वर के सन्तान हो। और तुम में से जितनों ने मसीह में बपतिस्मा लिया है उन्होंने मसीह को पहिन लिया है।" (गलतियों ३:२६, २७) । सो मसीह का बपतिस्मा लेकर हम मसीह को पहिन लेते हैं, अर्थात् हम उसकी देह के भीतर हो जाते हैं, जोकि उसकी कलीसिया है। इस कलीसिया को मसीह ने अपने लोहू से मोल लिया है, (प्रेरितों २०:२८), क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति जो मसीह की कलीसिया का सदस्य बनता है, उसका उद्धार मसीह यीशु के उस लोहू के द्वारा होता है जो उसने हमारे पापों की क्षमा के निमित्त बहाया। (मत्ती २६:२८) ।

वे लोग जो यीशु मसीह की आज्ञा मानकर उसकी कलीसिया के सदस्य बन चुके हैं, उनके पास एक बहुत बड़ी आशा है, और उनकी यह आशा उनकी मृत्यु के बाद भी बनी रहती है। वे इसी आशा में जीते हैं और इसी आशा को साथ लेकर मरते हैं, कि एक दिन, अपनी प्रतिज्ञानुसार, यीशु मसीह अवश्य ही वापस आएगा, और अपनी कलीसिया को अपने साथ ले जाएगा, ताकि उसके लोग सदा उसके साथ रहें। कलीसिया में, अपने मसीही भाइयों को इसी आशा का स्मरण दिलाकर, प्रेरित पौलुस ने कहा, "हे भाइयो, हम नहीं चाहते, कि तुम उनके विषय में जो सोते हैं, अज्ञान रहो; ऐसा न हो, कि तुम औरों की नाईं शोक करो जिन्हें आशा नहीं। क्योंकि यदि हम प्रतीति करते हैं, कि यीशु मरा, और जी भी उठा, तो वैसे ही परमेश्वर उन्हें भी जो यीशु में सो गए हैं उसी के साथ ले आएगा। क्योंकि हम प्रभु के वचन के अनुसार तुम से यह कहते हैं, कि हम जो जीवित हैं, और प्रभु के आने तक बचे रहेंगे तो सोए हुओं से कभी आगे न बढ़ेंगे। क्योंकि प्रभु आप ही स्वर्ग से उतरेगा ; उस समय ललकार, और प्रधान दूत का शब्द सुनाई देगा, और परमेश्वर की तुरही फूंकी जाएगी, और जो मसीह में मरे हैं, वे पहिले जी उठेंगे। तब हम जो जीवित और बचे रहेंगे, उनके साथ बादलों पर उठा लिये जाएंगे, कि हवा में प्रभु से मिलें, और इस रीति से हम सदा प्रभु के साथ रहेंगे। सो इन बातों से एक दूसरे को शान्ति दिया करो।" (१ थिस्सलुनीकियों ४:१३-१८)।

क्या आपके पास भी यह बहुमूल्य आशा है ? जी हां, आप भी हमारे साथ इस महान् आशा में भागी बन सकते हैं। यदि आप प्रभु यीशु में विश्वास करेंगे, अपना मन फिराएंगे, और अपने पापों की क्षमा के लिये उसकी आज्ञानुसार बपतिस्मा लेंगे, तो वह आपका उद्धार करके आपको अपनी उसी कलीसिया में मिलाएगा, जिसे लेने के लिये वह एक दिन वापस आ रहा है।

११

आप कहां बना रहे हैं ?

नए नियम में हम प्रभु यीशु मसीह की अनेकों शिक्षाओं के बारे में पढ़ते हैं। उसका शिक्षा देने का ढंग बड़ा ही अद्भुत था। वह पृथ्वी पर की छोटी-छोटी साधारण वस्तुओं को लेकर, उनके द्वारा लोगों को बड़ी-बड़ी आत्मिक शिक्षाएं दिया करता था। मत्ती ७:२१-२७ में हम देखते हैं, कि उसने न्याय के दिन की स्थिति को दर्शाते हुए लोगों से कहा, "जो मुझसे हे प्रभु, हे प्रभु कहता है, उनमें से हर एक स्वर्ग के राज्य में प्रवेश न करेगा, परन्तु वही जो मेरे स्वर्गीय पिता की इच्छा पर चलता है। उस दिन बहुतेरे मुझ से कहेंगे ; हे प्रभु, हे प्रभु, क्या हमने तेरे नाम से भविष्यद्वाणी नहीं की और तेरे नाम से दुष्टात्माओं को नहीं निकाला, और तेरे नाम से बहुत अचम्भे के काम नहीं किए ? तब मैं उनसे खुलकर कह दूंगा कि मैंने तुम को कभी नहीं जाना, हे कुकर्म करनेवालो, मेरे पास से चले जाओ। इसलिये जो कोई मेरी ये बातें सुनकर उन्हें मानता है वह उस बुद्धिमान मनुष्य की नाईं ठहरेगा जिसने अपना घर चट्टान पर बनाया। और मेंह बरसा और बाढ़ें आईं और आन्धियां चलीं, और उस घर पर टक्करें लगीं, परन्तु वह नहीं गिरा, क्योंकि उसकी नेव चटान पर डाली गई थी। परन्तु जो कोई मेरी ये बातें सुनता है और उन पर नहीं चलता वह उस निर्बुद्धि मनुष्य की नाईं ठहरेगा जिसने अपना घर बालू पर बनाया। और मेंह बरसा, और बाढ़ें आईं, और अन्धियां चलीं, और उस घर पर टक्करें लगीं और वह गिरकर सत्यानाश हो गया।"

यहां हम दो घर बनानेवालों के बारे में देखते हैं। यूं तो यह

उदाहरण एक भौतिक वा सांसारिक घर का दिया गया है, परन्तु इसकी तुलना वास्तव में एक आत्मिक घर से की गई है जो हम में से हर एक अपने आनेवाले जीवन के लिये प्रतिदिन बना रहा है। सो हम देखते हैं, कि दोनों ने अपने लिये एक उचित घर बनाने के महत्त्व को सुना। दोनों ने ही अपने लिये एक घर की आवश्यकता का अनुभव किया और बनाने का निश्चय किया। और फिर हम देखते हैं, कि उन्होंने अपने लिये एक-एक घर बनाकर खड़ा कर लिया। निःसंदेह, कदाचित्, दोनों ही अपने-अपने घरों में अपने आपको बड़ा ही सुरक्षित अनुभव करते होंगे।

परन्तु वे दोनों एक दूसरे से भिन्न थे। एक जबकि बुद्धिमान् था, क्योंकि उसने घर बनाने की आवश्यकता का अनुभव वा निश्चय ही नहीं किया, परन्तु उसने अपना घर ठीक उसी प्रकार से बनाया जिस तरह से उसको हिदायत दी गई थी। परन्तु दूसरे के बारे में लिखा है, कि वह निर्बुद्धि, अर्थात् मूर्ख था। और उसकी मूर्खता प्रत्यक्ष ही है, क्योंकि उसने अपने लिये एक घर की आवश्यकता का अनुभव व निश्चय तो किया, और उसने बनाया भी, परन्तु उसने अपना घर बनाने में उन वस्तुओं का उपयोग नहीं किया जिनका आदेश उसे दिया गया था। कदाचित् हो सकता है, कि उसने अपने मन में सोचा हो कि घर तो एक घर ही है सो क्यों न मैं अपनी ही इच्छा अनुसार बनाऊं। हो सकता है, कि चटान पर घर बनाना उसे कुछ कठिन प्रतीत हुआ हो, या उसमें कुछ अधिक लागत लग रही हो जिसे देना उसने उचित न समझा हो। सो उसने एक सरल मार्ग चुन लिया, और प्रभु की इच्छा को टालकर उस ने अपने लिये अपनी इच्छानुसार एक घर बना लिया।

सो इस तरह से, वे दोनों अपने-अपने व्यवहार में एक दूसरे से भिन्न थे। जैसे कि हम देखते हैं कि उनमें से एक ने प्रभु की बातों को सुनकर न केवल विश्वास ही किया, परन्तु उसने उसकी बातों पर अमल

भी किया। जबकि दूसरे ने उसकी बातों को सुनकर विश्वास तो किया परन्तु उन्हें माना नहीं। दूसरे शब्दों में, उसने "केवल विश्वास" किया। और पवित्र शास्त्र में से हम देखते हैं, कि जैसे देह आत्मा बिना मरी हुई है वैसे ही विश्वास भी कर्म बिना मरा हुआ है। (याकूब २:२६)।

और इसी कारण, उनके घर की नेव भी एक दूसरे से भिन्न थी। एक की नेव जब कि चटान पर पड़ी थी, दूसरे की नेव बालू रेत पर थी। हो सकता है, बनने के बाद उनके घर एक समान ही लगते हों। और इसलिये कदाचित् बालू पर बने उस घर का स्वामी उस दूसरे घर के स्वामी की हंसी भी उड़ाता हो, कि उसने इतनी अधिक मेहनत करके और इतनी अधिक लागत देकर अपना घर बनाया है जबकि देखने में दोनों घर एक समान ही लगते हैं। और हो सकता है कि बालू पर बना घर चटान पर बने उस घर से कुछ अधिक सुन्दर प्रतीत होता हो।

परन्तु जब परीक्षा का समय आया तो उन दोनों के परिणाम भी भिन्न थे। प्रभु ने कहा, कि जब मेंह बरसा और बाढ़ें आईं, और आन्धियां चलीं, और उस घर पर टक्करें लगीं, तो वह नहीं गिरा, उसे कोई हानि नहीं हुई, क्योंकि उसकी नेव चटान पर डाली गई थी। परन्तु वह दूसरा घर, जिसकी नेव बालू पर डाली गई थी, वह मेंह, बाढ़ों और आन्धियों की प्रचन्ड टक्करों को न सह सका और गिरकर सत्यानाश हो गया।

सो इस प्रकार से हम देखते हैं, कि एक घर का भविष्य उसकी नेंव पर निर्भर करता है। और, मित्रो, हम में से हर एक व्यक्ति अपने अपने लिये प्रतिदिन एक घर बना रहा है। प्रत्येक कार्य जो हम प्रतिदिन करते हैं वे उस घर में ईंटों के समान हैं जिनसे वह घर बनता चला जाता है। "क्योंकि अवश्य है, कि हम सबका हाल मसीह के न्याय आसन के सामने खुल जाए, कि हर एक व्यक्ति अपने-अपने भले बुरे कामों का बदला जो उसने देह के द्वारा किए हों पाए।" (२ कुरिन्थियों

५:१०) । परन्तु सबसे महत्त्वपूर्ण बात यह है कि हम अपना घर किस नेंव पर बना रहे हैं ? क्या हमारा घर बालू पर बन रहा है, या उस चटान पर जो यीशु मसीह है। (१ कुरिन्थियों १०:४) ।

एक अन्य स्थान पर प्रभु यीशु ने कहा, "सकेत फाटक से प्रवेश करो, क्योंकि चौड़ा है वह फाटक और चाकल है वह मार्ग जो विनाश को पहुंचाता है; और बहुतेरे हैं जो उस से प्रवेश करते हैं। क्योंकि सकेत है वह फाटक और सकरा है वह मार्ग जो ज ,वन को पहुंचाता है, और थोड़े हैं जो उसे पाते हैं।" (मत्ती ७:१३,१४) । सो यहां से हम देखते हैं, कि संसार में अधिकांश लोग चौड़े व सरल मार्ग पर चलकर आज अपना घर बालू पर बना रहे हैं। वे उस घर के महत्त्व को नहीं समझते जिसकी नेंव चटान पर डाली जाती है, क्योंकि उसे बनाने में परिश्रम करना पड़ता है, लागत लगानी पड़ती है और दुख उठाना पड़ता है। वे एक ऐसा घर चाहते हैं जिसे बनाने में उन्हें कुछ दुख न हो, कुछ परिश्रम न करना पड़े, और कुछ त्यागना न पड़े। और इस प्रकार से, वे चोड़े फाटकवाले फैले हुए उस मार्ग पर चल रहे हैं जिस पर आसानी से चला जाता है, परन्तु उसका अन्त विनाश को पहुंचाता है। (नीतिवचन १४:१२) ।

क्या आप का घर परीक्षा के समय स्थिर बना रहेगा, या वह गिरकर सत्यानाश हो जाएगा ? इस बात को आपके लिये जानना बड़ा ही आवश्यक है। क्योंकि पृथ्वी पर इस भौतिक जीवन के समाप्त हो जाने पर आपको अपनी आत्मा के लिये अवश्य ही एक घर की आवश्यकता पड़ेगी। परमेश्वर की ओर से "मनुष्यों के लिए एक बार मरना और उसके बाद न्याय का होना नियुक्त है।" (इब्रानियों ९:२७) । सो परमेश्वर के उस महान् दिन में जब आपके घर को परीक्षा का सामना करना पड़ेगा, क्या आपका घर खड़ा रहेगा या गिर जाएगा ?

पवित्र बाइबल के अनुसार, "उस समय जबकि प्रभु यीशु अपने

सामर्थी दूतों के साथ, धधकती हुई आग में स्वर्ग से प्रगट होगा। और जो परमेश्वर को नहीं पहिचानते, और हमारे प्रभु यीशु के सुसमाचार को नहीं मानते उनसे पलटा लेगा वे प्रभु के सामने से, और उसकी शक्ति के तेज से दूर होकर अनन्त विनाश का दन्ड पाएंगे।" (२ थिस्सलुनीकियों १:७-९)।

सो आप क्यों नहीं अपना घर आज ही चटान पर बनाना आरम्भ कर देते, ताकि प्रभु के उस महान् दिन के आने से पहिले आप उस घर में सुरक्षित पाए जाएं जिसकी नेव चटान पर पड़ी हो। और चटान पर घर बनाने का केवल एक ही मार्ग है। प्रभु यीशु ने कहा, "इसलिये जो कोई मेरी ये बातें सुनकर उन्हें मानता है वह उस बुद्धिमान मनुष्य की नाईं ठहरेगा जिसने अपना घर चटान पर बनाया।" सो प्रभु की आज्ञाओं को मानकर ही आप अपना घर चटान पर बना सकते हैं। और उस घर का बनाना आप आज ही प्रभु की इन आज्ञाओं को मानकर आरम्भ कर सकते हैं, उसने कहा, "क्योंकि यदि तुम विश्वास न करोगे कि मैं वही हूं, तो अपने पापों में मरोगे।" (यूहन्ना ८: २४)। और यह भी लिखा है, कि "विश्वास बिना उसे प्रसन्न करना अनहोना है, क्योंकि परमेश्वर के पास आनेवाले को यह विश्वास करना चाहिए कि वह है; और अपने खोजनेवालों को प्रतिफल देता है।" (इब्रानियों ११:६)। तो आपको चाहिए कि आप यीशु मसीह में विश्वास करें। और न केवल विश्वास, परन्तु आपको चाहिए कि आप पाप और अपने पिछले जीवन से मन फिराएं, क्योंकि यीशु ने आज्ञा देकर कहा, "यदि तुम मन न फिराओगे तो तुम भी सब इसी रीति से नाश होगे।" (लूका १३:५)। और एक अन्य स्थान पर लिखा है कि "परमेश्वर आज्ञानता के समयों से आनाकानी करके, अब हर जगह सब मनुष्यों को मन फिराने की आज्ञा देता है। क्योंकि उसने एक दिन ठहराया है, जिसमें वह उस मनुष्य के द्वारा धर्म से जगत का न्याय करेगा जिसे उसने ठहराया है और उसे मरे हुओं में से जिलाकर यह बात सब पर

प्रमाणित कर दी है।" (प्रेरितों १७:३०,३१)। और न केवल विश्वास और पश्चात्ताप परन्तु आपको चाहिए कि आप यीशु की अज्ञानुसार, पिता, और पुत्र, और पवित्रात्मा के नाम से अपने-अपने पापों की क्षमा के लिये बपतिस्मा लें। (मत्ती २८:१९)। क्योंकि प्रभु यीशु ने कहा, "जो विश्वास करे और बपतिस्मा ले उसी का उद्धार होगा..." (मरकुस १६:१६)। और एक अन्य स्थान पर पवित्र शास्त्र आज्ञा देकर कहता है, "मन फिराओ, और तुम में से हर एक अपने-अपने पापों की क्षमा के लिये यीशु मसीह के नाम से बपतिस्मा ले, तो तुम पवित्र आत्मा का दान पाओगे।" (प्रेरितों २:३८)।

सो इस तरह से, जब आप यीशु की बात मानकर उसमें विश्वास करेंगे, और अपना मन फिराएंगे, और अपने पापों की क्षमा के लिये बपतिस्मा लेंगे, और फिर, अपना आगे का जीवन नए नियम में दी गई उसकी आज्ञाओं के अनुसार व्यतीत करेंगे, तो आप वास्तव में उस बुद्धिमान मनुष्य की नाईं ठहरेंगे जिसने अपना घर चटान पर बनाया। क्योंकि यीशु ने कहा, "इसलिये जो कोई मेरी ये बातें सुनकर उन्हें मानता है वह उस बुद्धिमान मनुष्य की नाईं ठहरेगा जिसने अपना घर चटान पर बनाया। और मेंह बरसा और बाढ़ें आईं, और अन्धियां चलीं, और उस घर पर टक्करें लगीं परन्तु वह नहीं गिरा, क्योंकि उसकी नेंव चटान पर डाली गई थी।" दूसरी ओर, यीशु ने कहा, "परन्तु जो कोई मेरी ये बातें सुनता है और उन पर नहीं चलता वह उस निर्बुद्धि मनुष्य की नाईं ठहरेगा जिसने अपना घर बालू पर बनाया। और मेंह बरसा, और बाढ़ें आईं, और आंधियां चलीं, और उस घर पर टक्करें लगीं और वह गिरकर सत्यानाश हो गया।" परन्तु आप अपना घर कहां बना रहे हैं ?

१२

उत्तम दौड़

हम सब दौड़ से परीचित हैं। अनेकों स्थानों पर दौड़ की प्रतियोगताएं होती हैं, जिनमें लोग भाग लेते हैं ताकि उन्हें एक ईनाम मिले। परन्तु, देखा जाए, तो संसार में सभी लोग किसी न किसी तरह की दौड़ में सम्मिलित हैं। उदाहरण के रूप से, कोई शिक्षा प्राप्त करने के लिये दौड़ रहा है, और कोई धन और कोई मान् वा सम्मान् प्राप्त करने के लिये दौड़ रहा है। और इस तरह से, सभी लोग कुछ न कुछ प्राप्त करने की अभीलाषा में दौड़ लगा रहे हैं। किन्तु, आज मैं आपको एक ऐसी दौड़ के बारे में बताने जा रहा हूं, जिसमें दौड़नेवालों को एक ऐसा ईनाम मिलेगा जो सब ईनामों में श्रेष्ठ है। एक ऐसा ईनाम जिसका मूल्य चुकाने की सामर्थ संसार की कोई भी वस्तु नहीं रखती। और इस दौड़ के बारे में एक विशेष बात यह है, कि इसमें संसार का कोई भी मनुष्य भाग ले सकता है। और इस दौड़ को हम मसीही दौड़ कहते हैं। जी हां, "मसीही दौड़।"

इस दौड़ का आरम्भ तब होता है, जब मनुष्य प्रभु यीशु को अपना उद्धारकर्त्ता स्वीकार करके, उसमें विश्वास करता है, और अपना मन फिराकर, उसकी आज्ञानुसार बपतिस्मा लेता है। (यूहन्ना ३ : १६ ; मरकुस १६ : १६ ; प्रेरितों २ : ३८, ४१, ४७)। और इस तरह से, प्रभु अपनी प्रतिज्ञानुसार, उसे अपनी मन्डली में मिला लेता है। जिस तरह से, एक दौड़ में दौड़ने के लिये, एक निश्चित स्थान वा सीमा के भीतर दौड़ना आवश्यक होता है, वैसे ही, मसीही दौड़ भी केवल यीशु मसीह की कलीसिया के भीतर ही दौड़ी जा सकती है। वह ईनाम जो

प्रभु अपने दौड़नेवालों को देगा, उसे पाने का अधिकार केवल वही लोग रख सकते हैं जो उस मैदान के भीतर दौड़ रहे हैं। जिसका चुनाव प्रभु ने किया है—और वह है उसकी कलीसिया। उसके बाहर दौड़नेवालों का ईनाम पर कोई अधिकार न होगा।

परन्तु प्रभु का यह दौड़ का मैदान बड़ा ही सकरा है, अर्थात्, इसके भीतर दौड़ना कोई सरल कार्य नहीं है। यद्यपि प्रभु चाहता है कि संसार के सभी लोग इस दौड़ में भाग लें, और उस बड़े ईनाम को प्राप्त करें जो सब में श्रेष्ठ है, परन्तु तौभी, उसने चेतावनी देकर बताया है, कि, उसकी दौड़ बड़ी कठिन है। सुनिये, कि वह क्या कहता है, उसने कहा, "सकेत फाटक से प्रवेश करो, क्योंकि चौड़ा है, वह फाटक और चाकल है वह मार्ग जो विनाश को पहुँचाता है; और बहुतेरे हैं जो उससे प्रवेश करते हैं। क्योंकि सकेत है वह फाटक और सकरा है वह मार्ग जो जीवन को पहुंचाता है, और थोड़े है जो उसे पाते हैं।" (मत्ती ७ : १३, १४)।

यूं तो यह दौड़ बड़ी लम्बी वा कठिन है, इसका आरम्भ उस समय होता है जब मनुष्य प्रभु की आज्ञा मानकर उसकी कलीसिया में मिल जाता है, और अन्त केवल तभी होता है, जब मनुष्य इस संसार को छोड़कर, अपना प्रतिफल प्राप्त करने के लिये, अपने सृष्टिकर्त्ता के पास चला जाता है। परन्तु यह दौड़ धार्मिकता की दौड़ है, यह दौड़ आशा और विश्वास की दौड़ है। धार्मिकता की इस दौड़ में सदियों से अनेकों लोगों ने भाग लिया है, जिनके भक्तिपूर्ण जीवन, और साहस वा धीरज के साथ इस दौड़ में दौड़ने के उदाहरण आज हमारे लिये बड़े आदर्श हैं। उन लोगों में हाबिल, नूह, इब्राहीम और मूसा के उदाहरण प्रसिद्ध हैं।

और पवित्र बाइबल का लेखक कहता है, "इस कारण जबकि गवाहों का ऐसा बड़ा बादल हम को घेरे हुए है, तो आओ, हर एक रोकनेवाली वस्तु, और उलझानेवाले पाप को दूर करके, वह दौड़

जिसमें हमें दौड़ना है, धीरज से दौड़ें। और विश्वास के कर्त्ता और सिद्ध करनेवाले यीशु की ओर ताकते रहें जिसने उस आनन्द के लिये जो उसके आगे धरा था, लज्जा की कुछ चिन्ता न करके, क्रूस का दुख सहा ; और सिंहासन पर परमेश्वर के दाहिने जा बैठा। इसलिये उस पर ध्यान करो, जिसने अपने विरोध में पापियों का इतना वाद-विवाद सह लिया, कि तुम निराश होकर हियाव न छोड़ दो।" (इब्रानियों १२ : १-३)।

सो इस तरह से हम देखते हैं, कि इस दोड़ में दौड़नेवालों के सामने अनेकों तरह की ऐसी वस्तुएं आती हैं, जो उनकी दौड़ में बाधा उत्पन्न करती हैं ; अनेकों ठोकर के कारण सामने आते हैं, जो कदाचित् दौड़नेवाले को गिरा दें ; और बहुतेरे उलझानेवाले पाप मार्ग में आते हैं, जिनमें उलझकर दौड़नेवाला अपनी दौड़ बीच में ही रोक दे। परन्तु मसीही दौड़ में दौड़नेवालों को यह चेतावनी दी गई है, कि वे उन सब लोगों को सदा याद रखें जो इस दौड़ में उनसे पहिले भाग ले चुके हैं, और विशेषकर यीशु मसीह को जो हमारे विश्वास का कर्त्ता और सिद्धता का प्रतीक है। जिसने परमेश्वर की इच्छा को पूर्ण करने के लिये लज्जा की कुछ चिन्ता न करके पापियों के प्रत्येक वाद-विवाद को सह लिया, और हर एक विरोध का सामना किया। वास्तव में ऐसी कोई भी रोकनेवाली वस्तु या उलझानेवाला पाप, मसीही दौड़ में हमारे सामने नहीं आता जिसका सामना यीशु मसीह ने स्वयं न किया हो। और इसलिये, इस दौड़ में वह हमारा कप्तान है, क्योंकि धार्मिकता की इस दौड़ में वह स्वयं हमारे आगे-आगे चला।

परन्तु बहुतेरे लोग इस दौड़ में सम्मिलित तो हो जाते हैं, पर उस निशाने से चूक जाते हैं जिसकी ओर ताकते हुए "मसीही दौड़" में दौड़ना आवश्यक है। इसी प्रकार के कुछ लोग प्रेरित पौलुस के दिनों में भी थे। सो वह उन्हें लिखकर कहता है, "तुम तो भली-भांति दौड़ रहे थे, अब किस ने तुम्हें रोक दिया, कि सत्य को न मानो ?" क्या

वह धन का लोभ है, परिवार या मित्र हैं, या कोई पाप है ? किसने तुम्हें रोक दिया कि तुम दौड़ते हुए रुक जाओ ?

वास्तव में, संसार और संसार की वस्तुएं धार्मिकता की इस दौड़ में एक बहुत बड़ी बाधा हैं। इसलिये प्रेरित यूहन्ना कहता है, "तुम न तो संसार से और न संसार की वस्तुओं से प्रेम रखो ; यदि कोई संसार से प्रेम रखता है, तो उसमें पिता का प्रेम नहीं है। क्योंकि जो कुछ संसार में है, अर्थात् शरीर की अभिलाषा, और आंखों की अभिलाषा और जीविका का घमन्ड, वह पिता की ओर से नहीं, परन्तु संसार ही की ओर से है और संसार और उसकी अभिलाषाएं दोनों मिटते जाते हैं, पर जो परमेश्वर की इच्छा पर चलता है, वह सर्वदा बना रहेगा।" (१ यूहन्ना २ : १५-१७)।

सो यह आवश्यक है कि इस दौड़ में दौड़नेवाला मनुष्य अपना ध्यान साँसारिक वस्तुओं और अभिलाषाओं पर से हटाकर आत्मिक वस्तुओं पर अपना ध्यान रखे। क्योंकि कोई भी मनुष्य इस दौड़ में तब तक सम्मिलित नहीं हो सकता यदि उसने संसार की वस्तुओं से अपना मन न फिराया हो। हम एक मनुष्य के बारे में जानते हैं, जिसने इस दौड़ को अन्त तक धीरज के साथ पूरा किया और उसने कहा, "हे भाईयो, मेरी भावना यह नहीं कि मैं पकड़ चुका हूं : परन्तु केवल यह एक काम करता हूँ, कि जो बातें पीछे रह गई हैं उनको भूलकर, आगे की बातों की ओर बढता हुआ, निशाने की ओर दौड़ा चला जाता हूँ, ताकि वह ईनाम पाऊं, जिसके लिये परमेश्वर ने मुझे मसीह यीशु में ऊपर बुलाया है।" (फिलिप्पियों ३ : १३-१४)। और अपनी इस दौड़ के अन्त में उसने कहा, "मैं अच्छी कुश्ती लड़ चुका हूँ, मैंने अपनी दौड़ पूरी कर ली है, मैंने विश्वास की रखवाली की है। भविष्य में मेरे लिये धर्म का वह मुकुट रखा हुआ है, जिसे प्रभु, जो धर्मी, और न्यायी है, मुझे उस दिन देगा और मुझे ही नहीं, बरन उन सबको भी, जो उसके प्रगट होने को प्रिय जानते हैं।" (२ तीमुथियुस ४ : ७,८)।

सो, सकरे मार्ग पर दौड़ी जानेवाली यह कठिन "मसीही दौड़" दौड़नेवालों को एक बहुत बड़े ईनाम की प्रतिज्ञा देती है। अर्थात्, धर्म का वह मुकुट जो प्रभु स्वयं इस दौड़ में जीतनेवालों को देगा। एक और स्थान पर इस मुकुट को जीवन का मुकुट कहा गया है। लिखा है, "धन्य है वह मनुष्य, जो परीक्षा में स्थिर रहता है ; क्योंकि वह खरा निकलकर जीवन का वह मुकुट पाएगा, जिसकी प्रतिज्ञा प्रभु ने अपने प्रेम करनेवालों को दी है।" (याकूब १ : १२)। इसे पवित्र-शास्त्र में महिमा का मुकुट भी कहा गया है। लिखा है, "और जब प्रधान रखवाला प्रगट होगा, तो तुम्हें महिमा का मुकुट दिया जाएगा जो मुरझाने का नहीं।" (१ पतरस ५ : ४)।

अकसर लोग संसार में तरह-तरह की दौड़ में सम्मिलित होते हैं, परन्तु जो ईनाम उन्हें मिलता है, वह सांसारिक होता है, नाशमान् होता है, जो शीघ्र ही मुरझा जाता है, और पृथ्वी पर इस जीवन के समाप्त हो जाने के बाद उसका कोई महत्त्व नहीं रहता। परन्तु मसीही दौड़ में दौड़नेवालों को प्रभु ईनाम में धर्म, जीवन और महिमा का वह मुकुट देगा, जो कभी मुरझाने का नहीं। क्या आप इस दौड़ में सम्मिलित होना चाहते हैं ? प्रभु चाहता है कि आप भी इस दौड़ में सम्मिलित हों, और अनन्त जीवन के उस कभी न मुरझानेवाले मुकुट को प्राप्त करें। वह सबको यह कहकर निमन्त्रण दे रहा है : "हे सब परिश्रम करनेवालों और बोझ से दबे हुए लोगो, मेरे पास आओ ; मैं तुम्हें विश्राम दूंगा। मेरा जूआ अपने ऊपर उठा लो ; और मुझ से सीखो ; क्योंकि मैं नम्र और मन में दीन हूं : और तुम अपने मन में विश्राम पाओगे। क्योंकि मेरा जूआ सहज और मेरा बोझ हलका है। (मत्ती ११ : २८-३०)।

दूसरे शब्दों में, उसके कहने का अभिप्राय यह है, कि संसार के जिस मैदान में तुम दौड़ रहे हो, वह दुखों और कठिनाइयों से भरा

हुआ है, और उसका अन्त केवल नाश ही है। परन्तु मेरी दौड़ सहज है, और उसका बोझ हलका है, और उसका ईनाम बहूमूल्य अनन्त जीवन है। क्या आप इस दौड़ को न चुनेंगे जो आपको इतने बड़े ईनाम की आशा देती है ? सो मसीह यीशु में विश्वास करें और अपने पापों से मन फिराकर, उसकी आज्ञानुसार बपतिस्मा लेकर, इस दौड़ में आज ही सम्मिलित हो जाएं।

१३

बाइबल की छोटी वस्तुएं

जिस संसार में हम रहते हैं उस में अकसर बड़ी-बड़ी वस्तुओं को बड़ा अधिक महत्व दिया जाता है। लोग अकसर छोटी-छोटी वस्तुओं की ओर ध्यान न देकर बड़ी-बड़ी वस्तुओं के बारे में बातें करते हैं। जैसे कि मान लीजिए, एक बड़ा घर, या एक बड़ा रेडियो, या कोई बड़ा आदमी। संसार में आज बड़ी-बड़ी रेलगाड़ियां व हवाई जहाज़ बनाए जा रहे हैं, बड़ी लम्बी-लम्बी योजनाएँ बनाई जा रही हैं। अर्थात् हम जिधर देख लें बड़ी-बड़ी वस्तुओं का बोल-बाला है। परन्तु आज मैं आपके सामने कुछ ऐसी छोटी-छोटी वस्तुएं रखने जा रहा हूं जिनके बारे में हम पवित्र शास्त्र में पढ़ते हैं। बाइबल की ये छोटी-छोटी वस्तुएं वास्तव में महत्व के दृष्टिकोण से बड़ी ही महान् हैं और इस थोड़े से समय में मेरी इच्छा है कि मैं इन छोटी-छोटी वस्तुओं में छिपे उस बड़े महत्व को आपके सामने रखूं।

सबसे पहिले पवित्र शास्त्र की छोटी-छोटी वस्तुओं में से जिस वस्तु को मैं आपके सामने रखने जा रहा हूं, वह है एक छोटा सा शब्द, 'ऐसा' इस शब्द का वर्णन हमें बाइबल के एक बड़े ही प्रसिद्ध पद में यूं मिलता है। "क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे वह नाश न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए।" (युहन्ना ३ : १६)। यहां यह शब्द 'ऐसा' बड़ा ही महत्वपूर्ण है। अर्थात् जब मनुष्य ने परमेश्वर का विरोध करके अपना सम्बन्ध जीवन के दाता से तोड़ लिया था; और जब वह अपने पाप वा अपराधों में नाश हो रहा था, जब उसके पास बचने की

कोई आशा न थी तो उस समय परमेश्वर ने संसार से ऐसा प्रेम रखा कि उसने मनुष्य के साथ अपना मेल स्थापित करने और उसे पाप के बन्धनों से मुक्त करा के अनन्त जीवन की आशा देने के लिए अपने पुत्र यीशु को सब मनुष्यों के स्थान पर बलिदान होने के लिये दे दिया। जबकि प्रत्येक मनुष्य को अपने-अपने पापों का दन्ड भुगतना और फलस्वरूप अनन्त मृत्यु के दन्ड का सामना करना आवश्यक था तो उस समय परमेश्वर ने सारे जगत से ऐसा प्रेम रखा कि हर एक मनुष्य को उसके पाप का दन्ड देने के विपरीत उसने स्वयं अपने पुत्र को सब मनुष्यों के स्थान पर एक सिद्ध बलिदान के रूप में दे दिया। पवित्र शास्त्र यीशु के विषय में गवाही देकर कहता है "जो पाप से अज्ञात था, उसी को उसने हमारे लिये पाप ठहराया कि हम उसमें होकर परमेश्वर की धार्मिकता बन जाएं।" (२ कुरिन्थियों ५ : २१)। सो परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा!

और हां, परमेश्वर ने संसार से ऐसा प्रेम रखा कि "जब हम निर्बल ही थे तो मसीह ठीक समय पर भक्तिहीनों के लिये मरा।" पवित्र बाइबल कहती है, "किसी धर्मी जन के लिए कोई मरे, यह तो दुर्लभ है, परन्तु क्या जाने किसी भले मनुष्य के लिये कोई मरने का भी हियाव करे। परन्तु परमेश्वर हम पर अपने प्रेम की भलाई इस रीति से प्रगट करता है कि जब हम पापी ही थे तभी मसीह हमारे लिये मरा।" (रोमियों ५ : ६—८)। जी हां, परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा!

क्या आप किसी ऐसे मनुष्य को जानते हैं जो निर्धन, रोगी, वा दरिद्र हो, जिसका शरीर भोजन के अभाव के कारण बिल्कुल निर्बल हो चुका हो, जिसके तन पर वस्त्र के नाम पर कुछ चिथड़े लटक रहे हों, जिसका शरीर रोग से छलनी, ज़ख्मी वा नासूरों से भरा हो, जिसकी देह से सड़ी दुर्गन्ध आ रही हो? मैं जानता हूं कि ऐसे मनुष्य के पास आप खड़े भी न होना चाहेंगे और कदाचित् आप उसकी ओर देखना भी पसन्द न करेंगे। परन्तु परमेश्वर! उसने स्वयं यीशु मसीह में

होकर एक मनुष्य का स्वरूप धारण किया और वह उसी मनुष्य के पास आया कि उसे भूख और प्यास के अभाव से और रोग से बचा ले। हम ऐसे मनुष्य के लिए अपने लोहू की एक बूंद भी बहाना पसन्द न करेंगे। परन्तु यीशु ने उसी मनुष्य को बचाने के लिये अपनी देह का सारा लोहू बहा दिया। हम ऐसे मनुष्य के लिए थोड़ा सा भी कष्ट उठाना पसन्द न करेंगे, परन्तु यीशु ने उसी मनुष्य को बचाने के लिये अपने शरीर पर कोड़ों की मार सही, और अपने प्राण तक दे दिये। हां, यह बात सच है, कि जब हम निर्बल, भक्तिहीन और पापी ही थे तभी मसीह हमारे लिये मरा। वह स्वर्गीय घर को छोड़कर हमारे लिये पृथ्वी पर आया और निर्धन बन गया, ताकि हम उसके द्वारा स्वर्ग में धनी बन जाएं। उसे परमेश्वर ने हमारे लिए पाप ठहराया कि हम उसमें होकर परमेश्वर की धार्मिकता बन जाएं। वह हमारे लिये निर्बल और रोगी बन गया ताकि हम उसके द्वारा आत्मा में बलवान और निरोग बन जाएं। हां परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया!

"वह तुच्छ जाना जाता और मनुष्यों का त्यागा हुआ था, वह दुखी पुरुष था, रोग से उसकी जान पहिचान थी; और लोग उस से मुख फेर लेते थे। वह तुच्छ जाना गया...निश्चय उसने हमारे रोगों को सह लिया और हमारे ही दुखों को उठा लिया तौभी हमने उसे परमेश्वर का मारा कूटा और दुर्दशा में पड़ा हुआ समझा। परन्तु वह हमारे ही अपराधों के कारण घायल किया गया वह हमारे अधर्म के कामों के हेतु कुचला गया; हमारी ही शान्ति के लिए उस पर ताड़ना पड़ी, कि उसके कोड़े खाने से हम लोग चंगे हो जाएं। और हम, "हम तो सबके सब भेड़ों की नाई भटक गए थे; हम में से हर एक ने अपना-अपना मार्ग लिया; और यहोवा ने हम सभों के अधर्म का बोझ उसी पर लाद दिया।

वह सताया गया, तौभी वह सहता रहा और अपना मुंह न खोला, जिस प्रकार भेड़ बध होने के समय वा भेड़ी ऊन कतरने के समय चुप-

चाप शान्त रहती है, वैसे ही उसने भी अपना मुंह न खोला···लोगों के अपराधों के कारण उस पर मार पड़ी···यद्यपि उसने किसी प्रकार का उपद्रव न किया था और उसके मुंह से कभी छल की बात नहीं निकली थी। तौभी यहोवा को यही भाया कि उसे कुचले ? उसी ने उसको रोगी कर दिया।" (यशायाह ५३) क्यों ? क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा !

पवित्र शास्त्र की छोटी वस्तुओं में अब जो वस्तु मेरे सामने है, वह है एक छोटा मनुष्य। उसका नाम ज़क्कई था। जिस प्रकार का धन्धा उस समय ज़क्कई करता था उसे लोगों की दृष्टि में बड़ा ही घृणित समझा जाता था। यूं तो सभी मनुष्य पापी हैं, परन्तु ज़क्कई को लोग एक बहुत बड़ा पापी समझते थे। बाइबल बताती है कि एक बार जब प्रभु यीशु यरीहो नगर में प्रवेश करके जा रहा था तो ज़क्कई "यीशु को देखना चाहता था, कि वह कौन सा है ? परन्तु भीड़ के कारण देख न सकता था ! क्योंकि वह नाटा था। तब उसको देखने के लिये वह आगे दौड़कर एक गूलर के पेड़ पर चढ़ गया, क्योंकि वह उसी मार्ग से जानेवाला था। जब यीशु उस जगह पहुंचा तो ऊपर दृष्टि करके उस से कहा; हे ज़क्कई, झट उतर आ; क्योंकि आज मुझे तेरे घर में रहना अवश्य है। वह तुरन्त उतरकर आनन्द से उसे अपने घर को ले गया। यह देखकर सब लोग कुड़कुड़ाकर कहने लगे, वह तो एक पापी मनुष्य के यहां जा उतरा है। ज़क्कई ने खड़े होकर प्रभु से कहा; हे प्रभु, देख मैं अपनी आधी सम्पत्ति कगालों को देता हूं, और यदि किसी का कुछ भी अन्याय करके ले लिया है तो उसे चौगुना फेर देता हूं। तब यीशु ने उस से कहा; आज इस घर में उद्धार आया है···क्योंकि मनुष्य का पुत्र खोए हुओं को ढूंढ़ने और उनका उद्धार करने आया है।" (लूका १९ : १—१०)।

ज़क्कई कद में अन्य लोगों से अवश्य ही नाटा था, परन्तु उसकी इच्छाएं बड़ी ही लम्बी वा ऊंची थीं। वह यीशु को देखना चाहता था

परन्तु लोगों की भीड़ उसके सामने एक बहुत बड़ी रुकावट थी। जक्कई नाटा अवश्य था, परन्तु उसकी इच्छा दूसरे लोगों से कहीं ऊंची थी। सो वह बिना कोई समय बरबाद किए दौड़कर एक पेड़ के ऊपर चढ़ गया। अब वह यीशु को देख सकता था, बहुत पास से देख सकता था। सो हम देखते हैं, कि जब प्रभु यीशु वहां पहुंचा, तो जक्कई की इच्छा वा दृढ़ निश्चय यीशु की दृष्टि से छिपा न रह सका। वहां जबकि लोगों की बड़ी भीड़ प्रभु के साथ चल रही थी परन्तु प्रभु एक ऐसे मनुष्य को ढूंढ़ रहा था जिसके मन में उसे पाने की इच्छा थी, जो पश्चाताप करने को तैयार था। प्रत्यक्ष ही है कि उस भीड़ में सभी अन्य लोग अपने आपको धर्मी समझते थे, क्योंकि जब यीशु जक्कई के घर जा ठहरा तो वे सब कहने लगे कि वह तो एक पापी मनुष्य के यहां जा ठहरा है। परन्तु प्रभु ने कहा, कि मैं पाप में खोए हुए मनुष्यों को ही ढूंढ़ने वा उनका उद्धार करने आया हूं।

कदाचित् आप ज़क्कई की तरह कद में छोटे या नाटे न हों, परन्तु हो सकता है कि आप विद्या के दृष्टिकोण से छोटे हों, या धन वा सामाजिक दृष्टिकोण से छोटे हों, शायद आप योग्यता के दृष्टिकोण से छोटे हों। परन्तु जक्कई की यह कमज़ोरी उसे यीशु के पास आने से रोक न सकी। क्योंकि ज़क्कई यीशु को देखना चाहता था; उसके पास ऊंची इच्छा व दृढ़ निश्चय था। यीशु जक्कई की तरह आज आपका भी उद्धार कर सकता है, यदि आप ज़क्कई की तरह दौड़कर उसके पास आने को तैयार हैं, यदि आप ज़क्कई की तरह हर एक रोकनेवाली वस्तु का सामना करने के लिये तैयार हैं; यदि आप ज़क्कई की तरह अपने पापों से पश्चाताप करने के लिये तैयार हैं। यीशु कहता है, "देख मैं द्वार पर खड़ा हुआ खटखटाता हूं; यदि कोई मेरा शब्द सुनकर द्वार खोलेगा, तो मैं उसके पास भीतर आकर उसके साथ भोजन करुंगा, और वह मेरे साथ।" (प्रकाशितवाक्य ३ : २०)।

प्रभु यीशु ने कहा, जो कोई मुझ पर विश्वास करेगा और पाप से

अपना मन फिराएगा, और मेरा अँगीकार करेगा, और अपने पापों की क्षमा के लिए मेरे नाम से बपतिस्मा लेगा, मैं उसका उद्धार करुंगा। (मरकुस १६ : १६; प्रेरितों २ : ३८; रोमियों १० : १०) और उसने कहा, कि मैं एक दिन वापस आकर अपने सब अनुयायियों को अपने साथ ले जाऊंगा, ताकि जहाँ मैं रहूं वहाँ वे भी मेरे साथ रहें। (यूहन्ना १४ : १—३)।

और हाँ, अन्त में, मैं आपको यह भी बता दूं, कि प्रभु यीशु ने कहा, कि संसार में हर एक मनुष्य एक यात्रा कर रहा है, और जबकि बहुतेरे लोग एक ऐसे मार्ग पर चल रहे हैं जो अन्त में विनाश को पहुंचाता है, परन्तु प्रभु ने कहा कि "सकेत फाटक से प्रवेश करो···क्योंकि सकेत है वह फाटक और सकरा है वह मार्ग जो जीवन को पहुंचाता है।" (मत्ती ७ : १३, १४)। अर्थात् जीवन का मार्ग तंग है और उसका फाटक सकेत या छोटा है। क्या आप चौड़े फाटक से प्रवेश कर रहे हैं या उस छोटे फाटक से जो जीवन को पहुंचाता है? यदि आप छोटे फाटक से प्रवेश करना चाहते हैं, तो आवश्यक है कि आप एक बालक के समान छोटे बनें, क्योंकि प्रभु यीशु ने कहा, "यदि तुम न फिरो और बालकों के समान न बनों, तो स्वर्ग के राज्य में प्रवेश करने नहीं पाओगे। जो कोई अपने आपको इस बालक के समान छोटा करेगा, वह स्वर्ग के राज्य में बड़ा होगा।" (मत्ती १८ : ३, ४)।

१४

सकेत द्वार

बाइबल में जब हम नए नियम की पुस्तकों को पढ़ते हैं तो हमारा परीचय प्रभु यीशु की बहुतेरी शिक्षाओं से होता है। यीशु की शिक्षाओं से सम्बन्धित एक बड़ी विशेष बात यह थी कि वह अधिकार के साथ शिक्षा देता था। परन्तु उसकी अनेकों शिक्षाओं में से एक बड़ी ही महत्वपूर्ण शिक्षा द्वार के भीतर प्रवेश करने के सम्बन्ध में थी। यह बात कदाचित् आपको कुछ विचित्र सी प्रतीत हो, परन्तु वास्तव में यीशु की यह महत्त्वपूर्ण शिक्षा उसकी सभी अन्य शिक्षाओं का निचोड़ थी। वह सब कुछ जो उस ने किया और कहा, उस सब का केवल एक ही विशेष उद्देश्य था, और वह यह कि मनुष्य जीवन के उस द्वार के भीतर प्रवेश पाए। उसके ही अपने शब्दों में, हम पढ़ते हैं, "सकेत फाटक से प्रवेश करो, क्योंकि चौड़ा है वह फाटक और चाकल है वह मार्ग जो विनाश को पहुंचाता है, और बहुतेरे हैं जो उस से प्रवेश करते हैं। क्योंकि सकेत है वह फाटक और सकरा है वह मार्ग जो जीवन को पहुंचाता है, और थोड़े हैं जो उसे पाते हैं।" (मती ७ : १३, १४)। परन्तु एक और स्थान पर उसने कहा, "सकेत द्वार से प्रवेश करने का यत्न करो, क्योंकि मैं तुम से कहता हूं, कि बहुतेरे प्रवेश करना चाहेंगे, और न कर सकेंगे।" (लूका १३ : २४)।

सो यह एक ऐसा द्वार है जिसमें लगभग सभी लोग प्रवेश करना चाहेंगे। और इसके बहुत से कारण हैं। सबसे प्रमुख बात यह है, कि यह द्वार हमें उस आत्मिक घर में प्रवेश दिलाता है, जहां प्रभु यीशु ने हमें सिखाया कि हम अपना धन इकट्ठा करें (मत्ती ६ : २०); और

जहां मनुष्य अपने सारे परिश्रम के बाद विश्राम पाएगा, जिस घर में परमेश्वर अपने लोगों के साथ रहेगा, और जहां पृथ्वी पर की सी बातें, अर्थात् दुख, कठिनाईयां, आंसू बहाना, मृत्यु, शोक, विलाप और पीड़ा इत्यादि न होंगी। (प्रकाशितवाक्य २१ : ३, ४)।

यह द्वारा अनन्त जीवन का द्वार है। इस द्वार के भीतर प्रवेश करके मनुष्य जीवन के उस वृक्ष के पास पहुँचता है जिसमें अनन्त जीवन का भोजन है, उस द्वार के भीतर जीवन का जल है। यदि मनुष्य जीवन के महत्त्व को जानता है तो वह इस द्वार के बाहर रहना न चाहेगा।

यह द्वार मुक्ति का द्वार है। जिसमें प्रवेश करके मनुष्य उस भयानक दन्ड से बच सकता है, जिसका सामना अधर्मियों को करना पड़ेगा। कई वर्ष हुए जब एक स्थान पर चार मंज़िल की एक इमारत में एकाएक आग लग गई। जैसे ही लोगों को पता चला वे सब कुछ छोड़कर एकदम उस बड़े द्वार की ओर लपके जो आग से बच निकलने का एकमात्र द्वार था। कुछ वर्ष हुए जब मैंने एक मैग्जीन में एक और भयानक आग की दुर्घटना के बारे में पढ़ा था। यह आग सन् १९०३ में शिकागो शहर के एक थिएटर में लगी थी, जिस में ५९० आदमी आग से जलकर मर गए। एक व्यक्ति ने, जो इस दुर्घटना की जगह उपस्थित था, बाद में बताया कि जब आग बुझानेवाले लोग वहां पहुंचे तो थिएटर के द्वार उनसे न खुल सके क्योंकि दरवाज़ों के सामने लाशों के ढेर लगे थे। प्रत्यक्ष ही है कि सब लोग घबराकर द्वारों के पास आए ताकि अपनी जान बचाकर बाहर निकल जाएं, परन्तु दुर्घटना इतनी तेजी से हुई कि वे बच न सके।

किन्तु इस से भी कहीं अधिक भयानक स्थिति उस दिन होगी जिसे बाइबल में न्याय का दिन वा प्रभु का दिन कहा गया है, जबकि बहुतेरे बाहर के उस अन्धियारे में डाले जाएंगे जहां रोना और दांत पीसना होगा (मत्ती २२:१३); वह झील जो आग और गन्धक से जलती रहती

है। (प्रकाशितवाक्य २१:८) । और इस भयानक दन्ड से बचकर निकलने का केवल एक ही मार्ग है, अर्थात् "सकेत द्वार"। जैसे कि अचानक भूकम्प आ जाता है, या आग लग जाती है या और कोई दुर्घटना हो जाती है, वैसे ही न्याय का वह महान दिन भी एकाएक आ जाएगा। और उस दिन बहुतेरे बचने के लिये उस "सकेत द्वार" में प्रवेश करना चाहेंगे, परन्तु समय हाथ से निकल चुका होगा, और कितने द्वार के निकट ही पहुंच कर नाश हो जाएंगे। क्योंकि यह वैसा ही होगा जैसे नूह के दिन थे। (मत्ती २४ :३७) । काश, लोग आज जबकि समय है, इस बात पर ध्यान दें और "सकेत द्वार से प्रवेश करने का यत्न करें।"

सकेत द्वार ! जो कि हमारे आत्मिक घर का द्वार है, और अनन्त जीवन का द्वार है, और अधर्मियों के दन्ड से बचकर मुक्ति पाने का द्वार है। वास्तव में, यह द्वार कितना महत्त्वपूर्ण और चाहने योग्य द्वार है। सो, इस बात को ध्यान में रखकर, हमारे सामने यह प्रश्न आता है कि "ऐसा क्यों है, कि बहुतेरे इसके भीतर प्रवेश करना चाहेंगे, परन्तु न कर सकेंगे ?" वे कौन से कारण हैं जिनके फलस्वरूप लोग उसी द्वार के भीतर प्रवेश न कर सकेंगे जिसके भीतर वे प्रवेश करना चाहेंगे ? सो आईए, अब इस थोड़े से समय में हम ऐसे कुछ कारणों के ऊपर विचार करें जिनके परिणाम स्वरूप सकेत द्वार के पास पहुंचने के बाद भी लोग वास्तव में उसके भीतर प्रवेश न कर सकेंगे।

कुछ लोग जीविका के घमंड के कारण उसके भीतर प्रवेश न कर सकेंगे। जिस द्वार के विषय में हम देख रहे हैं, वह वास्तव में बड़ा ही सकेत या छोटा है। यह प्रवेश द्वार बड़ा ही नीचा है, जिसके भीतर गर्व व घमन्ड से भरे लोगों को प्रवेश करने में बड़ी कठिनाई होती है। स्वर्ग का प्रवेश द्वार इतना तंग है कि उसके भीतर केवल घुटनों के बल चलकर ही प्रवेश किया जा सकता है। और इसलिये, वे जो अपने आपको झुकाना नहीं चाहते और अपने आपको नीचा करके इस से प्रवेश नहीं करना चाहते, वे इसके भीतर न जा सकेंगे। बुद्धिमान उपदेशक कहता

है, "विनाश से पहिले गर्व, और ठोकर खाने से पहिले घमन्ड होता है।" (नीतिवचन १६ : १८)। यीशु का एक प्रेरित कहता है, "इसलिये परमेश्वर के बलवन्त हाथ के नीचे दीनता से रहो, जिस से वह तुम्हें उचित समय पर बढ़ाए।" (१ पतरस ५ : ६)। प्रभु यीशु स्वयं दीनता का प्रतीक था, उसने दीनता व नम्रता का पाठ सिखाया। उस ने एक भवन में नहीं, परन्तु नम्रता के प्रतीक एक स्थान, अर्थात् चरनी में जन्म लिया। उसके मुख्य शिष्य बड़े-बड़े राजकुमार या धनी लोग नहीं, परन्तु साधारण मछुए और चुंगी लेनेवाले थे। उसका मुकुट पैने नुकीले कांटों से गुथा हुआ था और उसका सिंहासन एक क्रूस था। जब लोग उस से पूछना चाहते थे, कि स्वर्ग के राज्य में बड़ा कौन है, "इस पर उस ने एक बालक को पास बुलाकर उन के बीच में खड़ा किया। और कहा, मैं तुमसे सच कहता हूं, यदि तुम न फिरो और बालकों के समान न बनो, तो स्वर्ग के राज्य में प्रवेश करने नहीं पाओगे। जो कोई अपने आप को इस बालक के समान छोटा करेगा, वह स्वर्ग के राज्य में बड़ा होगा।" (मत्ती १८ : १-४) इसलिये यह आवश्यक है कि जो कोई स्वर्ग के प्रवेश द्वार से भीतर जाने की इच्छा रखता है, वह अपने आपको छोटा बनाए, अपने आपको झुकाए, नम्र और दीन बने। क्योंकि बहुतेरे जीविका के घमन्ड के कारण जीवन के उस द्वार में प्रवेश न करने पाएंगे।

फिर, बहुतेरे ऐसे हैं जो प्रभु की आज्ञा को सुन-सुनकर टालते रहते हैं, और सोचते हैं कि वे फिर किसी अवसर पर उसकी आज्ञा मानेंगे। ऐसे लोग उस द्वार के भीतर प्रवेश न करने पाएंगे। शताब्दियों से लाखों लोग इसी विचार को अपने साथ लेकर सदा के लिये इस संसार को छोड़कर चले गए। और एक दिन वे सब प्रभु के न्यायासन के सामने खड़े होंगे, और अपने विषय में उसे कहते सुनेंगे, "और यह अनन्त दन्ड भोगेंगे, परन्तु धर्मी अनन्त जीवन में प्रवेश करेंगे।" (मत्ती २५ : ४६)। पवित्र बाइबल कहती है, कि तुम "नहीं जा

कि कल क्या होगा : सुन तो लो, तुम्हारा जीवन है ही क्या ? तुम तो मानों भाप समान हो, जो थोड़ी देर दिखाई देती है, फिर लोप हो जाती है।" (याकूब ४ : १४)। वर्षों से मैंने अनेकों ऐसे लोगों के बारे में सुना है जिन्होंने प्रभु यीशु की आज्ञानुसार अपने पापों की क्षमा के लिये बपतिस्मा लेने का निश्चय किया, परन्तु किसी न किसी कारण से वे अपने निश्चय को कुछ दिनों के लिये टालते रहे। परन्तु वे मृत्यु से न बच सके। अचानक किसी दुर्घटना या बीमारी के कारण उनकी मृत्यु हो गई। क्या उन्हें फिर अवसर प्राप्त होगा ? जी नहीं। क्योंकि मनुष्यों के लिये एक बार मरना और फिर न्याय का होना निश्चित है। (इब्रानियों ९:२७)। वे मूढ़ता के लोक में अपने घमन्ड में सिर उठाकर चलते रहे, जबकि सुनहरे क्षण बीतते रहे। दुर्घटना की सूचना देनेवाले एक यन्त्र के समान, पवित्र शास्त्र के ये शब्द आज भी लोगों को आनेवाले भयानक दन्ड से बच निकलने की सूचना दे रहे हैं : "देखो, अभी वह प्रसन्नता का समय है; देखो, अभी वह उद्धार का दिन है।" (२ कुरिन्थियों ६:२)।

कुछ लोग स्वर्ग के सकेत द्वार के भीतर इसलिये भी प्रवेश करने नहीं पाएंगे, क्योंकि वे केवल "प्रवेश करना चाहेंगे"। यीशु ने कहा "सकेत द्वार से प्रवेश करने का **यत्न करो**, क्योंकि मैं तुम से कहता हूं कि बहुतेरे प्रवेश करना चाहेंगे, और न कर सकेंगे।" यहां इन दो शब्दों, अर्थात् यत्न करने और चाहने में एक बहुत बड़ा अन्तर है। जीवन के सकेत द्वार के भीतर वे लोग प्रवेश न पा सकेंगे जो उसके भीतर केवल प्रवेश करना ही चाहेंगे, परन्तु उसके भीतर केवल वही लोग जा सकेंगे जो भीतर प्रवेश करने का यत्न करते हैं। जीवन का यह द्वार इतना बड़ा नहीं है जिसके भीतर जब जी चाहा आसानी से प्रवेश किया जा सकता है, परन्तु यह द्वार बड़ा ही सकेत है, और इसके भीतर जाने के लिये यत्न करना बड़ा ही आवश्यक है। किन्तु, इसका अर्थ क्या है ? प्रभु यीशु ने कहा, "धन्य

हैं वे, जो धर्म के कारण सताए जाते हैं, क्योंकि स्वर्ग का राज्य उन्हीं का है।" (मत्ती ५ : १०)

फिर, कुछ अन्य लोग, इसके भीतर इस कारण प्रवेश न कर पाएंगे क्योंकि वे अपने साथ अवैध वस्तुओं को लेकर प्रवेश करना चाहते हैं। प्रत्येक देश में भीतर घुसने से पहिले, एक ऐसा स्थान होता है जहाँ लोगों को अपने-अपने सामान की जांच करवानी होती है, और यदि कोई भी ऐसी वस्तु उनके पास पाई जाती है जो अवैध हो, तो उसे लेकर उन्हें जाने की अनुमति नहीं दी जाती। प्रेरित पौलुस कहता है, "शरीर के काम तो प्रगट हैं, अर्थात् व्यभिचार, गन्दे काम, लुचपन, झगड़ा, ईर्ष्या, क्रोध, विरोध, फूट, विधर्म, डाह, मतवालापन, लीलाक्रीड़ा, और इनके ऐसे और और काम हैं, इन के विषय में मैं तुम को पहिले से कह देता हूं, जैसा पहिले कह भी चुका हूं, कि ऐसे-ऐसे काम करनेवाले परमेश्वर के राज्य के वारिस न होंगे।" (गलतियों ५ : १९-२१)। चोर अपने साथ चोरी का सामान लेकर प्रवेश न कर सकेगा और न पियक्कड़ अपनी बोतल हाथ में लेकर भीतर जा सकेगा।(१ कुरिन्थियों ६:१०)। कोई भी वस्तु जो परमेश्वर के राज्य के नियम अनुसार ग़ैर कानूनी है उसे लेकर कोई भी व्यक्ति स्वर्ग के द्वार के भीतर न जा सकेगा।

सो मैंने आपको बहुतेरे ऐसे कारण बताए जिनके फलस्वरूप चाहते हुए भी अनेकों लोग जीवन के सकेत द्वार के भीतर प्रवेश न कर सकेंगे। परन्तु यदि आप प्रभु यीशु मसीह में विश्वास करेंगे और उसकी आज्ञाओं को मानेंगे तो, वह आपका उद्धार करेगा और उसके द्वारा आप अवश्य ही उसके राज्य में प्रवेश करेंगे। क्योंकि उस ने कहा, "मार्ग, और सच्चाई, और जीवन मैं ही हूं; बिना मेरे द्वारा कोई पिता के पास नहीं पहुंच सकता।" (यूहन्ना १४ : ६)। प्रेरित पौलुस कहता है "सो अब जो मसीह यीशु में हैं, उन पर दन्ड की आज्ञा नहीं।" (रोमियों ८ : १)। और एक और जगह लिखकर वह बताता

है कि किस तरह से मनुष्य वास्तव में मसीह के भीतर हो सकता है, उसने कहा, "और तुम में से जितनों ने मसीह में बपतिस्मा लिया है उन्होंने मसीह को पहिन लिया है।" (गलतियों ३ : २७)। क्या आप अनन्त जीवन के द्वार के भीतर प्रवेश करना चाहते हैं ? तो अवश्य है कि पहिले आप मसीह में विश्वास करके, और अपने पापों से मन फिराकर, और अपने पापों की क्षमा के लिये बपतिस्मा लेकर अपने आपको उसके भीतर जाने के लिये तैयार करें।

सामर्थ-पूर्ण यीशु

यदि संसार में सृष्टि के आरम्भ से लेकर कोई ऐसा व्यक्ति हुआ है जिसके जीवन से मनुष्य सबसे अधिक प्रभावित हुआ है, तो वह व्यक्ति है यीशु मसीह। परन्तु यीशु के प्रभावपूर्ण जीवन का कारण न तो उच्च शिक्षा था, न धन, और न ही किसी प्रकार की राजनीतिक प्रसिद्धी। क्योंकि न तो उसने किसी कालेज से कोई शिक्षा प्राप्त की थी और न ही उस ने कभी कोई पुस्तक लिखी। धन सम्पत्ति के नाम पर उसके पास अपना केवल एक जोड़ा वस्त्र था, और उसके जीवन की अन्य आवश्यकताएं मुख्य रूप से उसके कुछ मित्रों की उदारता पर निर्भर रहती थीं। और जहाँ तक किसी प्रकार की राजनीतिक प्रसिद्धी का प्रश्न है, तो उसने कहा, "कि मेरा राज्य इस जगत का नहीं, यदि मेरा राज्य इस जगत का होता, तो मेरे सेवक लड़ते।" (यूहन्ना १८:३६)। सांसारिक राजनीतिक बातों से उसका कोई सम्बन्ध न था। क्योंकि वह स्वर्ग से पृथ्वी पर केवल कुछ ही समय के लिये आया था, और अपने काम को समाप्त करके वह अपने पिता के पास स्वर्ग में वापस चला गया था। और यह बात भी बड़ी ही ध्यान देने योग्य है, कि अपनी मृत्यु से पूर्व उस ने लोगों के बीच में केवल लगभग साढ़े तीन वर्ष तक ही काम किया, क्योंकि अभी वह जवान ही था जबकि वह पकड़वाया और मारा गया। किन्तु तौभी, संसार में अब तक जितने भी बड़े-बड़े सम्राट वा योद्धा हुए, ज्ञानी, धनी वा बुद्धिमान लोग हुए, वे सब मिलकर भी संसार में लोगों पर इतना अधिक प्रभाव न डाल सके, जितना कि यीशु के अकेले जीवन से थोड़े से ही समय में लोग प्रभावित हुए। और उस का प्रभाव इतना गहरा था कि धीरे-धीरे कम होकर मिट

जाने के विपरीत, आनेवाली पीढ़ियों में वह इतना अधिक बढ़ता चला गया कि आज जबकि यीशु को स्वर्ग में वापस गए लगभग दो हज़ार वर्ष बीत चुके हैं, परन्तु आज भी संसार का कोई देश या जाति उसके प्रभाव से रहित नहीं है।

इन बातों को ध्यान में रखकर, स्वाभाविक ही है, कि आप शायद यह जानना चाहेंगे, कि उसके इतने अद्‌भुत प्रभावपूर्ण जीवन का कारण क्या था ? इसका कारण सिवाए इसके और कुछ नहीं था, कि यीशु परमेश्वर का पुत्र था। जब वह इस पृथ्वी पर था, उसने कहा, "मैं अपनी इच्छा नहीं, वरन अपने भेजनेवाले की इच्छा पूरी करने के लिये स्वर्ग से उतरा हूं।" (यूहन्ना ६ : ३८)। निःसंदेह, यीशु के पास अद्‌भुत सामर्थ थी।

सबसे पहिले, उसकी सामर्थ को हम स्वयं उसके जीवन में देखते हैं। वह एक साधारण वस्तु को बड़ी ही अद्‌भुत वस्तु में बदलने की सामर्थ रखता था। एक जगह हम पढ़ते हैं, कि गलील में काना नाम स्थान पर एक शादी थी, जिसमें यीशु को भी निमन्त्रित किया गया था। वहां रीति के अनुसार ब्याह में आमन्त्रित लोगों को दाखरस बांटा जाता था। सो वहां जब दाखरस बाँटा गया तो कुछ ही समय में सारा दाखरस समाप्त हो गया। जब यीशु को इस बात का पता चला, तो उसने सेवकों से कहा, कि पास धरे मटकों को पानी से भर दो—ये मटके इतने बड़े-बड़े होते थे कि इन में दो-दो, तीन-तीन मन पानी समा जाता था—सो यीशु की आज्ञा पाकर उन्होंने मटकों को पानी से भर दिया। कुछ ही देर में प्रभु ने उन से कहा, कि अब इसमें से निकालकर सबसे पहिले भोज के प्रधान के पास ले जाओ। सो जब वह ले जाया गया तो उसे पीकर बड़ा ही आश्चर्य हुआ, कि वह दाखरस उस पहिले दाखरस से कहीं अधिक स्वादिष्ट था जो पहिले बांटा गया था !

परन्तु यीशु की सामर्थ केवल पानी को दाखरस में बदल डालने तक ही सीमित न थी। वह लोगों के साधारण जीवनों को लेकर बड़े-बड़े महत्त्वपूर्ण जीवनों में बदल डालने की भी सामर्थ रखता था। जब वह संसार में था, तो उसने कुछ लोगों को अपना चेला बनाया—ये सब चेले लगभग अशिक्षित, बहुत ही साधारण, मछली पकड़नेवाले, या चुंगीलेनेवालों में से थे। परन्तु यीशु के साथ लगभग तीन वर्ष ही रहने के बाद, उनके जीवनों में इतना बड़ा परिवर्तन आ गया था, कि उन्होंने अपने समय के लोगों में एक बड़ी हलचल मचा दी थी। लोग उनके हियाव और कामों को देखकर चकित होकर कहते थे, कि क्या ये वही अनपढ़ और साधारण लोग नहीं हैं? उनके विश्वास और दृढ़ निश्चय को देखकर लोग आश्चर्य से भर जाते थे। (प्रेरितों ४ : १३)। किन्तु, उनके जीवन में इतने बड़े बदलाव का कारण उनका पूर्ण समर्पण था। उन्होंने अपने आप को पूर्ण रूप से यीशु को दे दिया था। यीशु ने जब उन्हें चुना था, तो लिखा है, "यीशु ने उन से कहा; मेरे पीछे चले आओ; मैं तुमको मनुष्यों के मछुवे बनाऊंगा।" और हम देखते हैं कि "वे तुरन्त जालों को छोड़कर उसके पीछे हो लिये।" फिर, और कुछ आगे बढ़कर, उस ने ज़ब्दी के पुत्र याकूब, और उसके भाई यूहन्ना को, नाव पर जालों को सुधारते देखा : उसने तुरन्त उन्हें बुलाया; और वे अपने पिता ज़ब्दी को मजदूरों के साथ नाव पर छोड़कर, उसके पीछे चले गए। (मरकुस १ : १६-२०)। कुछ और आगे बढ़कर, हम देखते हैं कि "जाते हुए उस ने हलफ़ई के पुत्र लेवी को चुंगी की चौकी पर बैठे देखा, और उस से कहा; मेरे पीछे हो ले। और वह उठकर उसके पीछे हो लिया।" (मरकुस २ : १५)। अर्थात्, वे सब कुछ छोड़कर उसके पीछे हो लिये। उन्होंने जब अपने आपको प्रभु को दिया, तो उन्होंने अपने आपको उसे पूर्ण रूप से दे दिया। अर्थात्, पूर्ण समर्पण! और वास्तव में यही प्रभु चाहता है। जब हम अपने साधारण जीवनों को, जिस स्थिति में भी हों, प्रभु को पूर्ण रूप से सौंप देते हैं, तो हमारे जीवनों को वह अपनी सामर्थ से एक नए अद्भुत जीवन में

बदल डालता है। मैंने अकसर बहुतेरे लोगों को कहते सुना है, कि हम ने प्रभु यीशु को ग्रहण किया है या हम यीशु के अनुयायी हैं, परन्तु हमारे जीवनों में कोई विशेष परिवर्तन नहीं हुआ, उन्हें अपने जीवन में कोई खासियत नज़र नहीं आती। सैंकड़ों लोग अपने आपको मसीही या मसीह का अनुयायी कहते हैं, परन्तु उनके जीवन उतने ही सांसारिक हैं जितने कि ग़ैर-मसीही लोगों के। इसका क्या कारण है? इसका केवल एक ही कारण है, कि उन्होंने अपने आपको प्रभु यीशु को पूर्ण रूप से नहीं दिया है; वे सब कुछ छोड़कर उसके पीछे नहीं चल रहे हैं। यदि वे पूरी तरह से अपने आपको यीशु के हवाले कर दें तो वह लोगों के साधारण जीवनों को लेकर उन्हें असाधारण में बदलने की सामर्थ रखता है। एक दिन उसने कुल पांच रोटियां वा दो मछलियां हाथ में लीं, और जब वह भोजन बांटा गया तो लगभग ५००० लोग खाकर तृप्त हुए, और बारह टोकरियाँ बचे हुए टुकड़ों की उठाई गईं। हां, यह सच है, यदि आज आप अपने जीवन को उस सामर्थ-पूर्ण प्रभु को पूरी तरह से सौंप दें तो वह आपके जीवन को एक ऐसे नए व अद्भुत जीवन में बदल डालेगा, कि अन्य लोग आश्चर्य चकित होकर पूछेंगे, कि क्या यह वही साधारण मनुष्य नहीं है?

प्रभु यीशु की सामर्थ न केवल लोगों के जीवनों को ही बदल सकती है, परन्तु यीशु चंगा करने की भी सामर्थ रखता है। बाइबल में हम यीशु के बारे में पढ़ते हैं, कि उस ने अन्धों को आखें दीं, लंगड़ों को चलने की सामर्थ दी, और गूंगो को बोलने की ताकत दी। आज संसार में अनेकों लोग आत्मिक दृष्टिकोण से अन्धे हैं; क्योंकि वे सत्य के मार्ग की ओर न फिरकर झूठ की प्रतीति कर रहे हैं। प्रभु उनकी आत्मिक आंखों को खोलने की सामर्थ रखता है, यदि वे उसकी ओर फिरें और उसकी मानें। इसी प्रकार, बहुतेरे लोग आत्मिक दृष्टिकोण से लंगड़े हैं; क्योंकि वे आत्मिक बातों में ठीक से नहीं चल रहे हैं; और बहुतेरे गूंगे हैं, क्योंकि वे जानते हुए भी प्रभु के नाम का अंगीकार

नहीं करते, परन्तु यदि वे प्रभु के पास आएं और उसकी मानें, तो वह उन्हें चंगा करने की सामर्थ रखता है। और न केवल वह चंगा करने की ही सामर्थ रखता है, परन्तु वह मुर्दों को भी जिलाने की सामर्थ रखता है। पवित्र बाइबल हमें बताती है, कि यीशु ने चार दिन के मरे लाज़र नाम के एक मनुष्य को जीवित करके अपनी सामर्थ को प्रगट किया। (यूहन्ना ११)। परन्तु बाइबल हमें यह भी बताती है, कि वे लोग जिन्होंने परमेश्वर के वरदान यीशु मसीह को अपने जीवनों में स्वीकार नहीं किया है, वे अपने पापों वा अपराधों में मरे हुए हैं, क्योंकि वे परमेश्वर से दूर उसकी इच्छा के विरोध में अपना जीवन बिता रहे हैं। (यशायाह ५९ : १, २; यूहन्ना ३ : १६ तथा ८ : २४; रोमियों ६ : २३)। परन्तु यीशु मनुष्य को पाप के अधोलोक में से निकालकर एक नया जीवन देने की सामर्थ रखता है। और इस कारण पवित्र शास्त्र कहता है, "सो यदि कोई मसीह में है तो वह नई सृष्टि है।" (२ कुरिन्थियों ५ : १७)।

मनुष्य को पाप के दन्ड से बचाने के लिये यीशु ने अपने आप को बलिदान कर दिया। संसार में सभी मनुष्य पापी हैं, परन्तु यीशु एक सिद्ध मनुष्य था—इसलिये वह सब मनुष्यों के लिये एक सिद्ध बलिदान ठहरा। अर्थात् उसने मनुष्यों के पाप अपने ऊपर ले लिये और पाप का दन्ड सहा। पवित्र शास्त्र कहता है, "ताकि परमेश्वर के अनुग्रह से हरएक मनुष्य के लिये मृत्यु का स्वाद चखे।" (इब्रानियों २ : ९)। सो न केवल यीशु के जीवन में परन्तु यीशु की मृत्यु में भी अद्भुत सामर्थ है। क्रूस के ऊपर अपनी मृत्यु से पूर्व प्रभु ने कहा था, "और मैं यदि पृथ्वी पर से ऊंचे पर चढ़ाया जाऊंगा, तो सबको अपने पास खींचूंगा।" (यूहन्ना ८ : ३२)। वास्तव में क्रूस पर हुई यीशु की मृत्यु में एक अद्भुत सामर्थ है। प्रेरित पौलुस के कथन अनुसार, "क्योंकि क्रूस की कथा नाश होनेवालों के निकट मूर्खता है, परन्तु हम उद्धार पानेवालों के निकट परमेश्वर की सामर्थ है।" (१ कुरिन्थियों १ : १८)।

क्या आप यीशु के क्रूस की कथा के ऊपर विश्वास करते हैं? क्या आप यीशु की सामर्थ में विश्वास करते हैं? मित्रो, आपको पाप का जीवन व्यतीत करने और मृत्यु के बाद पाप का दन्ड प्राप्त करने की कोई आवश्यकता नहीं है, क्योंकि यीशु ने आपके स्थान पर स्वयं मृत्यु का स्वाद चख लिया है, और वह आपको पाप के दन्ड से बचाकर उद्धार देने की सामर्थ रखता है। क्या आप उसके इस निमन्त्रण को स्वीकार करेंगे? उसने कहा, "जो विश्वास करे और बपतिस्मा ले उसी का उद्धार होगा, परन्तु जो विश्वास न करेगा वह दोषी ठहराया जाएगा। (मरकुस १६ : १६)।

मेरी आशा है कि आप प्रभु की आज्ञा मानने के लिये शीघ्र ही कदम उठाएंगे, और अपने आपको उसके सामर्थ पूर्ण हाथों में पूर्ण रूप से सौंप देंगे ताकि वह आपका उद्धार करे और आपके जीवन को एक नए जीवन में बदल डाले।

१६

प्रसन्नता का रहस्य

हम अपने आज के पाठ का आरम्भ पवित्र बाइबल में से भजन संहिता की पुस्तक के पहिले अध्याय को पढ़कर करेंगे। और हमारे आज के पाठ का विशेष उद्देश्य इस बात के सम्बन्ध में होगा, कि मनुष्य वास्तविक प्रसन्नता किस तरह से प्राप्त कर सकता है। इस से पहिले कि मैं बाइबल में से इस अध्याय को पढ़ना आरम्भ करूं, मैं आपको बताना चाहता हूं कि यहां बाइबल का लेखक एक प्रसन्न मनुष्य को धन्य कहकर सम्बोधित करता है। सो आईये, हम पढ़ना आरम्भ करें :

"क्या ही धन्य है वह पुरुष जो दुष्टों की युक्ति पर नहीं चलता और न पापियों के मार्ग में खड़ा होता; और न ठट्ठा करनेवालों की मन्डली में बैठता है। परन्तु वह तो यहोवा (परमेश्वर) की व्यवस्था से प्रसन्न रहता; और उसकी व्यवस्था पर रात दिन ध्यान करता रहता है। वह उस वृक्ष के समान है, जो बहती नालियों के किनारे लगाया गया है। और अपनी ऋतु में फलता है, और जिसके पत्ते कभी मुरझाते नहीं। इसलिये जो कुछ वह पुरुष करे वह सफ़ल होता है।" परन्तु "दुष्ट लोग ऐसे नहीं होते, वे उस भूसी के समान होते हैं, जो पवन से उड़ाई जाती है। इस कारण दुष्ट लोग अदालत में स्थिर न रह सकेंगे, और न पापी धर्मियों की मन्डली में ठहरेंगे; क्योंकि यहोवा धर्मियों का मार्ग जानता है, परन्तु दुष्टों का मार्ग नाश हो जाएगा।"

प्रसन्नता एक ऐसी वस्तु है जिसकी खोज में मनुष्य रात दिन लगा रहता है। मनुष्य हर प्रकार के दुख वा कष्ट से घृणा करता है, परन्तु

वह प्रसन्नता की इच्छा रखता है। और इसमें कोई संदेह नहीं, कि परमेश्वर ने मनुष्य को प्रसन्नता के लिये ही रचा है। परमेश्वर चाहता है कि मनुष्य सदा खुश रहे। सो जब हम बाइबल के आरम्भ के पृष्ठों को पढ़ते हैं, जहां हमें सृष्टि के आरम्भ के बारे में मिलता है, हम देखते हैं कि आरम्भ में परमेश्वर ने मनुष्य को नर और नारी करके रचा। परन्तु इस से भी पहिले हम एक विशेष बात यह देखते हैं, कि मनुष्य की सृष्टि से पहिले परमेश्वर ने मनुष्य की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिये और मनुष्य को प्रसन्न रखने के लिए प्रत्येक वस्तु की रचना की। जैसे कि हम देखते हैं, कि उसने उनके रहने के लिए एक सुन्दर स्थान की स्थापना की, खाने पीने के लिये हर प्रकार की अच्छी-अच्छी वस्तुओं को उत्पन्न किया। अर्थात्, परमेश्वर चाहता है कि मनुष्य प्रसन्नता पूर्वक रहे, सो उसने मनुष्य को प्रसन्न रखने के लिये उसकी आवश्यकता की सारी वस्तुएं, उसे संसार में लाने से पहिले ही उत्पन्न कर दीं।

परन्तु मनुष्य की आवश्यकताएं दोहरी हैं। क्योंकि मनुष्य स्वभाव में न केवल शारीरिक ही है परन्तु वह एक आत्मिक प्राणी है। अर्थात् उसके पास एक आत्मा है, क्योंकि वह परमेश्वर के स्वरूप व समानता पर बनाया गया है। सो इसलिये परमेश्वर ने मनुष्य को आत्मिक दृष्टिकोण से प्रसन्नता प्रदान करने के लिये अपना वचन दिया है, जिसके अनुसार चलकर मनुष्य आत्मिक अनन्त प्रसन्नता को प्राप्त कर सकता है।

किन्तु दुख की बात यह है, कि मनुष्य परमेश्वर के मार्ग से इतना अधिक भटक चुका है कि वह प्रसन्नता को उन वस्तुओं में और ऐसे स्थानों पर खोजने का प्रयत्न कर रहा है, जहां प्रसन्नता वास्तव में प्राप्त नहीं हो सकती। सुलैमान ने प्रसन्नता प्राप्त करने के लिये संसार में उपलब्ध सभी साधनों का उपयोग किया, परन्तु अन्त में जो उस ने निचोड़ निकाला वह इस प्रकार था, उस ने कहा, "कि व्यर्थ ही व्यर्थ,

व्यर्थ ही व्यर्थ ! सब कुछ व्यर्थ है।" (सभोपदेशक १:२)। सबसे पहिले उसने अपनी बुद्धिमानी के द्वारा प्रसन्नता की खोज की। सुलैमान पृथ्वी पर सब मनुष्यों में अधिक बुद्धिमान था क्योंकि परमेश्वर ने सुलैमान को बुद्धिमानी दान स्वरूप दी थी। परन्तु बुद्धिमानी से प्रसन्नता प्राप्त करने के प्रयत्न के अन्त में, सुलैमान ने कहा, "बहुत बुद्धि के साथ बहुत खेद भी होता है, और जो अपना ज्ञान बढ़ाता है वह अपना दुख भी बढ़ाता है।" (सभोपदेशक १:१८)। फिर उसने धन-सम्पत्ति के द्वारा प्रसन्नता प्राप्त करने का यत्न करके देखा। वह अपने समय के लोगों में सबसे अधिक धनी हो गया, वह एक बड़ा ही शक्तिशाली राजा हो गया जिसके राज्य में, कहा जाता है, सोने और पत्थर के मूल्य में कोई विशेष अन्तर न था। एक जगह वह कहता है, "इस प्रकार मैं अपने से पहिले के सब यरुशलेमवासियों से अधिक महान् और धनाढ्य हो गया—और जितनी वस्तुओं को देखने की मैं ने लालसा की, उन सभों को देखने से मैं न रुका; मैं ने अपना मन किसी प्रकार का आनन्द भोगने से न रोका क्योंकि मेरा मन मेरे सब परिश्रम के कारण आनन्दित हुआ।" (सभोपदेशक २ : ९, १०) परन्तु प्रसन्नता ! वह आगे कहता है "तब मैं ने फिर से अपने हाथों के सब कामों को, और अपने सब परिश्रम को देखा, तो क्या देखा कि सब कुछ व्यर्थ और वायु को पकड़ना है, और संसार में कोई लाभ नहीं।" (सभोपदेशक २ : ११)। सो सुलैमान के पास बुद्धि थी, धन था, शक्ति थी; परन्तु इनमें से किसी भी वस्तु के द्वारा वह सच्ची प्रसन्नता प्राप्त न कर सका। और उसका निष्कर्ष यह था, "कि व्यर्थ ही व्यर्थ, व्यर्थ ही व्यर्थ ! सब कुछ व्यर्थ है।"

परन्तु अपने पाठ के आरम्भ में, जिस स्थान पर से, भजन संहिता की पुस्तक में से हमने पढ़ा था, वहां हमने देखा था कि लेखक हमारा परीचय एक ऐसे मनुष्य से कराता है जो वास्तव में प्रसन्न है। और उसका वर्णन करके वह कहता है, "क्या ही धन्य है वह पुरुष जो दुष्टों

की युक्ति पर नहीं चलता, और न पापियों के मार्ग में खड़ा होता; और न ठट्ठा करनेवालों की मन्डली में बैठता है।" अर्थात् वह मनुष्य अधर्मियों की बातों पर नहीं चलता वह उनकी नहीं सुनता, और न उनकी सलाह मानता है। वह पापियों के मार्ग में खड़ा तक नहीं होता और न उनके किसी भी काम में भाग लेता है। वह उन लोगों के बीच में नहीं बैठता, न उनके साथ किसी प्रकार की संगति करता है जो परमेश्वर की पवित्र बातों का उपहास वा ठट्ठा करते हैं। परन्तु इसके विपरीत, वह मनुष्य परमेश्वर के नियमों वा उसकी आज्ञाओं से प्रसन्न रहता है। वह उन्हें मानता है, उन पर चलता है, और रात दिन उन पर ध्यान करता रहता है। इस बात पर विशेष ध्यान दें, कि वह परमेश्वर के नियमों को केवल पढ़ता ही नहीं परन्तु उन पर ध्यान करता है।

और इस तरह के मनुष्य की तुलना पवित्र शास्त्र का लेखक एक ऐसे वृक्ष के साथ करता है, जो बहती नालियों के किनारे लगाया गया है और अपनी ऋतु में फलता है, और जिसके पत्ते कभी मुरझाते नहीं। अर्थात्, उसे आवश्यक भोजन की कमी कभी नहीं होती, वह सदा फलवन्त रहता है, और सदा हरा-भरा रहता है, और इस तरह से वह न केवल स्वयं अपने ही लिये परन्तु अन्य लोगों के लिये भी लाभदायक सिद्ध होता है।

परन्तु दूसरी ओर वह कहता है, कि दुष्ट लोग ऐसे नहीं होते, अर्थात् उनमें ये विशेषताएं नहीं होतीं। वे भूसी के समान होते हैं जो हवा से उड़ाई जाती है, अर्थात् वे शून्य वा व्यर्थ होते हैं; वे एक ऐसी वस्तु के समान होते हैं जो बिल्कुल खाली होती है और हवा के झोकों से इधर-उधर उड़ती फिरती है। सो वह कहता है, "इस कारण दुष्ट लोग अदालत में स्थिर न रह सकेंगे और न पापी धर्मियों की मन्डली में ठहरेंगे; क्योंकि यहोवा धर्मियों का मार्ग जानता है, परन्तु दुष्टों का

मार्ग नाश हो जाएगा ।" बात यह है, कि एक दिन धर्मी और अधर्मी दोनों को ही प्रभु के न्यायासन के सामने खड़ा होना पड़ेगा क्योंकि लिखा है कि "हम में से हर एक परमेश्वर को अपना अपना लेखा देगा ।" (रोमियों १४ : १२) परन्तु जबकि धर्मी अनन्त जीवन में प्रवेश करेंगे, दुष्ट वा अधर्मी परमेश्वर के न्याय के दिन स्थिर न रह सकेंगे । क्योंकि परमेश्वर के न्याय के तराज़ू पर वे खाली और व्यर्थ सिद्ध होंगे, अर्थात् वे भूसी के समान ठहरेंगे जिसका इसके सिवाए और कोई प्रयोजन नहीं कि वह आग में झोंकी जाए ।

एक धर्मी तथा अधर्मी मनुष्य में यह अन्तर है, कि जबकि धर्मी परमेश्वर के नियमों के अनुसार चलकर प्रसन्नता प्राप्त करने की इच्छा रखता है, दूसरी ओर, अधर्मी मनुष्य केवल सांसारिक वस्तुओं में ही प्रसन्नता की खोज करता रहता है क्योंकि वह इस बात को भूल जाता है कि वह केवल शारीरिक ही नहीं परन्तु एक आत्मिक प्राणी है, और इसलिये उसकी आवश्यकताएं वास्तव में आत्मिक स्वभाव की हैं । प्रभु यीशु ने अपने जीवन में इस सच्चाई का अनुभव करके कहा "कि मनुष्य केवल रोटी ही से नहीं, परन्तु हर एक वचन से जो परमेश्वर के मुख से निकलता है जीवित रहेगा ।" (मत्ती ४:४)। और इसलिये उसने एक जगह कहा कि "अपने लिये पृथ्वी पर धन इकट्ठा न करो; जहां कीड़ा और काई बिगाड़ते हैं; और जहां चोर सेंध लगाते और चुराते हैं । परन्तु अपने लिये स्वर्ग में धन इकट्ठा करो, जहां न तो कीड़ा, और न काई बिगाड़ते हैं, और जहाँ चोर न सेंध लगाते और न चुराते हैं ।" (मत्ती ६: १९, २०) । "क्योंकि जो कुछ संसार का है, अर्थात् शरीर की अभिलाषा आंखों की अभिलाषा और जीविका का घमन्ड, वह पिता की ओर से नहीं, परन्तु संसार ही की ओर से है । और संसार और उसकी अभिलाषाएं दोनों मिटते जाते हैं, पर जो परमेश्वर की इच्छा पर चलता है, वह सर्वदा बना रहेगा ।" (१ यूहन्ना २ : १६,१७) ।

मनुष्य के लिये इस से बड़ी प्रसन्नता की और कोई बात नहीं कि

वह अपनी आत्मा को प्राप्त कर ले। क्योंकि यीशु ने कहा, "यदि मनुष्य सारे जगत को प्राप्त करे और अपने प्राण की हानि उठाए, तो उसे क्या लाभ होगा ?" (मरकुस ८:३६)। एक मनुष्य यदि संसार की सारी वस्तुओं को प्राप्त करले, परन्तु जब वह इस जगत को छोड़-कर जाएगा तो क्षण भर में वह सदा के लिये उन सारी वस्तुओं से अलग हो जाएगा—और इस प्रकार, उसकी हानि एक बहुत बड़ी हानि होगी—क्योंकि जो कुछ उसने जीवन भर इकट्ठा किया वह उस से पल भर में सदा के लिये छिन गया। और उसकी हानि वास्तव में दोहरी होगी, क्योंकि वह अपनी आत्मा की भी नरक में हानि उठाएगा। परन्तु जो मनुष्य परमेश्वर की इच्छा पर चलता है वह सर्वदा बना रहेगा, वह अपनी आत्मा को बचाएगा। और यही सच्ची प्रसन्नता है। प्रभु यीशु ने कहा, यदि मनुष्य मुझ में विश्वास करे, और अपना मन फिराए, और मेरे नाम से बपतिस्मा ले तो मैं उसका उद्धार करूंगा। (मरकुस १६:१६; प्रेरितों २:३८)।

१७

मृत्यु के बाद

संसार की किसी भी भाषा में मृत्यु शब्द बड़ा ही अप्रसन्नीय वा शोकपूर्ण है। यह एक ऐसा शब्द है जिसे सुनकर कोई भी व्यक्ति प्रसन्न नहीं होता, और वास्तव में, अधिकांश लोग इस शब्द को सुनना भी पसन्द नहीं करते। यह एक ऐसा शब्द है जो कि शोक, पीड़ा और विलाप का प्रतीक है। हम में से कोई भी मरने की इच्छा नहीं रखता, हम सब अधिक से अधिक जीना चाहते हैं। संसार में कदाचित् हम अपने प्राणों से बढ़कर और किसी भी वस्तु से अधिक प्रेम नहीं रखते, और वास्तव में, अन्य सभी वस्तुएं जो हम प्राप्त या उपार्जित करते हैं, उन्हें अपने प्राणों को प्रसन्न व ज़िन्दा रखने के लिए ही करते हैं। मृत्यु को पास देखकर हम अपने आपको मृत्यु से बचाने के लिए सब कुछ करने को तैयार हो जाते हैं। परन्तु हम चाहे जो कुछ भी करें, तौभी अपने आपको मौत से नहीं बचा सकते। हम इस कठोर शब्द को चाहे सुनना पसन्द करें या न करें; हम इस सच्चाई को स्वीकार करें या न करें, लेकिन हम सब इस बात को निश्चित रूप से जानते हैं कि एक न एक दिन हम सब को अवश्य ही मृत्यु का सामना करना पड़ेगा।

किन्तु इस विषय में हमारे सामने अकसर एक प्रश्न आता है, कि मृत्यु के बाद मनुष्य का क्या होता है? क्या मृत्यु के बाद मनुष्य का हमेशा के लिये अन्त हो जाता है? और यदि मृत्यु के बाद भी मनुष्य का अस्तित्व बना रहता है तो वह कहां जाता है, कहां रहता है? क्या परमेश्वर ने अपने वचन में इस विषय पर हमें कुछ बताया है? जब हम पवित्र बाइबल में से लूका नाम की पुस्तक के १६वें अध्याय को पढ़ना

आरम्भ करते हैं, तो वहां १९ पद से लेकर हमें इस विषय में कुछ बड़ी ही विशेष वा महत्वपूर्ण बातों का ज्ञान होता है। सो आइये, अपने प्रश्न का ठीक उत्तर जानने के लिये, हम बाइबल में से इस स्थान पर से पढ़े:

प्रभु यीशु ने कहा, "एक धनवान मनुष्य था जो बैंजनी कपड़े और मलमल पहिनता और प्रतिदिन सुख-विलास और धूमधाम के साथ रहता था। और लाज़र नाम का एक कंगाल घावों से भरा हुआ उसकी डेवढ़ी पर छोड़ दिया जाता था। और वह चाहता था, कि धनवान की मेज़ पर की जूठन से अपना पेट भरे; वरन् कुत्ते भी आकर उसके घावों को चाटते थे। और ऐसा हुआ कि वह कंगाल मर गया, और स्वर्गदूतों ने उसे लेकर इब्राहीम की गोद में पहुंचाया; और वह धनवान भी मरा और गाड़ा गया। और अधोलोक में उसने पीड़ा में पड़े हुए अपनी आंखें उठाई, और दूर से इब्राहीम की गोद में लाज़र को देखा। और उस ने पुकारकर कहा, हे पिता इब्राहीम, मुझ पर दया करके लाज़र को भेज दे, ताकि वह अपनी उंगली का सिरा पानी में भिगोकर मेरी जीभ को ठंडी करे, क्योंकि मैं इस ज्वाला में तड़प रहा हूं। परन्तु इब्राहीम ने कहा; हे पुत्र स्मरण कर, कि तू अपने जीवन में अच्छी वस्तुएँ ले चुका है, और वैसे ही लाज़र बुरी वस्तुएं : परन्तु अब वह यहां शान्ति पा रहा है, और तू तड़प रहा है। और इन सब बातों को छोड़ हमारे और तुम्हारे बीच एक भारी गड़हा ठहराया गया है कि जो यहां से उस पार तुम्हारे पास जाना चाहें, वे न जा सकें, और न कोई वहाँ से इस पार हमारे पास आ सके। उस ने कहा, तो हे पिता मैं तुझ से बिनती करता हूं, कि तू उसे मेरे पिता के घर भेज। क्योंकि मेरे पाँच भाई हैं, वह उन के सामने इन बातों की गवाही दे, ऐसा न हो कि वे भी इस पीड़ा की जगह में आएँ। इब्राहीम ने उस से कहा, उन के पास तो मूसा और भविष्यद्वक्ताओं की पुस्तकें हैं, वे उनकी सुनें। उस ने कहा; नहीं, हे पिता इब्राहीम; पर यदि कोई मरे हुओं में से उनके पास जाए, तो वे मन फिराएंगे। उस ने उस से कहा, कि जब वे मूसा और भविष्यद्वक्ताओं की नहीं सुनते, तो यदि मरे हुओं में से कोई जी भी उठे तो

भी उस की नहीं मानेंगे।"

इस वर्णन में हमें इस विषय पर, कि मृत्यु के बाद मनुष्य का क्या होता है, कुछ बड़ी ही आवश्यक बातें मिलती हैं। सबसे पहिले हम देखते हैं, कि दो मनुष्य थे। उन में से एक तो बड़े सुख-विलास और धूमधाम के साथ रहता था, परन्तु दूसरा बड़ा ही निर्धन वा दरिद्र था। और कुछ समय बाद, हम देखते हैं, कि दोनों की मृत्यु हो जाती है। परन्तु जैसे कि बुद्धिमान उपदेशक बाइबल में लिखकर कहता है कि "तब मिट्टी ज्यों की त्यों मिट्टी मैं मिल जाएगी, और आत्मा परमेश्वर के पास जिसने उसे दिया लौट जाएगी।" (सभोपदेशक १२:७)। सो हम देखते हैं, कि जबकि लाज़र नाम का वह दरिद्र मनुष्य स्वर्ग में इब्राहीम की गोद में पहुँचा, जो कि सब विश्वासियो का पिता कहलाता है; दूसरी ओर, वह धनवान मनुष्य अपनी मृत्यु के बाद आग की उस झील में पहुँचा जहां तड़पना, रोना और दांतों का पीसना है। परन्तु न तो वह निर्धन मनुष्य स्वर्ग में इसलिये पहुंचा क्योंकि वह निर्धन था, और न ही वह धनवान नरक की आग में इसलिये तड़प रहा था क्योंकि वह पृथ्वी पर एक धनी मनुष्य था। परन्तु जैसे कि परमेश्वर अपने वचन में हमें बताता है कि "मनुष्यों के लिये एक बार मरना और उसके बाद न्याय का होना नियुक्त है" (इब्रानियों ९ : २७); और यह कि हर एक मनुष्य का न्याय उसके अपने ही कामों के अनुसार होगा (२ कुरिन्थियों ५ : १०) ; सो वे दोनों अपनी मृत्यु के बाद जिस जगह पहुंचे वे अपने-अपने कामों के अनुसार ही वहां पहुँचे। अर्थात्, जिस ने धर्म के काम किए थे वह मनुष्य स्वर्ग में अनन्त जीवन पाने के लिये और जिस ने अधर्म के काम किए वह अनन्त विनाश का दन्ड भोगने के लिये नरक में पहुंचा। क्योंकि प्रभु यीशु ने इस सम्बन्ध में स्पष्ट करके कहा, कि अधर्मी अनन्त दन्ड भोगेंगे परन्तु धर्मी अनन्त जीवन में प्रवेश करेंगे। (मत्ती २५ : ४६)।

सो वह धनवान मनुष्य नरक की ज्वाला में अपने उन अधर्म के कामों के अनुसार तड़प रहा था जो उसने पृथ्वी पर रह कर किए थे, और लाज़र स्वर्ग में इसलिये शान्ति पा रहा था क्योंकि उस ने धर्म के काम किए थे। किन्तु यहां धर्म वा अधर्म के कामों से हमारा क्या तात्पर्य है ? वास्तव में, मनुष्य का उद्धार हमारे अपने अच्छे-अच्छे कामों के फल-स्वरूप नहीं होता। तौभी इसका मतलब यह कदापि नहीं है कि हमें अच्छे काम नहीं करने चाहिए। परन्तु वास्तव में, पवित्र बाइबल हमें बताती है कि परमेश्वर ने हमें भले वा अच्छे कामों के लिये ही सृजा है (इफिसियों २ : १०)। परन्तु तौभी हमारा उद्धार हमारे अपने कामों के द्वारा नहीं होता, क्योंकि यदि ऐसा होता तो हमें अपने कामों पर घमन्ड करने का अवसर होता। और न केवल यही, परन्तु प्रभु यीशु मसीह का स्वर्ग छोड़कर इस पृथ्वी पर आना, उसका मनुष्य का स्वरूप धारण करना, सब प्रकार के अत्याचार व यातनाओं को सहना, और अन्त में सूली के ऊपर दर्दनाक मौत का सामना करना सब कुछ व्यर्थ सिद्ध होता। परन्तु बाइबल बताती है कि "जब हम पापी ही थे तभी मसीह हमारे लिये मरा।" (रोमियों ५ : ८)। इसलिये, हमारा उद्धार हमारे अपने किसी कार्य के फलस्वरूप नहीं, परन्तु यीशु मसीह के उस बलिदान के द्वारा होता है जो उसने क्रूस पर दिया। क्योंकि उस ने हर एक मनुष्य के लिये मृत्यु का स्वाद चखा। (इब्रानियों २ : ९)।

परन्तु वह धनवान मनुष्य नरक की उस ज्वाला में इस कारण तड़प रहा था क्योंकि उसने अधर्म के काम किए थे और लाज़र स्वर्ग में इस कारण शान्ति पा रहा था क्योंकि उसने धर्म के काम किए थे। सो यहां धर्म और अधर्म के कामों से क्या तात्पर्य है ? भजन संहिता की पुस्तक में दाऊद परमेश्वर के वचन का वर्णन करके कहता है कि "मैं तेरे वचन का गीत गाऊंगा, क्योंकि तेरी सब आज्ञाएं धर्ममय हैं।" (भजन ११९ : १७२)। सो जबकि परमेश्वर की सब आज्ञाएं धर्ममय हैं, तो प्रत्यक्ष ही है, कि धर्म के काम करने का अभिप्राय परमेश्वर की

आज्ञाओं को पूरा करने से है। अर्थात्, जब हम प्रभु की आज्ञाओं को मानते हैं तो हम धर्म के काम करते हैं, और जब हम प्रभु की आज्ञाओं को नहीं मानते तो यह परमेश्वर की दृष्टि में अधर्म गिना जाता है। जैसे कि हम देखते हैं, कि एक जगह प्रभु ने कहा कि, यदि तुम मन न फिराओगे तो तुम नाश होगे। (लूका १३ : ३) अर्थात् यह प्रभु की आज्ञा है कि सब मनुष्य पाप से अपना मन फिराएं सो यदि कोई मनुष्य अपना मन फिराता है तो वह प्रभु की आज्ञा मानकर धर्म का काम करता है, और यदि वह मन नहीं फिराता तो वह प्रभु की आज्ञा को टालने के फलस्वरूप अपने पापों में नाश होगा। इसी तरह से, प्रभु ने आज्ञा देकर कहा, कि जो मेरे सुसमाचार को सुनकर विश्वास करेगा और बपतिस्मा लेगा उसका मैं उद्धार करूंगा, परन्तु जो मेरी आज्ञा न मानेगा वह दोषी ठहराया जाएगा। (मरकुस १६ : १६)।

सो आज आपके सामने यह एक बड़ा ही महत्वपूर्ण प्रश्न है, कि क्या आप प्रभु की आज्ञाओं को मानकर एक धर्मी मनुष्य की सी मृत्यु पाना पसन्द करेंगे, या आप उस की आज्ञाओं को टालकर आग की उस झील में जाना चाहेंगे जहां रोना वा दांतों का पीसना और अनन्त विनाश है ? जी हां, यह प्रश्न बड़ा ही महत्वपूर्ण प्रश्न है, क्योंकि यह अनन्त जीवन और अनन्त विनाश का प्रश्न है ! और अपनी मृत्यु के बाद आप किस स्थान पर होंगे यह बात भी इसी महत्वपूर्ण प्रश्न के जवाब पर निर्भर करती है। मेरी आशा है, कि आप शीघ्र ही उचित निश्चय करेंगे।

१८

अधोलोक में

अपने पिछले अध्ययन में हमने देखा था कि मृत्यु के बाद मनुष्य का क्या होता है। अर्थात्, हमने देखा था कि मनुष्य की नाशमान देह तो पृथ्वी पर ही नाश हो जाती है, परन्तु मनुष्य की अमर आत्मा अपना प्रतिफल प्राप्त करने के लिये अपने सृष्टिकर्त्ता परमेश्वर के पास पहुंच जाती है। हमने देखा था, कि केवल दो ही स्थान हैं और मृत्यु के बाद उन में से किसी भी एक स्थान पर प्रत्येक मनुष्य आत्मिक रूप से अनन्त-काल तक रहेगा। और जब कि उन दोनों स्थानों में से किसी भी एक स्थान को अपने लिये चुन लेने का अवसर आज हमारे पास है, परन्तु एक बार जैसे ही मृत्यु ने बीच में आकर हमारी आत्मा को देह से अलग कर दिया, तो निश्चय करने का यह सुअवसर हमारे हाथ से सदा के लिये निकल जाएगा। आत्मिक रूप से मनुष्य के अनन्त निवास के लिये केवल दो ही स्थान हैं, अर्थात्, नरक जो आग की एक बड़ी झील के समान है, या स्वर्ग जहाँ परमेश्वर और उसकी महिमा विद्यमान है। और हमने देखा था कि मृत्यु के बाद हर एक मनुष्य अपने धर्म और अधर्म के कामों के आधार पर परमेश्वर के न्याय अनुसार या तो स्वर्ग में अनन्त जीवन का वारिस होगा, या नरक की ज्वाला में अनन्त विनाश का दन्ड पाएगा।

फिर हमने दो मनुष्यों के बारे में देखा था, कि वे दोनों पृथ्वी पर अपना-अपना जीवन व्यतीत करने के बाद, अपना-अपना प्रतिफल पाने के लिये परमेश्वर के पास पहुँचे। उन में से एक के बारे में हमने देखा था कि वह पृथ्वी पर बड़े सुख-विलास और धूम-धाम के साथ रहता

था क्योंकि वह एक धनवान मनुष्य था । जबकि दूसरा व्यक्ति पृथ्वी पर एक निर्धन, कंगाल और दरिद्र था । परन्तु परमेश्वर किसी भी मनुष्य का न्याय सांसारिक दृष्टिकोण से नहीं करता, क्योंकि मनुष्य के सोच विचारों में और परमेश्वर के सोच विचारों में आकाश और पृथ्वी का सा अन्तर है । अर्थात् पृथ्वी पर लोग किसी मनुष्य को कदाचित बड़ा ही धनवान कहें परन्तु वही मनुष्य परमेश्वर की दृष्टि में एक निर्धन वा कँगाल ठहर सकता है, दूसरी ओर, पृथ्वी पर कंगाल वा निर्धन कहलानेवाला एक मनुष्य कदाचित् परमेश्वर की दृष्टि में धनवान हो सकता है । क्योंकि परमेश्वर का देखना मनुष्य का सा नहीं है ; मनुष्य तो बाहर का रूप देखता है परन्तु परमेश्वर की दृष्टि मनुष्य के मन पर रहती है। (१ शमूएल १६ : ७) ।

सो वे दोनों मनुष्य, मृत्यु के बाद, जब अपनी-अपनी देह से अलग होकर, मनों के जांचनेवाले परमेश्वर के पास अपना-अपना प्रतिफल पाने के लिए पहुंचे, तो पृथ्वी पर कंगाली का जीवन निर्वाह करनेवाले लाज़र ने अपने आप को स्वर्ग के शान्त वा आनन्दमय वातावरण में पाया परन्तु पृथ्वी पर सुख-विलास और धूमधाम के साथ रहनेवाले उस धनवान मनुष्य ने अपने आपको आग की उस भयानक झील में पीड़ा में पड़े हुए पाया जो कभी बुझती नहीं और जहाँ हमेशा का रोना और दांतों का पीसना है । और वहां, "अधोलोक में उसने पीड़ा में पड़े हुए अपनी आंखें उठाई और दूर से इब्राहीम की गोद में लाज़र को देखा । और उसने पुकारकर कहा, हे पिता इब्राहीम, मुझ पर दया करके लाज़र को भेज दे, ताकि वह अपनी उंगली का सिरा पानी में भिगोकर मेरी जीभ को ठंडी करे, क्योंकि मैं इस ज्वाला में तड़प रहा हूं । परन्तु इब्राहीम ने कहा; हे पुत्र स्मरण कर, कि तू अपने जीवन में अच्छी वस्तुएं ले चुका है, और वैसे ही लाज़र बुरी वस्तुएँ: परन्तु अब वह यहां शान्ति पा रहा है, और तू तड़प रहा है ।" (लूका १६ : २३-२५) ।

यहाँ हम देखते हैं, कि अधोलोक में पीड़ा में पड़े हुए उस मनुष्य ने जब दया की मांग की तो उस से जवाब में कहा गया कि तू "स्मरण कर।" परन्तु कदाचित् अब स्मरण करने के लिये बहुत देर हो चुकी थी। अब वह बीते क्षणों को केवल याद ही कर सकता था, परन्तु अपनी स्थिति में कुछ भी बदलाव न ला सकता था। स्मरण करने का अच्छा अवसर उसके हाथ से सदा के लिये बहुत दूर जा चुका था! कितना ही भला होता यदि वह परमेश्वर की दया और उसकी आज्ञाओं को उस समय स्मरण कर लेता, जब वह इस पृथ्वी पर था, जब उसके पास अवसर था। परन्तु, उस समय, वह जीविका के घमन्ड में और शरीर और आंखों की अभिलाषा में इतना अधिक खोया हुआ था कि सुख-विलास और धूमधाम के अतिरिक्त उसे और कुछ याद न आता था। परन्तु, मैं फिर कहता हूं, कि कितना ही भला होता यदि वह मनुष्य परमेश्वर की असीम दया, उसके अपार प्रेम, और उसकी बचानेवाली आज्ञाओं को उस समय स्मरण कर लेता जब पृथ्वी पर उसके पास समय था। परन्तु उसने उचित समय में स्मरण न किया।

परन्तु, परमेश्वर का धन्यवाद हो, कि मित्रो आज हमारे पास यह सुन्दर अवसर है कि हम परमेश्वर के महान् प्रेम और दया को उचित समय पर स्मरण कर सकते हैं। हमें स्मरण करना चाहिए कि "परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उस ने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे वह नाश न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए।" (यूहन्ना ३ : १६)।

हमें स्मरण करना चाहिए कि अपने पापों में "जब हम निर्बल ही थे तो मसीह ठीक समय पर भक्तिहीनों के लिये मरा।" क्योंकि "किसी धर्मी जन के लिये कोई मरे, यह तो दुर्लभ है, परन्तु क्या जाने किसी भले मनुष्य के लिये कोई मरने का भी हियाव करे। परन्तु परमेश्वर हम पर अपने प्रेम की भलाई इस रीति से प्रगट करता है, कि जब हम पापी ही थे तभी मसीह हमारे लिये मरा।" (रोमियों ५ : ६-८)।

हमें स्मरण करना चाहिए, कि परमेश्वर की ओर से, मनुष्यों के लिये एक बार मरना और उसके बाद न्याय का होना नियुक्त है।" (इब्रानियों ६ : २७)। और हमें स्मरण करना चाहिए, कि एक दिन अवश्य ही "हम सब के सब परमेश्वर के न्याय सिंहासन के सामने खड़े होंगे।" (रोमियों १४ : १०)। "क्योंकि अवश्य है, कि हम सब का हाल मसीह के न्याय आसन के सामने खुल जाए, कि हर एक व्यक्ति अपने-अपने भले बुरे कामों का बदला जो उस ने देह के द्वारा किए हों पाए।" (२ कुरिन्थियों ५ : १०)।

मित्रो, पवित्र शास्त्र हमें आगे बताता है, कि हमें स्मरण करना चाहिए कि "परमेश्वर अज्ञानता के समयों से आनाकानी करके अब हर जगह सब मनुष्यों को मन फिराने की आज्ञा देता है, क्योंकि उसने एक दिन ठहराया है, जिस में वह उस मनुष्य के द्वारा धर्म से जगत का न्याय करेगा, जिसे उस ने ठहराया है और उसे मरे हुओं में से जिलाकर यह बात सब पर प्रमाणित कर दी है।" (प्रेरितों १७ : ३०, ३१)।

हमें स्मरण करना चाहिए, कि मनुष्यों के बारे में लिखा है, "कि सबने पाप किया है और परमेश्वर की महिमा से रहित हैं।" (रोमियों ३ : २३)। और "पाप की मजदूरी तो मृत्यु है, परन्तु परमेश्वर का वरदान हमारे प्रभु मसीह यीशु में अनन्त जीवन है।" (रोमियों ६ : २३)।

हमें स्मरण करना चाहिए, कि हमें पाप के परिणाम, अनन्त मृत्यु, अर्थात् आग की उस भयानक झील में जाने से बचाने के लिये, जहां पीड़ा, रोना और दांतों का पीसना है, परमेश्वर ने हमारे स्थान पर अपने पुत्र यीशु को हमारे पाप के कारण दोषी ठहराकर, हमारे स्थान पर उसे दन्डित किया, ताकि हम उसके द्वारा अपने अधर्म से छूटकर धर्मी बन जाएँ और स्वर्ग में अनन्त जीवन पाएं।

जी हां, हमें स्मरण करना चाहिए कि "पुत्र होने पर भी उस ने दुख

उठा उठाकर आज्ञा माननी सीखी। और सिद्ध बनकर, अपने सब आज्ञा मानने वालों के लिये सदाकाल के उद्धार का कारण हो गया" (इब्रानियों ५ : ८, ९)। और हमें स्मरण करना चाहिए कि अपनी मृत्यु के बाद, जी उठने के पश्चात् उद्धारकर्त्ता प्रभु यीशु ने सब मनुष्यों को आज्ञा देकर कहा, कि मेरे बलिदान के सुसमाचार को सुनकर, जो विश्वास करेगा और बपतिस्मा लेगा उसी का उद्धार होगा परन्तु जो विश्वास न करेगा वह दोषी ठहराया जाएगा।" (मरकुस १६ : १६)।

सो, इस से पहिले, कि पृथ्वी पर का हमारा यह जीवन समाप्त हो जाए; और, इस से पहिले कि हम अपने कामों के अनुसार अपना-अपना प्रतिफल प्राप्त करने के लिये परमेश्वर के पास जाएं, यह बड़ा ही आवश्यक है कि हम इन सब बातों को स्मरण कर लें। क्योंकि उस समय अवसर हाथ से निकल चुका होगा और बहुत देर हो जाएगी।

मित्रो, प्रभु यीशु मसीह ने आपको नरक के दन्ड से बचाने के लिये अपने प्राणों को बलिदान कर दिया। वह आपको उस भयानक स्थान पर जाने से बचाना चाहता है। उसकी इच्छानुसार यदि आप उस पर विश्वास करेंगे, और पाप से अपना मन फिराएंगे, और उसकी आज्ञानुसार अपने पापों की क्षमा के लिये बपतिस्मा लेंगे तो वह आपका उद्धार करेगा, और आपको स्वर्ग में अनन्त जीवन देगा। (मत्ती २८ ; १९ तथा प्रेरितों २ : ३८)। बहुतेरे लोग, उस धनवान मनुष्य की तरह, इस जीवन में परमेश्वर के प्रेम, उसकी दया और उसकी आज्ञाओं को स्मरण नहीं करते। परन्तु परमेश्वर अपने वचन में चेतावनी देकर कहता है, "धोखा न खाओ, परमेश्वर ठठ्टों में नहीं उड़ाया जाता, क्योंकि मनुष्य जो कुछ बोता है, वही काटेगा। क्योंकि जो अपने शरीर के लिये बोता है, वह शरीर के द्वारा विनाश की कटनी काटेगा; और जो आत्मा के लिये बोता है, वह आत्मा के द्वारा अनन्त जीवन की कटनी काटेगा।" (गलतियों ६ : ७, ८)। क्या आप पर-

मेश्वर की आज्ञाओं को इस जीवन में स्मरण करके अपने लिये अनन्त जीवन की कटनी न काटना चाहेंगे ?

मेरी आशा है, कि आप अपने जीवन के इन बहुमूल्य क्षणों को यूँ हीं व्यर्थ न करके, प्रभु की आज्ञाओं को स्मरण करने का निश्चय करेंगे। और यदि आप इस जीवन में उसकी आज्ञाओं को स्मरण न करेंगे तो अवश्य ही एक दिन वह स्वयं आपको उन्हें स्मरण करने को कहेगा। परन्तु तब, स्मरण करने का उचित अवसर न होगा।

१६

धार्मिक, परन्तु अन्धकार में

पवित्र बाइबल का लेखक एक जगह कहता है, "कि परमेश्वर ज्योति है : और उस में कुछ भी अन्धकार नहीं। यदि हम कहें, कि उसके साथ हमारी सहभागिता है, और फिर अंधकार में चलें, तो हम झूठे हैं : और सत्य पर नहीं चलते।" (१ यूहन्ना १ : ५-६)। ज्योति के भीतर एक सबसे बड़ी विशेषता जो हमें दिखाई देती है, वह है ज्योति की प्रकट करने-वाली शक्ति। अर्थात् वह उन वस्तुओं को जो हमारी आंखों से अन्ध-कार के कारण छिपी रहती हैं हम पर प्रकट करती है। सो परमेश्वर ज्योति है। क्योंकि परमेश्वर अपने वचन के द्वारा हम पर प्रकट करता है, कि मनुष्य वास्तव में क्या है, इस संसार में उसका क्या उद्देश्य है, और इस संसार को छोड़कर वह कहां जाता है। परमेश्वर ज्योति है, क्योंकि वह हमें संसार के अंधकार में से निकालकर जीवन की ज्योति में पहुं-चाता है। परन्तु जैसे कि अभी हमने पढ़ा, "कि यदि हम कहें, कि उस के साथ हमारी सहभागिता है, और फिर अन्धकार में चलें, तो हम झूठे हैं और सत्य पर नहीं चलते।" क्योंकि हम एक ही समय में ज्योति तथा अन्धकार में नहीं रह सकते ! ये दोनों एक दूसरे के विपक्ष में हैं, अर्थात् उनकी कोई संगति नहीं। इसलिये, या तो हम पूर्ण रूप से अन्ध-कार में चल रहे हैं या पूर्ण रूप से ज्योति में चल रहे हैं।

एक अन्य स्थान पर परमेश्वर का वचन कहता है, "तुम न तो सँसार से और न संसार की वस्तुओं से प्रेम रखो : यदि कोई संसार से प्रेम करता है, तो उसमें पिता का प्रेम नहीं है।" (१ यूहन्ना २ : १५) और फिर प्रभु यीशु ने एक जगह शिक्षा देकर कहा, "कोई मनुष्य दो

स्वामियों की सेवा नहीं कर सकता, क्योंकि वह एक से बैर और दूसरे से प्रेम रखेगा, वा एक से मिला रहेगा और दूसरे को तुच्छ जानेगा; तुम परमेश्वर और धन दोनों की सेवा नहीं कर सकते।" (मत्ती ६ : २४)। अर्थात्, या तो हम पूरी तरह से परमेश्वर के साथ हैं, या संसार के साथ हैं; या तो हम पूरी तरह से ज्योति में हैं या अन्धकार में है। परन्तु बहुतेरे लोगों का व्यवहार इस सिद्धान्त के बिल्कुल विपरीत होता है। वे धार्मिक बनना तो चाहते हैं, और कदाचित् धर्म के कुछ काम भी करते हैं, परन्तु तौभी पूरी तरह से परमेश्वर की आज्ञाओं पर नहीं चलते। वे केवल उन्हीं कामों को करना चाहते हैं जो शायद उनके हित में हों, जिन्हें वे अपनी दृष्टि में महत्त्वपूर्ण समझते हों, और कुछ काम ऐसे भी हो सकते हैं जिन्हें वे केवल दिखावे भर के लिये ही करते हैं। और वे अपने मन में सोचते हैं, कि इस प्रकार से वे परमेश्वर की सेवा कर रहे हैं और उसके साथ ज्योति में चल रहे हैं। जबकि वास्तव में उनका व्यवहार दो-तरफ़ा है, क्योंकि वह अपना एक पैर तो ज्योति में रखना चाहते हैं, उनका दूसरा पैर जबकि अन्धकार में होता है। ऐसे लोग जबकि अपने आपको धार्मिक समझते हैं, परन्तु वास्तव में वे अन्धकार में हैं। इसी तरह के कुछ लोगों के बारे में हम बाइबल में भी पढ़ते हैं।

प्रभु यीशु के दिनों में, शास्त्री वा फ़रीसी लोगों के धार्मिक अगुवे थे। उनके पास अनुसरण करने को परमेश्वर की व्यवस्था थी, जिसे आज हम पुराना नियम कहते हैं। उसके अनुसार, उन्हें परमेश्वर की अन्य आज्ञाओं के साथ-साथ इस आज्ञा का भी पालन करना था कि वे अपनी सब वस्तुओं में से दसवाँ अंश परमेश्वर के लिये दें। परन्तु जिस तरह से वे परमेश्वर की आज्ञाओं पर चल रहे थे, प्रभु यीशु ने उनके व्यवहार की निन्दा करके उन से कहा, "हे कपटी शास्त्रियो और फ़रीसियो तुम पर हाय; तुम पोदीने और सौंफ़ और ज़ीरे का दसवां अंश देते हो, परन्तु तुमने व्यवस्था की गम्भीर बातों को अर्थात् न्याय,

और दया, और विश्वास को छोड़ दिया है; चाहिए था कि इन्हें भी करते रहते, और उन्हें भी न छोड़ते। हे अन्धे, अगुवो, तुम मच्छर को तो छान डालते हो, परन्तु ऊंट को निगल जाते हो।" (मत्ती २३ : २३-२४)। यहां सबसे पहिले हम यह देखते हैं, कि वे अपनी वस्तुओं का दसवां अंश तो दे रहे थे, परन्तु केवल उन वस्तुओं का अंश दे रहे थे जो केवल छोटी-छोटी थीं, अर्थात् पोदीना सौंफ़ व ज़ीरा। दूसरी वस्तुएं जो उनकी दृष्टि में कुछ बड़ी थीं उन्हें वे केवल अपने पास ही रखना चाहते थे। इसके अतिरिक्त, जबकि वे लोग व्यवस्था की कुछ बातों का तो पालन कर रहे थे जो कि उन्हें कुछ सरल दीख पड़ती थीं, परन्तु दूसरी ओर उन्होंने व्यवस्था की कुछ गम्भीर बातों को छोड़ दिया था, अर्थात् न्याय, दया और विश्वास! सो प्रभु ने उनसे कहा, कि तुम्हारा व्यवहार इस प्रकार का है, कि तुम पानी पीते समय उस में से छोटे-छोटे कीटाणुओं को तो छानकर निकाल डालते हो परन्तु दूसरी ओर ऊंट जैसे बड़े पशु को निगल जाते हो। दूसरे शब्दों में, परमेश्वर की आज्ञाओं पर चलकर वे धार्मिक तो बनना चाहते थे, परन्तु वे केवल उन्हीं आज्ञाओं को मानना चाहते थे जिन्हें मानने में उन्हें कुछ बलिदान न करना पड़े और कुछ कठिनाई न उठानी पड़े।

और कुछ और आगे चलकर, यीशु ने उन्हें सम्बोधित करके कहा, "हे कपटी शास्त्रियो, और फ़रीसियो, तुम पर हाय; तुम चूना फिरी हुई कब्रों के समान हो जो ऊपर से तो सुन्दर दिखाई देती हैं, परन्तु भीतर मुर्दों की हड्डियों और सब प्रकार की मलीनता से भरी हैं। इसी रीति से तुम भी ऊपर से मनुष्यों को धर्मी दिखाई देते हो, परन्तु भीतर कपट और अधर्म से भरे हो।" (मत्ती २३ : २७, २८)। सो वे एक ओर तो धर्मी दिखाई देते थे, परन्तु वास्तव में वे अन्धकार में चल रहे थे। और इसी तरह के लोग आज भी संसार में हैं, जो अपने आपको धार्मिक समझते हैं, और कदाचित् दूसरे लोगों को धार्मिक दिखाई भी देते हैं, तौभी वास्तव में वे अन्धकार में हैं। क्योंकि वे प्रभु की सारी

आज्ञाओं पर नहीं चलते, वे शायद उसकी कुछ आज्ञाओं को मान लें, जो उन्हें सरल वा अपनी दृष्टि में उचित प्रतीत हों, परन्तु उसकी और बहुत सी गम्भीर बातों को वे कोई महत्त्व नहीं देते। वे शायद छोटी-छोटी बातों को तो ग्रहण कर लें परन्तु उस की मुख्य आज्ञाओं पर वे कोई ध्यान नहीं देते। वे कदाचित् लोगों को दिखाने के लिये लम्बी-लम्बी प्रार्थनाएं करें, और-और कुछ ऐसे काम करें जिनके कारण लोग उन्हें धार्मिक समझें, परन्तु वास्तव में भीतर से वे अधर्म वा अन्धकार से परिपूर्ण हैं। इसलिये ऐसे लोग धार्मिक तो कहला सकते हैं, परन्तु वास्तव में वे अन्धकार में हैं।

परन्तु एक दूसरे प्रकार के लोगों की तुलना, जो धार्मिक होते हुए भी अन्धकार में चल रहे हैं, शाऊल से की जा सकती है। शाऊल के बारे में हम बाइबल में इस प्रकार पढ़ते हैं, कि वह एक बड़ा ही धार्मिक मनुष्य था। वह यहूदी धर्म का माननेवाला था और परमेश्वर द्वारा दी गई व्यवस्था की प्रत्येक आज्ञा को मानता था, वह अपने धर्म का एक पक्का अनुयायी था। स्वयं शाऊल के ही शब्दों में हम यूं पढ़ते है : "आठवें दिन मेरा खतना हुआ" अर्थात् जैसे कि यहूदी धर्म सिखाता है, फिर "इस्राएल के वंश और बिन्यामीन के गोत्र का हूं; इब्रानियों का इब्रानी हूं; व्यवस्था के विषय में यदि कहो तो फरीसी हूं। उत्साह के विषय में यदि कहो तो कलीसिया का सतानेवाला ; और व्यवस्था की धार्मिकता के विषय में यदि कहो तो निर्दोष था।" (फिलिप्पियों ३ : ५, ६)। अर्थात् इन सब बातों से वह बताता कि अपने धर्म में वह एक बहुत ऊंचा स्थान रखता था, और अपने धर्म का एक सच्चा अनुयायी था; सब बातों में निर्दोष था, और इतने उत्साह के साथ अपने धर्म का पालन करता था, कि जब यीशु मसीह ने अपनी कलीसिया की स्थापना की और इस प्रकार से मसीही धर्म का उदय हुआ, तो वह कलीसिया को सताता था। क्योंकि उसकी दृष्टि में एक नए धर्म का जन्म हुआ था, जिसे वह बढ़ता वा पनपता नहीं देख सकता था। सो एक जगह हम इस

प्रकार पढ़ते हैं, "और शाऊल जो अब तक प्रभु के चेलों को धमकाने और घात करने की धुन में था, महायाजक के पास गया। और उस से दमिश्क की आराधनालयों के नाम पर इस अभिप्राय की चिट्ठियां मांगी कि क्या, पुरुष, क्या स्त्री, जिन्हें वह इस पंथ पर पाए उन्हें बान्धकर यरुशलेम में ले आए।" (प्रेरितों ९ : १, २)। और यह जो कुछ भी वह कह रहा था, पूरे सच्चे विवेक के साथ, यह समझकर कर रहा था, कि वह इन सब बातों से परमेश्वर की इच्छा पूर्ण कर रहा है। क्योंकि बाद में जब वह स्वयं एक मसीही बन गया, और जब मसीह के कारण लोग उसे पकड़कर पीट रहे थे और उसे बन्दीगृह में डालना चाहते थे, तो उसने कहा, "मैंने आज तक परमेश्वर के लिये बिल्कुल सच्चे विवेक से जीवन बिताया है।" (प्रेरितों २३ : १)। सो शाऊल वास्तव में एक धार्मिक मनुष्य था, और वह अपने आपको उस समय भी बड़ा धार्मिक समझता था जब वह यीशु मसीह की कलीसिया को सता रहा था। परन्तु सच्चाई यह है, कि उस समय शाऊल धार्मिक होते हुए भी अन्धकार में था। क्योंकि वह ज्योति का विरोध करके धार्मिक बनना चाहता था।

हम पढ़ते है, कि जब वह अपने साथियों के साथ दमिश्क की ओर इस उद्देश्य से जा रहा था कि यीशु के चेलों को पकड़कर यरुशलेम में ले आए, तो मार्ग में एकाएक उस के चारों ओर ज्योति चमकी, और वह भूमि पर गिर पड़ा, और यह शब्द सुना, कि हे शाऊल, हे शाऊल, तू मुझे क्यों सताता है ? (प्रेरितों ९ : १-४)। अर्थात् मसीह के चेलों को सताकर शाऊल स्वयं यीशु मसीह का विरोध कर रहा था। यद्यपि उसके अपने विचारानुसार वह एक धार्मिक काम कर रहा था। परन्तु वास्तव में धार्मिक होते हुए भी वह अन्धकार में चल रहा था। क्योंकि उसने उस ज्योति को स्वीकार नहीं किया था जिसके प्रकाश में चलकर वह वास्तव में धार्मिक बन सकता था, और अन्धकार से छूटकर जीवन की ज्योति में प्रवेश कर सकता था। वह मसीह का विरोध कर रहा था,

जिसे परमेश्वर ने पाप में खोए हुए मनुष्यों को ढूंढ़ने और उनका उद्धार करने को भेजा, जिस ने कहा, "जगत की ज्योति मैं हूं; जो मेरे पीछे हो लेगा, वह अन्धकार में न चलेगा, परन्तु जीवन की ज्योति पाएगा।" (यूहन्ना ८ : १२)।

परन्तु हम आगे पढ़ते हैं, कि जब शाऊल के चारों ओर ज्योति चमकी और वह भूमि पर गिर पड़ा, और जब उसने प्रभु की आवाज़ सुनी, तो उसने जानना चाहा कि वह बोलनेवाला कौन है, तो प्रभु ने उसे जवाब देकर कहा, "मैं यीशु हूं; जिसे तू सताता है।" और प्रभु ने शाऊल से कहा, कि अब तू नगर में जा और जो कुछ तुझे करना है वह तुझ से कहा जाएगा। सो शाऊल उठकर नगर में गया। और प्रभु की योजनानुसार हनन्याह नाम का एक प्रचारक शाऊल के पास आया, और उसने, प्रभु की आज्ञानुसार, शाऊल से कहा, "अब क्यों देर करता है? उठ, बपतिस्मा ले, और उसका नाम लेकर अपने पापों को धो डाल।" (प्रेरितों २२ : १६) सो शाऊल ने प्रभु की आज्ञानुसार अपने पापों को धो डालने के लिये, अर्थात् अपने पापों की क्षमा के लिये, उठकर बपतिस्मा लिया। और इस प्रकार से, अब शाऊल अन्धकार में नहीं परन्तु ज्योति में आ गया था। क्योंकि प्रभु यीशु ने कहा, "जगत की ज्योति मैं हूं; जो मेरे पीछे हो लेगा, वह अन्धकार में न चलेगा, परन्तु जीवन की ज्योति पाएगा।"

क्या आप धार्मिक हैं? परन्तु शायद आप उन शास्त्रियों व फरीसियों की तरह या हो सकता है शाऊल की तरह अन्धकार में हों? क्या आप अन्धकार से छूटकर ज्योति में प्रवेश करना न चाहेंगे? सो आईए, यीशु मसीह में विश्वास कीजिए, और अपने पापों से मन फिराकर उस की आज्ञा अनुसार अपने पापों की क्षमा के लिये बपतिस्मा लीजिये। (मरकुस १६ : १६)। यदि आप ऐसा करेंगे तो वह अपनी प्रतिज्ञा पूरी करेगा, जैसा कि उसने कहा, "जगत की ज्योति मैं हूं; जो मेरे पीछे हो लेगा वह अन्धकार में न चलेगा, परन्तु जीवन की ज्योति पाएगा।"

२०

मनुष्य का सम्पूर्ण कर्त्तव्य

क्योंकि मनुष्य परमेश्वर के स्वरूप वा समानता पर सृजा गया है इसलिये मनुष्य एक ज़िम्मेदार प्राणी है। अर्थात्, उस से आशा की जाती है कि वह अपने कर्त्तव्यों को अवश्य ही पूरा करेगा। वास्तव में मनुष्य की ज़िम्मेदारियां बचपन से ही आरम्भ हो जाती हैं। हम देखते हैं, कि अभी जब कि वह एक बालक ही होता है कि एकाएक उसके ऊपर स्कूल जाने की ज़िम्मेदारी आ जाती है, और उस से आशा की जाती है कि वह प्रतिदिन स्कूल को जाएगा। जब वह स्कूल से आता है तो उसे घर का काम मिलता है, जो उसे प्रतिदिन पूरा करके स्कूल को वापस ले जाना पड़ता है। फिर धीरे-धीरे, वह अगली कक्षाओं में बढ़ता जाता है, और साथ-ही-साथ उसकी ज़िम्मेदारियां भी बढ़ती जाती हैं। कड़ा परिश्रम करके पढ़ने-लिखने के बाद उसके सामने एक और कर्त्तव्य आ जाता है, कि अब वह कोई उचित काम-काज ढूंढ़े। और फिर, इसी के साथ-साथ, घर-बार की ज़िम्मेदारियां, और इसी तरह के अनेकों अन्य कर्त्तव्यों से मनुष्य मानों बंध सा जाता है; क्योंकि मनुष्य एक ज़िम्मेदार प्राणी है।

परन्तु उपदेशक के ये शब्द हमारे सामने एक बहुत ही महत्वपूर्ण प्रश्न खड़ा कर देते हैं, वह कहता है : "उस सब परिश्रम से जिसे मनुष्य धरती पर करता है, उसको क्या लाभ प्राप्त होता है? एक पीढ़ी जाती है, और दूसरी पीढ़ी आती है, परन्तु पृथ्वी सदा बनी रहती है। सूर्य उदय होकर अस्त भी होता है, और अपने उदय की दिशा को वेग से चला जाता है। वायु दक्खिन की ओर बहती है, और उत्तर की ओर घूमती जाती है; वह घूमती और बहती रहती है, और अपने चक्करों

में लौट आती है। सब नदियां समुद्र में जा मिलती हैं, तौभी समुद्र भर नहीं जाता; जिस स्थान से नदियां निकलती हैं, उधर ही को वे फिर जाती हैं। सब बातें परिश्रम से भरी हैं; मनुष्य इसका वर्णन नहीं कर सकता; न तो आंखें देखने से तृप्त होती हैं, और न कान सुनने से भरते हैं। जो कुछ हुआ था, वही फिर होगा, और जो कुछ बन चुका है वही फिर बनाया जाएगा; और सूर्य के नीचे कोई बात नई नहीं है। क्या ऐसी कोई बात है जिसके विषय में लोग कह सकें कि देख यह नई है? यह तो प्राचीन युगों में वर्तमान थीं। प्राचीन बातों का कुछ स्मरण नहीं रहा, और होनेवाली बातों का भी स्मरण उनके बाद होनेवालों को न रहेगा।" (सभोपदेशक १ : ३-११)।

ये सब कुछ जो अभी हमने देखा जबकि बिल्कुल सच है, तो इन बातों को ध्यान में रखकर जो मुख्य प्रश्न हमारे सामने आता है वह यह है, कि फिर मनुष्य के लिये सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण कर्त्तव्य क्या है? और हमारे इस प्रश्न का उत्तर देकर स्वयं उपदेशक यूं कहता है, "कि परमेश्वर का भय मान और उसकी आज्ञाओं का पालन कर; क्योंकि मनुष्य का सम्पूर्ण कर्त्तव्य यही है।" (सभोपदेशक १२ : १३)। और यह सच है, क्योंकि बाइबल में भजन संहिता का लेखक कहता है, "यहोवा का भय पवित्र है, वह अनन्तकाल तक स्थिर रहता है; यहोवा के नियम सत्य और पूरी रीति से धर्ममय हैं।" (भजन १९ : ९)। फिर एक और जगह वह कहता है, "बुद्धि का मूल यहोवा का भय है; जितने उसकी आज्ञाओं को मानते हैं, उनकी बुद्धि अच्छी होती है।" (भजन १११ : १०)। और "क्या ही धन्य है वह पुरुष जो यहोवा का भय मानता है, और उसकी आज्ञाओं से अति प्रसन्न रहता है।" (भजन ११२ : १)। इसी प्रकार से एक और स्थान पर हम यूँ पढ़ते हैं कि "जो मनुष्य निरन्तर प्रभु का भय मानता रहता है वह धन्य है; परन्तु जो अपना मन कठोर कर लेता है वह विपत्ति में पड़ता है।" (नीतिवचन २८ : १४)।

इन बातों को ध्यान में रखकर, जो निचोड़ हम निकालते हैं, वह यही है कि मनुष्य का सबसे बड़ा कर्त्तव्य परमेश्वर का भय मानना और उसकी आज्ञाओं का पालन करना है। और ऐसा इसलिये है क्योंकि मनुष्य एक ज़िम्मेदार प्राणी है। हमें जीवन में अकसर तरह-तरह की परीक्षाओं का सामना करना पड़ता है। हम सब अपनी परीक्षाओं में सफल होने की कामना करते हैं। और उस सफलता को प्राप्त करने के लिये हम परिश्रम और तैयारी करते हैं। हम यह अपना कर्त्तव्य समझते हैं और उसे पूरा करते हैं, क्योंकि हम जानते हैं कि एक दिन हमें परीक्षा में बैठना है। सो जबकि उपदेशक कहता है, कि मनुष्य का संसार में सबसे महत्त्वपूर्ण कर्त्तव्य यह है कि वह परमेश्वर का भय मानें और उसकी आज्ञाओं का पालन करें। तो इस से उसका क्या तात्पर्य है? वह आगे कहता है, "क्योंकि परमेश्वर सब कामों और सब गुप्त बातों का, चाहे वे भली हों या बुरी न्याय करेगा।" (सभोपदेशक १२ : १४)। अर्थात् यह प्रत्येक मनुष्य की एक ज़िम्मेदारी है, यह उसका एक कर्त्तव्य है, कि वह परमेश्वर का भय माने और उसकी आज्ञाओं का पालन करे। क्योंकि एक दिन अवश्य ही, हर एक मनुष्य परमेश्वर के सामने खड़ा होगा; हर एक मनुष्य अपने-अपने कामों और बातों के अनुसार अपना प्रतिफल प्राप्त करेगा। यह मनुष्य की सबसे बड़ी परीक्षा का दिन होगा, उस दिन हर एक मनुष्य का न्याय होगा। इसलिये प्रत्येक मनुष्य को चाहिए कि वह उस बड़ी परीक्षा में सफलता प्राप्त करने के लिये अपने आपको तैयार करे। किन्तु, तैयारी करने का केवल एक ही मार्ग है, अर्थात् परमेश्वर का भय मानना और उसकी आज्ञाओं का पालन करना क्योंकि मनुष्य का सम्पूर्ण कर्त्तव्य यही है।

यह सच है, जैसा कि पवित्र शास्त्र बताता है कि एक दिन अवश्य ही सब मनुष्यों को परमेश्वर के न्यायासन के सामने खड़ा होना पड़ेगा। (रोमियों १४ : १०-१२)। परन्तु न्याय के विषय में एक बड़ी ही

सुन्दर बात यह है, कि परमेश्वर ने अपने वचन में हमें पहिले ही से बताया है कि मनुष्य का न्याय कैसे होगा। मान लीजिये, कोई व्यक्ति किसी परीक्षा में बैठने जा रहा हो, यद्यपि वह परीक्षा बड़ी ही कठिन प्रतीत हो, परन्तु किसी तरह से यदि उसे यह मालूम हो जाता है, कि परीक्षा में कौन-कौन से प्रश्न आ रहे हैं, तो उसे इस बात से बड़ी प्रसन्नता होती है। अब उसे पूर्ण विश्वास हो जाता है कि वह परीक्षा में अवश्य ही सफल होगा। परन्तु सफ़लता उसके केवल विश्वास पर ही निर्भर नहीं करती, परन्तु इस बात पर निर्भर करती है, कि क्या उसने अपने कर्त्तव्य को पूरा किया है, और अपने आपको उन प्रश्नों के जवाब देने के लिये तैयार किया है। हम सबको परमेश्वर के न्याय का सामना करना पड़ेगा क्योंकि लिखा है, "अवश्य है, कि हम सबका हाल मसीह के न्याय आसन के सामने खुल जाए, कि हर एक व्यक्ति अपने-अपने भले बुरे कामों का बदला जो उसने देह के द्वारा किए हों पाए।" (२ कुरिन्थियों ५ : १०)। और परमेश्वर ने हमें अपने वचन में बताया है कि मनुष्य का न्याय किस तरह से होगा। इसलिये, यह हमारा कर्त्तव्य है कि हम अपने आपको उसके न्याय आसन के सामने खड़ा होने के लिये तैयार करें।

सबसे पहिले, जैसे कि हमने देखा, हर एक मनुष्य का न्याय उसके कामों के अनुसार होगा। सो चाहिए कि हम अपने कामों के ऊपर ध्यान दें, कि क्या हमारे काम परमेश्वर की इच्छा के अनुसार हैं ? हो सकता है हम कोई ऐसा काम कर रहे हों जिसे हम एक धार्मिक काम समझ रहे हों, और उस काम को कदाचित हम परमेश्वर के नाम से पूरी ईमानदारी और सच्चाई के साथ कर रहे हों। परन्तु जब तक हमारे काम परमेश्वर की इच्छा, अर्थात् उसके लिखे हुए नियमों से सहमत नहीं होते, तो हम अपने उन्हीं कामों के कारण न्याय के दिन दोषी ठहराए जाएंगे। इस सिद्धान्त का एक उदाहरण प्रभु यीशु ने इन शब्दों में देकर कहा, "जो मुझ से हे प्रभु, हे प्रभु कहता है, उन में से हर एक

स्वर्ग के राज्य में प्रवेश न करेगा, परन्तु वही जो मेरे स्वर्गीय पिता की इच्छा पर चलता है। उस दिन बहुतेरे मुझ से कहेंगे, हे प्रभु, हे प्रभु क्या हमने तेरे नाम से भविष्यवाणी नहीं की, और तेरे नाम से दुष्टात्माओं को नहीं निकाला, और तेरे नाम से बहुत अचम्भे के काम नहीं किए ? तब मैं उन से खुलकर कह दूंगा कि मैंने तुम को कभी नहीं जाना, हे कुकर्म करनेवालो, मेरे पास से चले जाओ।" (मत्ती ७ : २१-२३)। आप शायद प्रभु के नाम से भविष्यद्वाणी करने का, या दुष्टात्माओं को निकालने का, या अचम्भे के काम करने का दावा न करते हों, परन्तु हो सकता है कि आप कोई और काम प्रभु के नाम से, या धार्मिक दृष्टिकोण से करते हों, परन्तु न्याय के दिन यह बात कितनी अजीब होगी यदि आप अपने उसी काम के कारण, जिसे आप जीवनभर एक धार्मिक काम समझकर करते रहे हों, दोषी ठहराए जाएंगे। प्रभु के ये शब्द उस समय एक कड़वे सच की भांति प्रतीत होंगे, "कि मैंने तुमको कभी नहीं जाना, हे कुकर्म करनेवालों, मेरे पास से चले जाओ।'

न्याय के दिन की एक और झलक हमें प्रेरित यूहन्ना के शब्दों में इस प्रकार से मिलती है, प्रभु ने उस पर इन बातों को प्रकट किया था और उसे आज्ञा देकर कहा था कि वह इन बातों को अन्य लोगों के लिये लिख दे; सो जो उसने देखा उसका वर्णन करके वह कहता है, "फिर मैंने एक बड़ा श्वेत सिंहासन और उस को जो उस पर बैठा हुआ है, देखा, जिसके सामने से पृथ्वी और आकाश भाग गए, और उनके लिये जगह न मिली। फिर मैं ने छोटे बड़े सब मरे हुओं को सिंहासन के सामने खड़े हुए देखा, और पुस्तकें खोली गईं; और फिर एक पुस्तक खोली गई, अर्थात् जीवन की पुस्तक; और जैसे उन पुस्तकों में लिखा हुआ था, उन के कामों के अनुसार मरे हुओं का न्याय किया गया। और समुद्र ने उन मरे हुओं को जो उस में थे दे दिया, और मृत्यु और अधोलोक ने उन मरे हुओं को जो उन में थे दे दिया और उनमें से हर एक के कामों के अनुसार उन का न्याय किया गया। और मृत्यु और अधोलोक भी आग की झील में डाले गए; यह आग की झील तो दूसरी मृत्यु है। और जिस किसी का नाम जीवन की पुस्तक में लिखा हुआ

न मिला, वह आग की झील में डाला गया।" (प्रकाशित वाक्य २० : ११-१५)।

क्या आप ने सुना ? छोटे बड़े और सब तरह के लोग उस दिन वहां होंगे, और जो उस समय तक मर चुके होंगे वे भी आत्मिक भाव से जिलाए जाएंग, ताकि हर एक मनुष्य अपने-अपने कामों के अनुसार अपना प्रतिफल प्राप्त करें। मृत्यु और अधोलोक भी मरे हुओं को उस दिन परमेश्वर के हाथ में दे देंगे ताकि उनका न्याय हो। अर्थात्, वे सब जिन्हें मृत्यु न्याय का वह दिन आने से पहिले संसार में से उठा लेगी, और वे सब जो उस दिन तक कदाचित् जीवित होंगे, सब के सब परमेश्वर के न्याय सिंहासन के सामने खड़े होंगे। परन्तु बात यह है, कि क्या आपका नाम उस दिन जीवन की पुस्तक में लिखा हुआ मिलेगा ? क्योंकि जिस किसी का नाम जीवन की पुस्तक में लिखा हुआ न मिलेगा वह आग की उस झील में डाला जाएगा जहां अनन्त विनाश होगा।

जी हां, पुस्तकें खोली जाएंगी, जिनमें हर एक मनुष्य के अपने-अपने कामों का वर्णन होगा, और फिर परमेश्वर की पुस्तक खोली जाएगी, जिस में लिखी आज्ञाओं के अनुसार प्रत्येक मनुष्य अपना प्रतिफल प्राप्त करेगा। इसलिये, यह सच है, और इसमें कोई संदेह नहीं कि परमेश्वर का भय मानना और उसकी आज्ञाओं का पालन करना ही मनुष्य का सम्पूर्ण कर्त्तव्य है। क्या आपने परमेश्वर की पुस्तक में लिखी आज्ञाओं का पालन किया है ? परमेश्वर अपने वचन में हमें बताता है, कि हम यीशु मसीह में विश्वास करें कि वह हमारे लिए क्रूस के ऊपर बलिदान हुआ, और वह आज्ञा देकर कहता है कि हम अपने पापों से मन फिराएं, और फिर वह आज्ञा देता है कि हम यीशु मसीह के नाम से अपने पापों की क्षमा के लिये बपतिस्मा लें। (यूहन्ना ३ : १६; प्रेरितों १७ : ३०, ३१; प्रेरितों २२ : १६)। यदि हम उसकी आज्ञाओं पर चलते हैं, तो हम जानते हैं कि हमारा नाम जीवन की पुस्तक में उस दिन अवश्य मिलेगा। क्योंकि प्रभु यीशु ने कहा, कि स्वर्ग के राज्य में केवल वही प्रवेश करेगा जो मेरे स्वर्गीय पिता की इच्छा पर चलता है। (मत्ती ७ : २१)।